श्रीजानकीरमणो विजयते

“ धन्यास्ते कृतिनः पिबन्तिसततं श्रीरामनामामृतम्

नामरसिक स्वामीश्रीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलित

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश

(सरल हिन्दी अनुवाद सहित)



अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू
आद्य स्वामी श्रीरामानन्दाचार्य जी महाराज



श्रीजानकीरमणो विजयते

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्

नामरसिक श्रीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलित

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश

सरल हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक एवं सम्पादक

श्री तुलसीदास नव्यनयायाचार्य

श्रीमद् भागवत विद्यापीठ, वासुदेव घाट

श्रीअयोध्याजी

प्रकाशक

स्वामी श्रीरघुनाथ दासजी की छावनी

के शिष्य

रामायणी श्रीरामलखनदास जी

मानस बिन्दु

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीसीतारामनामरसिक स्वामी युगलानन्दशरणजी
द्वारा संकलित

सरल हिन्दी अनुवाद सहित

तृतीय संस्करण सन् 2023 गुरुपूर्णिमा

प्रति : 1000

प्राप्ति स्थान

श्रीमद् भागवत विद्यापीठ, वासुदेव घाट
श्रीअयोध्याजी
मो.नं.-9411066308

श्री अवधेश पुस्तकालय
निकट श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी

मूल्य- पुनः प्रकाशनार्थ सहयोग राशि 150/-

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीसीताराम

रामनामसमं नाम न भूतो न भविष्यति।

न सन्देहः त्वया कार्यो न वक्तव्यं पुनः पुनः।

पापी भवति धर्मात्मा रामनामप्रभावतः।।

जिसके पढ़ने सुनने मात्र से नाम में रूचि जागृत हो जाती है गोस्वामीजी कहते है –

तप तीरथ मख दान नेम उपवास।

सब ते अधिक राम जपु तुलसीदास।।

समस्त श्रुतियों आगम–पुराण, इतिहास एवं काव्य ग्रन्थों का सार सर्वस्व है श्री सीतारामनाम प्रताप प्रकाश। श्री अयोध्याजी के साधुसमाज के शिरोरत्न स्वामी श्री युगलान्यशरणजी महाराज जी की अनेक वर्षों की साधना का फल है श्रीसीताराम नाम प्रताप प्रकाश। इस ग्रन्थ रत्न का पहले भी कई बार प्रकाशन हुआ है फिर भी सन्तों की मांग बढ़ती गई। अतः श्रीनाम महाराज की कृपा से पुनः प्रकाशन होने जा रहा है। जिसके प्रेरणा स्रोत है श्री तुलसीदासजी। जिन्होंने इस अकिंचन दासानुदास को सेवा का अवसर प्रदान किया है मैं हृदय से इनका आभारी हूँ मैं भी जीवन का यही परम लाभ समझता हूँ।

अन्त में नाम सिरताज राजराजेश्वर श्रीसीतारामनाम महाराज सेयही प्रार्थना है कि दास का शेष जीवन नामजप में निरन्तर लगा रहे।

नामरसिकानुरागी

श्रीरामलखनदास

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीनामात्मने नमः

आत्मनिवेदन

रामनामजपाज्जीवा अनायासेन संस्कृतिम्।
तरन्त्येव तरन्त्येव तरन्त्येव सुनिश्चितम्।। (आदि पुराण)

अनन्तश्री समलंकृत स्वामी श्री युगलानन्यशरणजी महाराजजी की महती कृपा करुणा का फल है श्री सीतारामनाम प्रताप प्रकाश। यह ग्रन्थ श्री रघुनाथ जी की तरह समस्त नामानुरागियों का परम धन है। प्रायः श्री अयोध्याजी में प्रत्येक मठों में इस ग्रन्थ का अनुशीलन पठन–प्रवचन होता है विगत कई दिनों से नामानुरागियों को यह ग्रन्थ सुलभ नहीं हो पा रहा था। श्रीसीतारामनाममहाराज की कृपा से स्वामी श्री रघुनाथदासजी की बड़ी छावनी श्री अयोध्याजी के रामायणी श्री रामलखन दासजी ''मानस बिन्दु जी'' से वार्ता हुई और भगवत्कृपा से पुनः प्रकाशन हेतु श्रीमहाराज जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी। श्रीनाममहाराज की असीम अनुकम्पा से दास ने ग्रन्थ सम्पादन का कार्य यथाधीतं यथामति किया है त्रुटियां सम्भव हैं अतः ''सो सुधारि हरिजन जिमिलेहीं''।

प्रस्तुत ग्रन्थ के अनुवाद की प्रेरणा श्री सीतारामजापक साकेतवासी श्री सीतारामदास जी शास्त्री जी महाराज के शिष्यों द्वारा प्राप्त हुई यह ग्रन्थ तो पहले से ही अनूदित था कुछ शब्दों को वर्तमान भाषा में यथायोग्य विन्यास करने का सौभाग्य इस दास को मिला। जिस श्रीरामनाम के बारे में गोस्वामी जी ने लिखा है–

कहौं कहां लगि नाम बड़ाई। राम न सकइ नाम गुन गाई।।

फिर यह तुच्छ दास भला क्या लिख सकता है लिखने वाले और लिखाने

वाले स्वयं ठाकुरजी हैं वे स्वयं कृपा करके दासों को बड़ाई प्रदान करते हैं हमारे राम परम श्रद्धेय रामायणी श्रीराम लखन दासजी मानस बिन्दु जी का हृदय से कृतज्ञ हैं उन्होंने इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर हमारे सम्प्रदाय का सम्मान बढ़ाया है।

यत्कृतं यत्करिष्यामि तत्सर्वं न मया कृतम्।
त्वया कृतं तु फलभुक् त्वमेव रघुनन्दन।।

इस भाव का हृदयंगम करते हुए प्रार्थना है—

नाममहानिधि मन्त्र नाम ही सेवा पूजा,
जप तप तीरथ नाम नाम बिनु और न दूजा।।
नामप्रीति नाम बैर नाम कहि नामी बोले।
नाम अजामिल साखि नाम बन्धन ते खोले।
गायन्ति रामनामानि सततं ये जना भुवि।
नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः।।

श्रीसीतारामनामरसिकसन्तचरण—
रजोऽभिलाषी
तुलसीदास नव्यन्यायाचार्य
श्रीमद्भगवद्विद्यापीठ

श्रीमतेरामानन्दाय नमः

मंगल कामना

भगवान श्रीराम की भांति श्रीरामनाम की महिमा अपार एवं अनन्त है इसी लिए राम न सकहिं नाम गुन आई। लोग श्रीरामनाम को साधारण समझते हैं परन्तु ऐसा नहीं है श्रीराम नाम में अपार शक्ति है। परमसन्त स्वामी श्रीयुगलानन्यशंरण जी महाराज ने श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश ग्रन्थ में वेद, शास्त्र पुराण आदि का सप्रमाण संग्रह किया है नाम की साधना वेद शास्त्र के साथ साथ सभी सन्तों ने भी स्वीकार की है श्रीसीतारामनामप्रकाश ग्रन्थ का सम्पादन एवं प्रकाशन श्रीलक्ष्मण किला में स्वामी श्रीसीतारामशरणजी के द्वारा सर्वप्रथम हुआ पुनः प्रकाशन पुरीवाले महाराजजी ने करवाया तत्पश्चात् श्रीरेवासाधाम राजस्थान से जगद् गुरू स्वामी श्रीराघवचार्य जी महाराज ने प्रकाशन कराया।

वर्तमान में बाबा श्रीरघुनाथदासजी की छावनी श्री अयोध्याजी के शिष्य श्रीरामलखन दासजी रामायणी ''मानस बिन्दु'' के द्वारा इस दिव्य ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। श्रीतुलसीदास जी सम्प्रदाय के गौरव हैं इस दिशा में उनके अनेक प्रयास हो चुके हैं एवं आगे भी इसी तरह सम्प्रदाय की साहित्य सेवा उनके द्वारा होती रहे। ऐसी मंगल कामना है।

श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष

श्रीनृत्यगोपाल दासजी

श्रीमणिरामदासजी की छावनी

श्रीअयोध्याजी

श्रीमते रामानन्दाय नमः।
श्रीसीतारामाभ्यां नमः
श्रीगुरवे नमः
स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

अथ श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशः

प्रथमः प्रमोदः

पुराणोक्तवचनानि

मङ्गलाचरणम्

श्रीहनुमन्नाटके श्रीमहावीरवाक्यं रामनामानन्यभक्तान् प्रति

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षोस्सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम।1।

हिन्दी अनुवाद

श्रियः श्रियं नमस्कृत्य रघुनाथं प्रणम्य च।
ग्रन्थरत्नस्य टीकां तु तुलसीदासः करोत्ययम् ।।1।।
धृत्वा माधुकरीं वृत्तिं भजन्तं सरयूतटे।
सीतारामदासाभिधं शास्त्रिणं प्रणमाम्यहम् ।2।
यत्कृपासुप्रसादेन ग्रन्थः पुनः प्रकाश्यताम् ।
आयाति तं जनं नौमि श्रीशास्त्रीजीति नामकम्।3।
यथामति यथाधीतमल्पबुद्धितया मया।
महात्मनां प्रसन्नार्थं यत्नोऽयं प्रविधीयते ।।4।।
भूयाद्धितं साधकानामनेन सुकृतेन वै।
तदा तु राघवप्रीतिभाजनं स्याम् न संशयः ।5।

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश के आरम्भ में परम उपासकवर्य, आचार्यशिरोमणि, नामानुरागियों में अग्रगण्य एवं श्रीरामजी को आनन्द

प्रदान करने वाले पवनपुत्र श्रीमहावीरजी के द्वारा रचित श्लोक को शोक शमन के लिए मङ्गलाचरण में रखा गया है। जिससे श्रीहनुमानजी की कृपा से ग्रन्थ के विघ्नों का नाश हो, रसिक नामानुरागियों की सभा में प्राचुर्य हो, अभिराम श्रीनाम महाराज का अनुपम अर्थ चित्त में प्रकाशित हो इत्यादि अनेक अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए मङ्गलाचरण के रूप में लिखा गया है। श्रीहनुमानजी की रचना तो महा गम्भीर एवं अथाह है परन्तु उनकी दी हुई मति के अनुसार कुछ अर्थ लिखने का प्रयास किया जा रहा है।

श्रीहनुमानजी समस्त श्रीरामनाम के रसिकों को आशीर्वाद देते हैं महाअभिराम श्रीरामनाम महाराज नामानुरागियों को एक रस परम ऐश्वर्य देने में सदा समर्थ हों, यहाँ भूति शब्द का अणिमादिक विभूति अर्थ नहीं है अपितु श्रीसीताराम नाम स्वरूपादि का बोध रूप सुख अर्थ ही इष्ट है। श्रीरामनाम कैसे हैं? इसी प्रश्न के उत्तर में शेष सम्पूर्ण विशेषण श्रीरामनाम के हैं। समस्त कल्याणों का दिव्य निवास स्थान हैं यहाँ कल्याण का तात्पर्य कल्याणप्रद ज्ञान वैराग्यादि समस्त शुभ साधन एवं साध्य हैं। पुन: कैसे हैं? कलियुग के पाप ताप का नाश करने वाले हैं। पुन: कैसे हैं? पवित्र करने वाले जो श्रीगङ्गाजी आदि पवित्र तीर्थ हैं उन सबको भी पवित्र करने वाले हैं। पुन: कैसे हैं? अतिशीघ्र (इसी मानव शरीर से भगवद्धाम प्राप्ति के लिए संकल्पित मुमुक्षु के लिए श्रीरामनाम महाराज राह खर्च हैं । पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम? महर्षि वाल्मीकि व्यास नारद आदि कवियों के वचनों (सद्ग्रन्थों) के एकमात्र विश्रामस्थल हैं। तात्पर्य यह है कि श्रीराम नाम के अवलम्बन के बिना किसी को विश्राम नहीं है। पुन: कैसे हैं श्रीरामनाम? सभी सत्पुरुषों का परम जीवन हैं तात्पर्य है कि सभी सज्जन विवेकी पुरुष श्रीरामनाम के जप के बिना अपने को मृतक मानते हैं सच्चा जीवन तभी है जब राम नाम का जप होय। पुनः कैसे हैं रामनाम? समस्त सामान्य और विशेष धर्मों के बीज हैं अर्थात् कारण हैं कारण दो प्रकार के होते हैं उपादान (समवायि) कारण और निमित्त कारण जैसे घट का उपादान कारण कपाल (मिट्टी) एवं निमित्त कारण कुलाल है। उसी प्रकार श्रीरामनाम सर्वधर्ममय हैं और सब धर्म के कर्ता भी हैं।

महाशम्भुसंहितायां श्रीशिववाक्यं श्रीरामभक्तान् प्रति

महाशम्भुसंहिता में श्रीशिवजी का वाक्य श्रीरामभक्तों के प्रति

मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौ मुनिहृदयवयःपक्षती तीरभूमौ

संसारापारसिन्धोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिम्बो।

उन्मीलत्पुण्यपुञ्जद्रुमललितदले लोचने च श्रुतीनां

कामं रामेतिवर्णौ शमिह कलयतां सन्ततं सज्जनानाम्।2।

द्वितीय श्लोक शोक को दूर करने वाला श्रीमहाशम्भुसंहिता का है भगवान् श्रीशङ्करजी श्रीरामानुरागियों में श्रेष्ठ हैं इसीलिए सभी नामरसिक सन्तों को आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि श्रीरामनाम के दोनों अक्षर सभी नामानुरागियों का उनकी रूचि के अनुसार सदा महामङ्गल करें। यह मेरा आशीर्वाद है। श्रीरामनाम के दोनों वर्ण कैसे हैं– मुक्ति रूपी स्त्री के कर्ण के कर्णफूल हैं ताटंक स्त्रियों के सौभाग्य का द्योतक होता है यहाँ तात्पर्य यह है कि नाम सम्बन्ध के बिना मुक्ति भी विधवा की तरह अशोभनीय है अतः हर प्रकार से नाम रटना ही उचित है। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के दोनों वर्ण? मुनियों के हृदय रूपी पक्षी के दो पंख है। अर्थात् समस्त मननशील महापुरुषों के अन्तःकरण को स्पन्दित करने वाले हैं । पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के दोनों वर्ण? संसाररूपी अपार सागर के दोनों किनारे हैं अभिप्राय यह है कि जब दोनों वर्णों का उच्चारण करेंगे तो अवश्य ही भवसागर से पार हो जायेंगे। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के दोनों वर्ण? कलियुग के महापापरूपी अन्धकार को नाश करने के लिए सूर्य एवं पापजन्य तापों को शमन करने के लिए चन्द्र स्वरूप हैं अर्थात् रकार अग्नि बीज है सूर्य में प्रकाशन का सामर्थ्य रकार से ही प्राप्त होता है मकार चन्द्र बीज है चन्द्रमा ताप का अपनोदन करके चित्त में परम आह्लाद को प्रकट करता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के दोनों वर्ण कलि के भीषण पापरूपीतम एवं तज्जन्य तापों का अपनोदन करके चित्त में परम आह्ललाद को प्रकट करते हैं। पुनः कैसे हैं श्रीराम नाम के दोनों वर्ण? प्रकाशित पुण्यरूपी वृक्ष के सुन्दर दो दल हैं अंकुरण के समय वृक्ष में पहले दो दल आते हैं

तदनन्तर उसका विकास होता है श्रीनाम महाराज के बिना उच्चारण किये सुकृत भी असम्भव है। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के दोनों अक्षर? वेद पुरुष के दो नेत्र हैं। इनकी कृपा से ही वेदों के रहस्यों को जाना जा सकता है। तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के सहारे ही वेदों को सब कुछ दिखायी देता है श्रीनाम महाराज के बिना तो वेद भी अन्धे हैं श्रीनाम महाराज के बिना जब वेद ही अन्धे हैं तो वेद पढ़ने वालों की क्या कथा होगी अतः नाम रटो।

पद्मपुराणे श्रीशिववाक्यं पार्वतीं प्रति

पद्मपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य पार्वती जी के प्रति

नामचिन्तामणी रामश्चैतन्यपरविग्रहः।
पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तो न भेदो नामनामिनः।3।

श्रीरामनाम महाराज चिन्तामणि हैं अर्थात् चिन्तनमात्र से समस्त अभीष्ट पदार्थों को प्रदान करने वाले हैं तथा श्रीरामजी साक्षात् सच्चिदानन्दस्वरूप हैं दोनों पूर्ण पवित्र एवं नित्यमुक्त हैं नाम और नामी में भेद नहीं है।

अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः।
स्फुरति स्वयमेवैतज्जिह्वादौ श्रवणे मुखे।4।

इसीलिए श्रीरामनाम रूपगुणादि मन और इन्द्रियों के विषय नहीं हैं ये तो स्वतः अहेतुकी कृपा से रसना, श्रवण, मुख, हृदय, कण्ठादि स्थानों में प्रकट होते हैं। यदि कोई कुतर्की कहे कि अग्नि के कहने से मुख नहीं जलता है चीनी के कहने से मुख नहीं मीठा होता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के कहने से जीव कृतार्थ नहीं होता तो उसका यह कथन सर्वथा अनुचित है क्योंकि अग्नि, चीनी आदि प्राकृत शब्द है और श्रीरामनाम अप्राकृत, दिव्य एवं चिन्मय है उनके साथ संसारी पदार्थों की तुलना नहीं हो सकती। दूसरी बात अग्नि के कथन से मुख जलता है इसमें कोई प्रमाण नहीं है और श्रीराम नाम के कथन से हजारों महापापी तर गये इसमें अनन्त प्रमाण हैं इसलिए उनका कुतर्क मालिन्ययुक्त एवं उपेक्षणीय है। नामानुरागी को ऐसे लोगों का सङ्ग नहीं करना चाहिए।

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।5।।

एक बार श्रीशङ्करजी प्रसाद पाने जा रहे थे तब अपनी प्राणप्रिया श्रीपार्वती जी से कहा कि प्रिये ! चलिए साथ में प्रसाद पा लिया जाय तब श्रीपार्वती जी ने कहा कि श्रीविष्णु सहस्रनाम पाठ का नियम है अभी पाठ पूरा नहीं हुआ है पाठ पूरा करके पाऊँगी। यह सुनकर श्रीशङ्करजी प्रसन्न हो गये और अपना मुख्य सिद्धान्त प्राणप्रिया श्रीपार्वती को सुनाते हैं हे वरानने! हे रामे! श्रीरामनाम श्रीविष्णु सहस्रनाम के तुल्य हैं अर्थात् श्रीरामनाम का एक बार उच्चारण करने से श्रीविष्णु सहस्रनाम के पाठ का पुण्य सहज में प्राप्त हो जाता है, श्रीरामनाम माया से परे हैं हमारा परम धन हैं अत: श्रीराम नाम का उच्चारण कीजिए और मेरे साथ प्रसाद पाइए। भगवान् श्रीशङ्कर जी की बात सुनकर श्रीपार्वतीजी ने श्रीरामनाम का उच्चारण करके श्रीशिवजी के साथ प्रसाद पाया। यह देखकर भगवान् शिव ने श्रीपार्वती को हृदय से लगा लिया और अपना भूषण बना लिया।[2]

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते।।6।।

हे पार्वति! समस्त वेद, पुराण और संहिता तथा मन्त्रों के करोड़ों बार जप करने से जो पुण्य प्राप्त होता है उससे कोटिगुना पुण्य एक बार श्रीरामनाम के जप से होता है।

---

1. सहस नाम सम सुनि सिव वानी। अपि जेई पिय संग भवानी। हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिच भूषन तीको । नाम्नां समूहो नामता, सहस्राणां नामता सहस्रनामता एवं सहस्रनामतातुल्यम् ऐसा पाठ मानकर ज.गु.रा. श्रीरामभद्राचार्य जी अर्थ करते हैं कि हजारों—हजारों विष्णु सहस्रनामों का उच्चारण किया जाय और एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण किया जाय तो भी दोनों तुल्य नहीं होंगे अत: श्रीरामनाम की अद्‌भुत महिमा है। लोक में भी हमारे राम ने देखा है— कहीं श्रीविष्णु महायज्ञ हो रहा था साकल कम था और आहुति पूरी करनी थी तो विप्रों ने कहा कि अब दूसरी विधि से आहुति पूर्ण करते हैं श्रीराम रामेति रामेति इस श्लोक का उच्चारण करते और आहुति डलवाते और कहते कि एक बार में एक हजार आहुति हो गयी अत: लोक में भी यह मान्यता है कि श्रीविष्णु सहस्रनाम के पाठ की अपेक्षा श्रीरामनाम सहज सुलभ और सर्वसिद्धि दायक है।
2. हे वरानने! यस्मिन् राम रामेति मनोरमे रामे (रामनाम्नि) अहम् अति रमे ! तत् श्रीरामनाम सहस्रनाम तुल्यं भवति, ऐसा अन्वय करने पर अर्थ होगा— हे चन्द्रमुखी पार्वति। जिस मनोभिराम श्रीरामनाम में मैं अत्यन्त रमण करता हूँ वह श्रीरामनाम विष्णुसहस्रनाम के तुल्य है ।

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते फलम्।
तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं रामनामेति कीर्तनात्।7।

तन्त्रों में जो जो प्रयोग हैं मारण, सम्मोहन, उच्चाटन और आकर्षणादि और उनके प्रयोग से जिन–जिन फलों की सिद्धि होती है वे सारे फल शीघ्र ही श्रीरामनाम के संकीर्तन से सिद्ध हो जाते हैं। आवश्यकता है विश्वास और प्रेम की।

भूतप्रेतपिशाचाश्च वेतालाश्चेटकादयः।
कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मराक्षसाः।।
श्रीरामनाम ग्रहणात् पलायन्ते दिशो दश।।8।।

महा भयानक स्वरूप वाले जो भूत, प्रेत, पिशाच, भैरव, बैताल, राक्षस और कुष्माण्डादि हैं ये सब श्रीरामनाम के उच्चारण को सुनकर शीघ्र ही दशोदिशाओं में भाग जाते हैं यह श्रीरामनाम का महाप्रताप है अतः सब कुछ छोड़कर श्रीरामनाम में प्रेम करना ही उचित है श्रीरामनाम के रसिकों को श्रीनाम विमुखों का संग छोड़ देना चाहिए।

प्राणप्रयाणसमये रामनाम सकृत्स्मरेत्।
स भित्त्वा मण्डलं भानोः परं धामाभिगच्छति।।9।।

चाहे जैसा भी पापी हो प्राण छूटते समय किसी भी प्रकार से यदि वह एक बार भी श्रीरामनाम का उच्चारण कर लेता है तो वह सूर्य मण्डल का भेदन करके नगाड़ा बजाते हुए अवश्य ही परम धाम को जाता है।

अर्द्धमात्रे स्थितौ श्रीमत्सीतारामौ परात्परौ।
ह्याकारेषु त्रयो देवा बिन्दौ शक्तिरनुत्तमा।।10।।

श्रीरामनाम के अर्द्धमात्रा में परात्पर ब्रह्म श्री सीतारामजी स्थित हैं आकार में तीनों देवता (ब्रह्मा विष्णु महेश) और बिन्दु में महामाया आदिशक्ति स्थित हैं।

भावार्थ– श्रीराम की स्थिति यह है–र् अ आ म् अ कुल पाँच अक्षर 'व्यञ्जनं चार्द्धमात्रिकम्' के अनुसार र् अर्द्धमात्रास्वरूप है म् अनुस्वार होने

से बिन्दु स्वरूप है अत: रेफ का वाच्य (अर्थ) श्रीसीतारामजी हैं रेफ उनका वाचक है। वाच्य और वाचक में अभेद होने से रेफ ही श्रीसीतारामजी हैं अत: रेफ में श्रीसीतारामजी का ध्यान करना चाहिए। एवम् रकार के उत्तर में जो अ है उसका अर्थ भगवान् वासुदेव है,[1] 'तदनन्तर जो 'आ' है उसका अर्थ ब्रह्मा है,[2] मकार के उत्तर जो 'अ' है[3] उसका अर्थ श्रीमहेशजी है म्[4] का अर्थ महामाया मूल प्रकृति आदि शक्ति हैं।

असंख्यमन्त्रनाम्नां तु बीजं शर्मास्पदं परम्।

अनादृत्य महामन्दा संशक्ताश्चान्यसाधने।।11।।

अनन्त मन्त्रों और अनन्त नामों का बीज भूत परम कारण स्वरूप समस्त सुखों का स्थान श्रीरामनाम हैं श्रीनाम परत्व को बिना विचारे परात्परेश्वर श्रीरामनाम की उपेक्षा करके महामन्द मूढ़ अज्ञानी लोग दूसरे साधनों में लगे रहते हैं व्यर्थ आसक्त हो जाते हैं।

जपकाले सदा देवि नामार्थञ्च परात्परम्।

चिन्तयेच्चेतसा साक्षाद् बुद्ध्या श्रीरामरूपकम्।।12।।

'अब श्रीरामनामजप की विधि एवम् फल का निरूपण करते हैं' हे देवि! जप करते समय मन और बुद्धि से नामार्थ परात्पर ब्रह्मस्वरूप साक्षात् श्रीसीतारामजी का चिन्तन करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जब भी भीतर से अथवा बाहर से श्रीरामनाम का उच्चारण करें उस समय अवश्य सावधानीपूर्वक अर्थानुसन्धान करें। महर्षि पतञ्जलि ने भी कहा है कि **'तज्जपस्तदर्थ भावनम्'** अर्थात् अर्थानुसन्धानपूर्वक जप से जप का वास्तविक

---

1. अकारो वासुदेव:, कोष देखना है एकाक्षर कोष द्रष्टव्य है।
2. एकाक्षर कोश
3. एकाक्षर कोश
4. एकाक्षर कोश

एव पूर्ण लाभ मिलता है यदि प्रत्येक नाम के साथ अर्थानुसन्धान नहीं हो पावे त्वरा के कारण अथवा निश्चित संख्या पूर्ति के कारण तो आदि मध्य और जप के अन्त में भलीभाँति अर्थानुसन्धान कर लेवें। श्रीरामनाम सर्वोपरि है और साक्षात् श्रीसीतारामजी स्वरूप है ऐसा चिन्तन करते हुए अपने चित्त की वृत्तियों को मन में लीन करे और अपने स्वरूप तथा इन्द्रियादि करणों को मन और बाहर के व्यवहारों को श्रीरामनामार्थ में लीन करें तत्पश्चात् श्रीरामनाम का जप करें ऐसा करने से कुछ ही दिनों में महामोद विनोद की प्राप्ति होती है।

अशनं सम्भाषणं शयनमेकान्तं खेदवर्जितम्।
भोजनादित्रयं स्वल्पं तुरीये संस्थितिस्तदा।।13।।

जप के समय भोजन कम करें जिससे आलस्य, प्रमाद और इन्द्रियों की चञ्चलता नहीं होगी। धीरे–धीरे भोजन को घटावें। प्रतिदिन थोड़ा–थोड़ा कम करे शुद्ध भोजन करे। रजोगुणी एवं तमोगुणी लोगों का अन्न न खायें। स्वादिष्ट सरस पदार्थों को चित से हटा दे इन्द्रियों को लम्पट न होने दे। हमेशा अवसर पाकर के ही थोड़ा सत्य, हितकारी एवं मधुर बोले। निद्रा को धीरे–धीरे कम करें जहाँ तक हो सके रात्रि में जागकर उच्चस्वर में नाम उच्चारण करे और धीरे–धीरे निद्रा पापिनी को जीत ले। सुन्दर एकान्त स्थान में निवास करे जहाँ किसी प्रकार का खेद विक्षेप आप को न हो, न दूसरे को हो इस प्रकार साधन सम्पन्न होकर यदि श्रीराम नाम का जप करेंगे तो उसका फल[1] अकथनीय होगा।

संयमं सर्वदा धार्य्यं नैव त्याज्यं कदाचन।
संयमान्नामचिन्मात्रे प्रीतिस्संजायतेऽधिका।।14।।

नाम जापको को संयमित होना चाहिए, संयम का त्याग नहीं करना चाहिए संयमपूर्वक श्रीरामनाम का जप करने से सच्चिदानन्द स्वरूप श्रीरामनाम में उत्तरोत्तर प्रतिदिन प्रतिक्षण यथार्थ प्रीति बढ़ती है।

---

1. सुनहु तात यह अकथ कहानी

प्रथमाभ्यासकाले च ग्रन्थं नामात्मकं सुधीः।
द्वियाममेकयामं वा चिन्तयेद्धि प्रयत्नतः ।।15।।

श्रीरामनाम के नये साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम अभ्यास के समय में श्रीरामनाम परत्व बोधक ग्रन्थों जैसे श्रीसीताराम नाम प्रताप प्रकाश, 'श्रीसीतारामनामसाधना' आदि ग्रन्थों का अध्ययन चिन्तन करें एक प्रहर अथवा दो प्रहर सावधान चित्त होकर श्रीरामनाम के रसिक विरक्त सन्तों की संगति करें, उनकी संगति से श्रीरामनाम में आश्चर्यजनक प्रीति होगी।

यदा नाम्नि लयं याति चित्तं क्लेशविवर्जितम्।
तदा न चिन्तयेत् किंचिल्लब्ध्वा ह्यानन्दमन्दिरम्।।16।।

निरन्तर कुछ समय तक श्रीरामनाम का जप करने पर बिना श्रम के सहज में जब श्रीरामनाम में चित्तविलीन हो जाय तब परमानन्दस्वरूप श्रीसीतारामजी को प्राप्त करके फिर कुछ भी चिन्तन न करें। क्योंकि विचारादि जितने साधन समूह हैं उनका एक ही प्रयोजन है चित्त का लय करना ।श्रीरामनाम का प्रताप और प्रभाव बिना जप के नहीं मालूम पड़ता है।

तत्रैव श्रीब्रह्मवाक्यं नारदं प्रति
पद्मपुराण में ही श्रीब्रह्माजी का वाक्य नारदजी के प्रति

चिन्तामणिसमं कायं लब्ध्वा वै भारतेऽमलम्।
संस्मरेन्न परंनाम मोहात् स पतति ध्रुवम् ।।17।।

इस भारत वर्ष में चिन्तामणि के समान निर्मल शरीर को प्राप्त करके जो मोहवश परात्पर श्रीरामनाम का जप नहीं करता है सम्यक् स्मरण नहीं करता है वह निश्चित ही पुनः चौरासी लाख योनि में करोड़ों वर्षों तक भटकता है नरक कुण्ड में गिरता है। तब बाद में पश्चाताप करता है कि मनुष्य शरीर पाकर भी हम अपना उद्धार नहीं कर सके।

मानुषं दुर्लभं प्राप्य सुरैरपि समर्चितम्।
जप्तव्यं सावधानेन रामनामाखिलेष्टदम्।।18।।

इसलिए देवदुर्लभ तथा देवपूजित मानव शरीर को प्राप्त करके सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले श्रीरामनाम का सावधानीपूर्वक जप करना चाहिए।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं यथार्थं श्रुतिपूजितम्।

सर्वाशां संविहायाशु स्मर्तव्यं सर्वदा बुधैः।।19।।

समस्त श्रुतियों से पूजित श्रीरामनाम के यथार्थ माहात्म्य को सुनकर शीघ्र ही सभी आशाओं को छोड़कर समझदारों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए यही परम पण्डिताई और सुबुद्धिमत्ता है शेष सारी चतुरता उदर के निमित्त है।

जिसकी रसना नाम रस रसी असी पद पाय।

खसी वासना तिन्हन की हँसी उभय बिसराय।।

विष्णुनारायणादीनि नामानि चामितान्यपि।

तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामतः।।20।।

हे नारद जी! भगवान् के विष्णु, नारायण आदि जितने नाम हैं वे सब भी पतितपावन हैं किन्तु वे सारे नाम श्रीरामनाम से प्रकट हुए हैं और फिर महाप्रलय के समय श्रीरामनाम में ही विलीन हो जाते हैं।

श्रृणु नारद सत्यंत्वं गुह्याद् गुह्यतमं मतम्।

रामनाम सकृद्जप्त्वा याति रामास्पदं परम्।।21।।

हे नारदजी! मैं तुमसे अत्यन्त सत्य एवं गुह्य सिद्धान्त को कहता हूँ तुम सुनो— मनुष्य एक बार भी श्रीरामनाम का जप करके श्रीरामजी के दिव्यपद को प्राप्त कर सकता है इसमें आश्चर्य न करना, श्रीरामनाम की बड़ी महिमा हैं।

प्रश्न— फिर सन्त महात्मा दिन रात राम नाम का जप क्यों करते हैं?

उत्तर— स्नेह होने के कारण, तात्पर्य यह है कल्याण तो एक ही बार रामनाम लेने से हो गया परन्तु श्रीरामनाम में अत्यन्त प्रेम हो जाने से वे दिन रात राम नाम रटा करते हैं। तब सामान्य लोगों को बार—बार नाम जप की प्रेरणा क्यों देते हैं? इसका उत्तर यह है कि एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण

से परमपद की प्राप्ति तो हो जायेगी परन्तु आगे भगवत्प्रतिकूल आचरण न हो, हमेशा भगवान् की स्मृति बनी रहे अन्तःकरण की शुद्धता बनी रहे। इसलिए निरन्तर रामनाम का जप करना चाहिए।[1]

सर्वेषां हरिनाम्नां वै वैभवं रामनामतः।

ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम सञ्जप ।। 22।।

हे नारदजी! करोड़ों वर्षों तक साधना करके मैंने यह विशेष अनुभव किया है कि भगवान् के समस्त नामों का ऐश्वर्य और प्रताप श्रीरामनाम के अंशांश से है इसलिए स्नेहपूर्वक तत्पर होकर श्रीरामनाम का जप करो।

क्षणार्द्धं जानकीजानेर्नाम विस्मृत्य मानवः।

महादोषालयं याति सत्यं वच्मि महामुने।।23।।

हे महामुने! जो मानव श्रीसीतापति श्रीरामजी के नाम को आधे क्षण के लिए भी भूलकर किसी अन्य कार्य में आसक्त होता है वह महादोषों और तापों के आलय नरक में जाता है यह मेरा वचन सत्य है तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के विस्मरण के समान कोई पाप नहीं है।

रामनामप्रभावेण सीतारामं परेश्वरम्।

सदात्मानं प्रपश्यन्ति रामनामार्थचिन्तकाः।।24।।

श्रीरामनाम[2] के अर्थानुसन्धान करने वाले साधकों को श्रीरामनाम के प्रभाव से परात्पर ब्रह्म श्रीसीतारामजी का साक्षात्कार होता है।

तत्रैव श्रीसनत्कुमारवाक्यं नारदं प्रति

पद्मपुराण में ही श्रीसनत्कुमारजी का वाक्य नारदजी के प्रति

सर्वापराधकृदपि मुच्यते हरिसंश्रयः।
हरेरप्यपराधान् यः कुर्य्याद् द्विपदपांशनः ।।25।।
नामाश्रयः कदाचित् स्यात्तरत्येव स नामतः।
नाम्नो हि सर्वसुहृदो ह्यपराधात् पतन्त्यधः ।।26।।

---

1. जिस प्रकार अन्धकारयुक्त कक्ष में दीप प्रज्वलित करते ही अन्धकार पूर्णतया नष्ट हो जाता है पुनः अन्धकार प्रवेश न करने पावे इसके लिए दीप की लौ को जलाये रखना आवश्यक है उसी प्रकार एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं पुनः पाप प्रवेश न करने पावे इसलिए नित्य निरन्तर श्रीरामनाम का जप करना चाहिए। श्रीधरी टीका
2. सीतयासहितो रामः सीतारामः तम् सीतारामम्।

किसी भी प्रकार का अपराध करने वाला व्यक्ति यदि श्रीरामजी की शरण में आ जाय तो वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जो नराधम श्रीरामजी का अपराध करते हैं श्रीरामजी के बत्तीस सेवापराध हैं एवं वेद प्रतिकूल आचरण भी महद् अपराध हैं। ऐसे अपराधी भी सन्त सद्गुरु के शरणागत होकर अकारण– करुणावरुणालय श्रीरामनाम की शरण होकर श्रीरामनाम के जप करने से अपराध से मुक्त हो सकते हैं परन्तु अकारणहितैषी सर्वसुखदायक श्रीरामनाम का जो अपराध करता है उसका तो अध:पतन एवं नरक गमन सुनिश्चित है।

श्रीनारद उवाच

के तेऽपराधा विप्रेन्द्र नाम्नो भगवतः कृताः ।
विनिघ्नन्ति नृणां कृत्यं प्राकृतं ह्यानयन्ति हि ।।27।।

श्रीनारदजी ने कहा है विप्रवर! श्रीरामनाम सम्बन्धी कितने अपराध हैं? उन अपराधों का स्वरूप क्या है? जिनके करने से सारे सुकृत नष्ट हो जाते हैं और महामलीन संसारियों जैसी गति प्राप्त होती है।

श्री सनत्कुमार उवाच

सतांनिन्दानाम्नः प्रथममपराधं वितनुते।
यतः ख्यातिं यातां कथमु सहते तद्विगर्हाम्।
शिवस्य श्रीविष्णोर्य्य इह गुणनामादि सकलं
धिया भिन्नं पश्येत् स खलु हरिनामाहितकरः ।।28।।

जो श्रीरामनाम के रसिक सन्त हैं उनकी निन्दा करना प्रथम अपराध असाध्य रोग की तरह है निन्दा का तात्पर्य श्रीरामनाम के रसिक सन्तों की वाणी का अनादर करना और अपने असत्पक्ष का स्थापन करना। यदि कोई कहे कि सन्तों की निन्दा नामापराध कैसे होगी तो कहते हैं कि जिन सन्तों के द्वारा श्रीरामनाम की प्रसिद्धि लोक में हुई उनकी बुराई को श्रीरामनाम महाराज कैसे सहन करेंगे ? सन्तों के बिना श्रीरामनाम को कौन जानता? दूसरा नामापराध श्रीगौरीशंकर भगवान् के गुणनामादि को भगवान् श्रीसीताराम जी के गुणनामादि से भिन्न मानना हैं अभिप्राय यह है कि

परात्पर ब्रह्म सर्वेश्वर श्रीसीतारामजी हैं और सब उनके अधीन हैं अत: श्रीगौरीशंकर जी की भिन्न ईशता का प्रतिपादन करना नामापराध है अथवा श्रीसीतारामजी और श्रीगौरीशंकर भगवान् में अभेद मानना भी अपराध है। सेवक स्वामि भाव मानना धर्म है।

गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दनं तथार्थवादो हरिनाम्नि कल्पनम्।
नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि शुद्धिः ।।29।।

अपने गुरुजनों की अवज्ञा करना अर्थात् उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना तीसरा नामापराध है। वेद पुराण की निन्दा करना चौथा नामापराध है यहाँ निन्दा का तात्पर्य है सुनकर के कुतर्क करना। श्रीनाम महाराज की महिमा सुनकर उसे यथार्थ रूप में स्वीकार न करना, केवल प्रशंसा मात्र मानना जैसे पुराणों में तीर्थों और स्तोत्रपाठादि की महिमा लिखी है वैसे ही श्रीरामनाम की महिमा गायी गयी है। यह वास्तव नहीं है यह पाँचवां नामापराध है हम राम नाम का जप करते हैं अत: हमें पाप नहीं लगेगा यह सोचकर मनमानी आचरण करना, पाप करना छठा नामापराध है, यह महापाप है ऐसे पापी की शुद्धता यमनियमादि साधनों से अथवा यमलोक में जाने से भी नहीं होती है।

धर्म व्रत त्याग हुतादिसर्वशुभक्रिया साम्यमपि प्रमादः।
अश्रद्दधानेऽप्यमुखेऽप्यश्रृण्वति यश्चोपदेशं स नामापराधः ।।30।।

धर्म, व्रत, दान, त्याग और तप आदि जितने शास्त्रविहित शुभकर्म है उनकी श्रीरामनाम से तुलना करना यह सातवां असाध्य नामापराध है जैसे सर्वेश्वर महाराजाधिराज से सामान्य प्रजा की तुलना करना यह महद् अपराध है वैसा ही यह श्रीनामापराध है। जो अश्रद्धालु हैं सुनना नहीं चाहते हैं ऐसे लोगों को लोभवश श्रीरामनाम की महिमा सुनाना आठवां नामापराध है यह महाअपराध है तात्पर्य यह है उत्तम अधिकारी को ही श्रीरामनाम परत्व और रहस्य की बात सुनानी चाहिए। श्रीरामनाम का जप करना और प्रमाद करना, असावधान रहना, सन्तों का संग न करना, समस्त विश्व को श्रीरामनाममय जानकर भी हिंसा का त्याग न करना, यह नवम अपराध है तात्पर्य यह है कि प्रमाद और आलस्य से रहित होकर

सावधानीपूर्वक अहिंसावृत्ति से सन्तों का संग करते हुए श्रीरामनाम का जप करना ही उत्तम जप है।

श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितोऽधमः।
अहंममादिपरमो नाम्नि सोऽप्यपराधकृत्।।31।।

श्रीरामनाम की महिमा को सुनकर भी जो प्रीति से रहित है अहन्ता और ममता के मद में पागल है वह भी नामापराधी है यह दशम अपराध है क्योंकि ऐसे सुखसागर श्रीरामनाम के स्वभाव और माहात्म्य को सुनकर भी संसार का त्याग नहीं किया, श्रीरामनाम के रस को नहीं पिया इसलिए वह नामापराधी हैं।

अपराधविनिर्मुक्तः पलं नाम्नि समाचर।
नाम्नैव तव देवर्षे सर्वं सेत्स्यति नान्यतः।।32।।

हे नारद जी ! इसलिए यह उचित है कि सभी प्रकार के नामापराधों को छोड़कर हर पल श्रीरामनाम का जप करो, श्रीरामनाम जी की कृपा से ही सभी प्रकार के सुखों का लाभ तुम्हें मिल जायेगा। अन्य किसी भी साधन से अनन्त कल्प में भी परमानन्द दुर्लभ है।

जाते नामापराधे तु प्रमादेन कथञ्चन।
सदा संकीर्तयन्नाम तदेकशरणो भवेत्।।33।।

यदि प्राचीन मलीन संस्कार वश अथवा कुसंगवश नामापराध हो जाय तो घबराना नहीं चाहिए अपितु सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन करे और श्रीरामनाम को ही अपना सर्वस्व एवं संरक्षक माने और श्रीरामनाम के अनुरागी सन्तों के नाम का कीर्तन करे तथा सन्त सेवा करे तो सब अपराध मिट जाता है।

नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरन्त्यघम्।
अविश्रान्तप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि यत्।।34।।

श्रीरामनाम के अपराधी का अपराध श्रीरामनाम के जप से ही मिटेगा परन्तु श्रीरामनाम का निरन्तर जप करे किसी भी समय जप बन्द न हो।

नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथि गतं श्रोत्रमूले गतं वा शुद्धं
वाऽशुद्धवर्णं व्यवहितरहितं तारयत्येव सत्यम्।
तद्वैदेहद्रविणजनता लोभपाखण्डमध्ये,
निक्षिप्तं स्यान्न फलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र।।35।।

शुद्ध अथवा अशुद्ध जैसे जल्दी–जल्दी में रमरम कह देते हैं बिना दांत वाले लाम–लाम बोल देते हैं सूकर को देखकर यवन लोग हराम कह देते हैं एवं व्यवधान सहित जैसे अभी, रा कह दिया और दो घण्टे बाद 'म' कहा यह व्यवधानयुक्त है ऐसा नहीं होना चाहिए तात्पर्य यह है कि जिस किसी भी प्रकार से जैसा कैसा भी श्रीरामनाम जिसके वाणी, मन और श्रोत्र का विषय हो गया उसको श्रीरामनाम महाराज निश्चित ही तार देंगे ऐसे श्रीरामनाम महाराज का जप जो देह, गेह, धन, मान, प्रतिष्ठा, जनता, दम्भ, लोभ और पाखण्ड के लिए करते हैं हे नारद जी ! उनका शीघ्रता से कल्याण नहीं होता है धीरे–धीरे होता है अतः निष्काम भाव से ही श्रीरामनाम का जप करना चाहिए। नाम के बल पर पापकर्म में प्रवृत्त होना नाम महाराज को नाराज करना है जैसे बार–बार शरीर में कीचड़ लगाकर श्रीसरयूजी में धोना अपराध है यद्यपि मलीनता तो दूर हो ही जायेगी पर यह उचित नहीं है उसी प्रकार नाम जप से पाप तो निवृत्त हो जाते हैं पर ऐसा करना सर्वथा अनुचित है।

तत्रैव श्रीवशिष्ठवाक्यं भारद्वाजं प्रति

पद्मपुराण में ही श्रीवशिष्ठजी का वाक्य भारद्वाजजी के प्रति

अहो महामुने लोके रामनामाभयप्रदम्।
निर्मलं निर्गुणं नित्यं निर्विकारं सुधास्पदम्।।36।।
प्रत्यक्षं परमं गुह्यं सौशील्यादि गुणार्णवम्।
त्यक्त्वा मन्दात्मका जीवा नानामार्गानुयायिनः।।37।।

हे महामुने! बड़े आश्चर्य की बात यह है कि अभय प्रदान करने वाले, स्वच्छ, गुणातीत, अविनाशी, सकलविकार रहित, अमृतस्वरूप, प्रकट,

परमगुप्त, सुशीलतादि गुणों के सागर, अगम एवं अगाध श्रीरामनाम – महाराज का निरादर करके दूसरे अनेक मार्गों का जो अनुगमन करते हैं वे निश्चित ही मन्दमति हैं।

यत्र तत्र स्थितो वाऽपि संस्मरेन्नाममुक्तिदम्।

सर्वपापविशुद्धात्मा स गच्छेत् परमां गतिम् ॥38॥

जहाँ कहीं भी शुद्ध अथवा अशुद्ध स्थान में रहते हुए जिस किसी भी स्थिति में पवित्र हो या अपवित्र हो जो मुक्तिदाता श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह मनुष्य समस्त पाप तापों का नाश करके परम धाम को प्राप्त करेगा। इसमें संशय नहीं है।

मोहानलोल्लसज्ज्वाला ज्वलल्लोकेषु सर्वदा।

श्रीनामाम्भोदच्छायायां प्रविष्टो नैव दह्यते। ।39॥

मोहरूपी अग्नि में यह संसार सदा सर्वदा जल रहा है जो भाग्यवशात् श्रीरामनाम रूपी मेघ की छाया के नीचे आ जाता है वह शीतल हो जाता है वह फिर मोहादि की अग्नि में नहीं जलता है यहाँ श्रीरामनाम का उच्चारण करना ही छाया के नीचे आना है।

रामनामजपादेव रामरूपस्य साम्यताम्।

याति शीघ्रं न संदेहो सत्यं सत्यं वचो मम ॥140। ।

अति आसक्तिपूर्वक तन्मय होकर श्रीरामनाम के जप करने से श्रीरामजी की समता प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं है मेरी वाणी को सत्य ही जानना।

तत्रैव श्रीनारद वाक्यमम्बरीषं प्रति

वहीं पर अम्बरीष जी के प्रति श्रीनारद जी का वचन।

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनाम परात्परम्।

शुद्धान्तःकरणो भूत्वा निर्वाणमधिगच्छति। ।41। ।

श्रीरामनाम को परात्पर तत्व समझकर जो एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह शुद्ध अन्तःकरण वाला होकर परम मोक्ष को प्राप्त

करता है।

कीर्तयन् श्रद्धया युक्तो रामनामाखिलेष्टदम्।

परमानन्दमाप्नोति हित्वा संसारबन्धनम्।।42।।

श्रद्धा से युक्त होकर सम्पूर्णकामनाओं को पूर्ण करने वाले श्रीरामनाम का जो संकीर्तन करता है वह संसार के बन्धन का त्याग करके परमानन्द को प्राप्त करता है।

अनन्यगतयो मर्त्या भोगिनोऽपि परन्तप।

ज्ञानवैराग्यरहिता ब्रह्मचर्य्यादिवर्जिताः ।।43।।

सर्वोपायविनिर्मुक्ता नाममात्रैकजल्पकाः।

जानकीवल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम्।।44।।

हे परन्तप! जिनकी श्रीरामनाम के अलावा दूसरी कोई गति नहीं है जो भोगी है, ज्ञान वैराग्य से रहित है ब्रह्मचर्यादि से शून्य हैं और भगवत्प्राप्ति के समस्त उपाय से जो शून्य हैं परन्तु श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं— वे लोग निश्चित ही आदरपूर्वक श्रीजानकीजीवन के परात्पर धाम साकेत लोक में जायेंगे।

दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेतसंज्ञकम्।

सुखपूर्वं लभेत्त त्तुनामसंराधनात् प्रिये ।।45।।

हे पार्वति! योग के जो आठ अंग हैं उन आठ अंगों से युक्त योगी जन्म भर जो अभ्यास करते हैं ऐसे योगियों को भी जो दुर्लभ है, नित्य साकेतधाम जिसका नाम है ऐसे दिव्य धाम को श्रीरामनाम की आराधना से भक्त सुखपूर्वक प्राप्त कर लेता है।

तत्रैव श्री अर्जुनंप्रति श्रीकृष्णवाक्यम्

वहीं पर अर्जुन के प्रति श्रीकृष्ण के वाक्य

अर्जुन उवाच

भुक्तिमुक्तिप्रदातॄणां सर्वकामफलप्रद।

सर्वसिद्धिकरानन्त नमस्तुभ्यं जनार्दन।।46।।

हे जनार्दन! हे भुक्ति और मुक्ति प्रदान करने वालों की सभी कामनाओं के अनुसार फल प्रदान करने वाले! हे समस्त सिद्धियों को सुलभ करने

वाले! हे अनन्त आपको नमस्कार हो ।

यं कृत्वा श्रीजगन्नाथ मानवा यान्ति सद्गतिम्।
ममोपरि कृपां कृत्वा तत्त्वं ब्रू हि सुखालयम्।।47।।

हे श्रीजगन्नाथ! मनुष्य जिसको करके सद्गति को प्राप्त करते हैं उस सुख के आलय साधन को मेरे ऊपर कृपा करके कहिए।

श्रीकृष्ण उवाच

यदि पृच्छसि कौन्तेय सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।
लोकानान्तु हितार्थाय इह लोके परत्र च ।।48।।

कुन्तीनन्दन! यदि तुम पूछते हो तो मनुष्यों के इस लोक और परलोक में कल्याण के लिए मैं सत्य—सत्य कहता हूँ।[1]

रामनाम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नरः।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकामफलप्रदम्।।49।।

सदा पुण्यप्रद श्रीरामनाम का जो नित्य पाठ करता है वह यदि अपुत्र है तो वह समस्त कामनाओं के अनुरूप फल प्रदान करने वाले पुत्र को प्राप्त करता है।

मङ्गलानि गृहे तस्य सर्वसौख्यानि भारत।
अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।50।।

जो दिन रात 'राम; इन दो अक्षरों का उच्चारण करता है है भरतवंशी अर्जुन! उसके घर में समस्त सुख और मंगल सदा निवास करते हैं।

गंगा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धु पुष्करे।
केदारे तूदकं पीतं राम इत्यक्षरद्वयम्।।51।।

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण किया उसने श्रीगङ्गा श्रीसरस्वती, नर्मदा, यमुना, सिन्धु, पुष्कर और केदार में जल पी लिया।

अतिथेः पोषणश्चैव सर्वतीर्थावगाहनम्।
सर्वपुण्यं समाप्नोति रामनामप्रसादतः।।52।।

---

1. रामनाम संजीवनी महामनोहर मूरि। जासु जीह जिय विच वसी तासु सुजस भलि भूरि।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से मनुष्य अतिथि सेवा और समस्त तीर्थों के अवगाहन जन्य पुण्यों को प्राप्त कर लेता है।

सूर्य्यपर्वणि[2] कुरुक्षेत्रे कार्तिक्यां स्वामिदर्शने।
कृपापात्रेण वै लब्धं येनोक्तमक्षरद्वयम् ।।53।।

जिसने 'राम; इन दो अक्षरों का उच्चारण किया, श्रीरामनाम के उस कृपापात्र को सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में स्नान करने का तथा कार्तिक मास में श्रीस्वामी कार्तिकेय के दर्शन का पुण्य सहज में प्राप्त हो जाता है।

न गंगा न गया काशी नर्मदा चैव पुष्करम्।
सदृशं रामनाम्नस्तु न भवन्ति कदाचन ।।54।।

श्रीगङ्गाजी, गया, काशी, नर्मदा और पुष्कर आदि अनन्त पतितपावन तीर्थ अन्तःकरण की शुद्धि हेतु श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं अर्थात् श्रीरामनाम के जप से जितनी सहजता से अन्तःकरण पवित्र होता है उतना अनन्त तीर्थों के अवगाहन से नहीं। तीर्थों के अर्थात् श्रीगङ्गाजी आदि के जल का कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करने से जो अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त होती है वह श्रीरामनाम के जप से तत्काल प्राप्त हो जाती है जैसा कि भागवतकार ने लिखा है–**(सद्यः पुनन्त्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोऽनुसेवया) (भा. 1.1.15)**

तेन दत्तं हुतं तप्तं सदा विष्णुः समर्चितः।
जिह्वाग्रे वर्तते यस्य राम इत्यक्षरद्वयम्।।55।।

जिसके जिह्वा के अग्रभाग में 'राम' यह दो अक्षर विराजमान है उसने हर प्रकार के दान, हवन और तप का अनुष्ठान कर लिया और हमेशा हमेशा के लिए भगवान् विष्णु की अर्चना कर लिया।

माघस्नानं कृतं तेन गयायां पिण्डपातनम्।
सर्वकृत्यं कृतं तेन येनोक्तं रामनामकम्।।56।।

जिसने श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसने तीर्थराज श्रीप्रयाग में माघ स्नान का, श्रीगयाजी में पिण्डदान का तथा वेद, पुराण और संहिता में विहित समस्त शुभ कृत्यों के अनुष्ठान का फल सहज में प्राप्त कर लिया।[1]

प्रायश्चित्तं कृतं तेन महापातकनाशनम्।
तपस्तप्तं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।57।।

---

2. सूर्यग्रहे इत्येव सुवचम् ।

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने महापातकनाशक प्रायश्चित्त को कर लिया और सभी प्रकार के तप का अनुष्ठान कर लिया।

चत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः ।

त्रिलोकी मोचिता तेन राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ 58 ॥

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने समस्त शाखा, अङ्ग और उपाङ्ग के सहित चारों वेदों का पाठ कर लिया और विधि सहित समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया तथा तीनों लोकों के जीवों को छुड़ा दिया।

भूतले सर्वतीर्थानि आसमुद्रसरांसि च।

सेवितानि च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥59॥

जिसने 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने ब्रह्माण्ड के सब तीर्थों, समुद्र पर्यन्त समस्त सरोवरों में स्नान, दान और सेवन कर लिया।

अर्जुन उवाच

अर्जुन ने कहा–

यदा म्लेच्छमयी पृथ्वी भविष्यति कलौ युगे।

किं करिष्यति लोकोऽयं पतितो रौरवालये ॥60॥

हे भगवन्! जब यह पृथिवी सर्वथा म्लेच्छों से आक्रान्त हो जायेगी, सम्पूर्ण वातावरण रौरव नरक तुल्य हो जायेगा उस समय मनुष्य किस साधन के सहारे इस लोक में सुखी रहते हुए परम पद को प्राप्त करेगा?

श्रीकृष्ण उवाच

श्रीकृष्ण ने कहा–

न सन्देहस्त्वया कार्य्यो न वक्तव्यं पुनः पुनः।

पापी भवति धर्मात्मा रामनामप्रभावतः ॥61॥

---

१. चाहो चारों ओर दौर देखो गौर ज्ञान विना दीनता न छीन होय झीन अप आग है।
जहाँ तक साधन सुराधन विलोकिये जू बाधन उपाधन सहित नट बाग है।
तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है।
युगल अनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम नाम के रटन बिनु छूटत न दाग है॥

हे अर्जुन! श्रीरामनाम के विषय में तुम्हें सन्देह नहीं करना चाहिए और न ही बार–बार कहना चाहिए। चाहे जैसा भी पापी हो श्रीरामनाम के प्रताप से शुद्ध होकर पापी भी धर्मात्मा हो जाता है।

न म्लेच्छस्पर्शनात्तस्य पापं भवति देहिनः।
तस्मात्प्रमुच्यते जन्तुर्यस्स्मरेद्रामद्व्यक्षरम्।।62।।

जो 'राम' इन दो अक्षरों का स्मरण करेगा उनको म्लेच्छों के स्पर्श से पाप नहीं लगेगा क्योंकि श्रीरामनाम के प्रभाव से म्लेच्छों के स्पर्श सम्बन्धी पाप शीघ्र ही मुक्त हो जाते हैं।

रामस्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
कुलायुतं समुद्धृत्य रामलोके महीयते।।63।।

जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक श्रीरामजी के स्तोत्रों का पाठ करते हैं वे मनुष्य अपने कुल की दस हजार पीढ़ी का उद्धार करके श्रीसीतारामजी के दिव्य लोक साकेत में पूजित होते हैं।

रामनामामृतं स्तोत्रं सायं प्रातः पठेन्नरः।
गोघ्नः स्त्रीबालघाती च सर्वपापैः प्रमुच्यते।।64।।

श्रीरामनाम से संयुक्त अमृतमय स्तोत्रों का जो श्रद्धा विश्वासपूर्वक प्रातःकाल और सायंकाल पाठ करता है वह गोहत्या, बालहत्या और स्त्रीहत्या जन्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

तत्रैव श्रीअगस्त्यवाक्यं श्रीरामम्प्रति

उसी पदम पुराण में श्रीअगस्त्यजी का वाक्य श्रीराम के प्रति

विश्वरूपस्य ते राम विश्वशब्दा हि वाचकाः।
तथापि रामनामेदं प्रभो मुख्यतमं स्मृतम्।।65।।

हे रामजी! सर्वस्वरूप आप सभी शब्दों के वाच्य हैं और दुनिया के सारे शब्द आपके वाचक हैं तथापि हे प्रभो! यह श्रीरामनाम सभी नामों में अत्यन्त मुख्य कहा गया है।

तत्रैव श्रीव्यासवाक्यं विप्रान्प्रति

उसी पदमपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य विप्रों के प्रति

रामनामांशतो जाता ब्रह्माण्डाः कोटिकोटिशः।
रामनाम्नि परे धाम्नि संस्थिता स्वामिभिस्सह ।।66।।

अनन्तकोटिब्रह्माण्ड श्रीरामनाम के अंश से उत्पन्न होते हैं और सर्वोत्कृष्ट तेजः स्वरूप श्रीरामनाम में ही अपने स्वामियों के साथ स्थित हैं।

विश्वासः सुदृढो नाम्नि कर्त्तव्यः साधकोत्तमैः।
निश्चयेन परां सिद्धिं शीघ्रं प्राप्नोत्यसंशयम् ।।67।।

सर्वोत्तम साधकों को चाहिए कि अन्य सभी साधनों से मन को खींचकर श्रीरामनाम में सुदृढ़ विश्वास स्थापित करें। सुस्थिर विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप करने से अतिशीघ्र ही सर्वोत्कृष्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं।

चित्तस्यैकाग्रता विप्रा नाम्नि कार्या प्रयत्नतः।
वृत्तिरोधं विना हार्दं दुर्लभं मुनीनामपि ।।68 ।।

हे ब्राह्मणों! चाहे जिस किसी प्रकार से हो श्रीरामनाम में चित्त की एकाग्रता करनी चाहिए। जब तक चित्त की वृत्तियों का निरोध नहीं होगा तब तक मुनियों को भी हृदयानन्द (परमानन्द) अत्यन्त दुर्लभ है।

अहोभाग्यमहोभाग्यमहोभाग्यं पुनः पुनः।
येषां श्रीमद्रघूत्तंसनाम्नि संजायते रतिः।।69।।

वे लोग बहुत ही सौभाग्यशाली है बार–बार उनके सौभाग्य की बलिहारी है। जिनकी श्रीरामनाम में रति है। जो सप्रेम श्रीरामनाम का जप करते हैं उनके समान सौभाग्यशाली कोई नहीं है।

स्कन्दपुराणे शिववाक्यं शिवां प्रति

स्कन्दपुराण में भगवान् शिव का वाक्य श्रीपार्वतीजी के प्रति

कामात्क्रोधाद्भयान्मोहान्मत्सरादपि यस्स्मरेत्।
परंब्रह्मात्मकं नाम राम इत्यक्षरद्वयम्।।70।।

परात्पर ब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम का जो काम सम्बन्ध से, क्रोध से, भय

के कारण, मोह में आकर अथवा मात्सर्य से युक्त होकर भी स्मरण करता है वह निश्चय ही कृतार्थ हो जाता है।

येषां श्रीरामचिन्नाम्नि परा प्रीतिरचंचला।
तेषां सर्वार्थलाभश्च सर्वदास्ति शृणु प्रिये ।।71।।

हे प्रिये! सुनो जिन लोगों की सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीरामनाम में सुस्थिर परा प्रीति है उनके सभी मनोरथों की सिद्धि सर्वदा समझनी चाहिए।

गिरिराजसुते धन्या नास्ति त्वत्सदृशी क्वचित्।
यस्मात्तव महाप्रीतिर्वर्तते रामनाम्नि वै।।72।।

हे पर्वतराज पुत्रि पार्वति! किसी भी लोक में तुम्हारे जैसा धन्य कोई नहीं है क्योंकि श्रीरामनाम में तुम्हारी निश्चय ही अत्यन्त प्रीति है।

सर्वेऽवतारा: श्रीरामनामशक्तिसमुद्भवा:।
सत्यं वदामि देवेशि नाममाहात्म्यमद्भुतम्।।73।।

हे देवेशि! जगत् उद्धार के लिए जितने अवतार पृथिवी पर होते हैं वे सारे अवतार श्रीरामनाम की अद्भुत शक्ति से प्रकट होते हैं श्रीरामनाम की अद्भुत महिमा है मैं सत्य कहता हूँ कि सभी अभिलाषाओं का त्याग करके कलियुग में श्रीरामनाम के उच्चारण से ही मोक्ष सम्भव है अन्य किसी उपाय से नहीं ।

ब्रह्माण्डपुराणे धर्मराजवाक्यं श्रीरामचन्द्रं प्रति

ब्रह्माण्डपुराण में श्रीधर्मराज का वाक्य श्रीरामचन्द्रजी के प्रति

जयस्व रघुनन्दन रामचन्द्र प्रपन्नदीनार्तिहराखिलेश।
वाञ्छामहे नाम निरामयं सदा प्रदेहि भगवन् कृपया कृपालो ।।74।।

हे रघुनन्दन! हे अखिलेश ! शरणागत दीनों के आर्तिको हरण करने वाले हे रामचन्द्रजी! हे परमकृपालु भगवन्! हम सब आपसे श्रीरामनाम को चाहते हैं अत: निरामय श्रीरामनाम को प्रदान कीजिए। तात्पर्य यह है कि बिना श्रीरामजी के दिये चित्त में श्रीरामनाम निवास नहीं करता है और न ही नाम जप में चित्त लगता है इसलिए श्रीरामजी से नाम महाराज को माँगना

चाहिए।

त्वन्नामसंकीर्त्तनतो निशाचरा द्रवन्ति भूतान्यपयान्ति चारयः।
नाशं तथा सम्प्रति यान्ति राजन् ततः परं धाम प्रयाति साक्षात्।।75।।

हे महाराज श्रीरामचन्द्रजी! आपके श्रीरामनाम के संकीर्तन से सारे निशाचर दूर भाग जाते हैं सारे भूतप्रेत दूर चले जाते हैं और सारे शत्रु नष्ट हो जाते हैं। कीर्तन के पश्चात् साधक परमधाम को प्राप्त करता है।

सुखप्रदं रामपदं मनोहरं युगाक्षरं भीतिहरं शिवाकरम्।
यशस्करं धर्मकरं गुणाकरं वचो वरं मे हृदयेऽस्तु सादरम्।।76।।

सुख प्रदान करने वाला, मन को हरने वाला, भय को हरण करने वाला, महामंगल करने वाला, महान् यश प्रदान करने वाला, धर्मप्रदाता, समस्त गुणों की खान, 'राम' यह दो अक्षर आदरपूर्वक मेरे हृदय में निवास करे यह मुझे वर दीजिए।

रामनामप्रभा दिव्या वेदवेदान्तपारगा।
येषां स्वान्ते सदा भाति ते पूज्या भुवनत्रये।।77।।

वेद और वेदान्त का परम तत्व स्वरूप श्रीरामनाम की दिव्य प्रभा जिनके हृदय में सदा निवास करतीं है वे लोग त्रिलोकी में सदा सर्वदा पूज्य हैं।

विष्णुपुराणे व्यासवाक्यं शुकं प्रति

श्रीविष्णुपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य श्रीशुकदेवजी के प्रति

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः।
पुमान्विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्ता मृगा इव।।78।।

विवश होकर भी जिस श्रीराम नाम के कीर्तन करने पर मनुष्य समस्त पापों से तत्काल मुक्त हो जाता है उनके सम्पूर्ण पाप वैसे ही भाग जाते हैं जैसे सिंह के डर से मृग समूह भाग जाता है।

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन्।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ श्रीरामकीर्त्तनात्।।79।।

सतयुग में ध्यान करने से, त्रेता में यज्ञ करने से, और द्वापर में भगवान् की पूजा करने से जो कुछ प्राप्त होता है कलियुग में श्रीरामनाम के संकीर्तन

से वह सब कुछ सहज में प्राप्त हो जाता है।

तत्रैव श्रीसनत्कुमारवाक्यं वशिष्ठं प्रति

प्रसङ्गेनापि श्रीरामनाम नित्यं वदन्ति ये।
ते कृतार्था मुनिश्रेष्ठ सर्वदोषोद्गतास्सदा ।।80।।

हे मुनिश्रेष्ठ! किसी प्रसङ्ग विशेष में भी जो नित्य श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे निश्चय ही कृतार्थ हैं सदा सर्वदा सभी दोषों से मुक्त हैं।

दृष्टं श्रुतं मया सर्वं यत्किञ्चित्सारमुत्तमम्।
परन्तु रामनामैकवैभवं तु परात्परम्।।81।।

जो भी सारतत्व है उत्तम से उत्तम वस्तु है उन सबको मैंने देख लिया और सुन लिया परन्तु सबसे श्रेष्ठ परात्पर तत्व श्रीरामनाम की अद्भुत महिमा है।

तत्रैव श्रीविरंचिवाक्यं मरीचिं प्रति

श्रीविष्णुपुराण में ही श्री ब्रह्माजी का वाक्य श्रीमरीचिजी के प्रति

केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिज्ज्ञानादिसाधनम्।
कुर्वन्ति नामविज्ञानविहीना मानवा भुवि ।। 82।।

परात्पर श्रीरामनाम के विज्ञान (अनुभव) से शून्य कुछ लोग पृथिवी पर यज्ञादि का अनुष्ठान करते हैं और कुछ लोग ज्ञानादि की साधना करते हैं।

तत्र योगरताः केचित्केचिद्ध्यानविमोहिताः।
जपे केचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम्।।83।।

उनमें भी कुछ लोग योगाभ्यास में निरत हैं, कुछ लोग ध्यान में ही विमोहित हैं और कुछ लोग तान्त्रिक मन्त्रादि के जप में कष्ट भोग रहे हैं निश्चय ही वे लोग तारक मन्त्र श्रीरामनाम को नहीं जानते हैं इसलिए वे अभागी हैं।

अहं च शङ्करो विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकसः।
रामनामप्रभावेण सम्प्राप्ता सिद्धिमुत्तमाम् ।।84।।

मैं (ब्रह्मा), शंकरजी, विष्णुजी तथा सभी देवगण श्रीरामनाम के प्रभाव से ही उत्तम सिद्धि को प्राप्त किये हैं।

निर्वर्णं रामनामेदं वर्णानां कारणं परम्।
ये स्मरन्ति सदा भक्त्या ते पूज्या भुवनत्रये ।।85।।

यह श्रीरामनाम वर्णों से रहित है अर्द्धमात्रा रेफ बिन्दुरूप है और सभी वर्णों का परम कारण है ऐसे परमेश्वर स्वरूप श्रीरामनाम का जो भक्तिपूर्वक स्मरण करते हैं वे लोग त्रिभुवन में सभी से सदा सर्वदा पूज्य हैं।

भविष्योत्तरपुराणे श्रीनारायणवाक्यं लक्ष्मीं प्रति

भविष्योत्तरपुराण में श्रीनारायणजी का वाक्य श्रीलक्ष्मीजी के प्रति

भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेशपूजितम्।
रामेतिमधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि।।86।।

हे महालक्ष्मि! भगवान् सदाशिव से नित्य पूजित 'राम' इस मधुर नाम का भजन करो मैं स्वयं ही हृदय में श्रीरामनाम का संकीर्तन करता रहता हूँ।

रामनामात्मकं ग्रन्थं श्रवणात्प्राणवल्लभे।
शुद्धान्तःकरणो भूत्वा स गच्छेद्रामसन्निधिम्।।87।।

हे प्राणप्रिये! श्रीरामनाम के प्रतिपादक ग्रन्थों के श्रवण और पाठ करने से थोड़े ही दिनों में अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है तत्पश्चात् श्रीरामजी का नित्य सामीप्य प्राप्त होता है।

जीवाः कलियुगे घोरा मत्पादविमुखास्सदा।
भविष्यन्ति प्रिये सत्यं रामनामविनिन्दकाः।।88।।

हे प्रिये! मैं सत्य कहता हूँ कि कलियुग में मेरे चरणों से विमुख और अत्यन्त नीच जो लोग होंगे वे व्यर्थ में मेरे भक्त कहाकर श्रीरामनाम की निन्दा करेंगे।

गमिष्यन्ति दुराचारा निरये नात्र संशयः।
कथं सुखं भवेद्देवि रामनामबहिर्मुखे।।89।।

ऐसे पापी दुराचारी अधम लोग अवश्य नरक कुण्ड में गिरेंगे इसमें संशय नहीं है। हे देवि! श्रीरामनाम से विमुख जीवों को सुख कैसे हो सकता है।

सर्वेषां साधनानां वै श्रीनामोच्चारणं परम्।
वदन्ति वेदमर्मज्ञा निमग्ना ज्ञानसागरे ।।90।।

जो सदा सर्वदा ज्ञानसागर में निमग्न रहते हैं और जो वेद के रहस्यों को जानते हैं वे सन्त महापुरुष कहते हैं कि सभी साधनों से श्रेष्ठ श्रीरामनाम का उच्चारण अर्थात् संकीर्तन है।

यत्प्रभावान्मया नित्यं परमानन्ददायकम्।

रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्रीजानकीपतेः ॥91॥

जिस श्रीरामनाम के अद्भुत प्रभाव से मैंने नित्य परमानन्द प्रदान करने वाले दिव्य रसस्वरूप श्रीजानकीनाथजी के स्वरूप का साक्षात्कार किया।

तत्रैव नारद वाक्यं भारद्वाजं प्रति

भविष्योत्तरपुराण में ही श्रीनारदजी का वाक्य महर्षि भारद्वाज के प्रति

योगादिसाधने क्लेशं दुस्तरं सर्वथा मुने।

अतस्सौलभ्यसन्मार्गं संगच्छेन्नाम संस्मरन्॥92।।

हे मुने! योगादि अन्य साधन महादुस्तर और दुर्गम हैं उनके अनुष्ठान में सर्वथा कष्ट एवं श्रमाधिक्य है अत: विवेकी पुरुष को श्रीरामनाम का स्मरण करते हुए सहज सुलभ सन्मार्ग पर चलना चाहिए।

अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनिसत्तम।

प्रभावाद्रामनाम्नस्तु लभते रूपमद्भुतम्।।93॥

हे मुनिसत्तम! श्रीरामनाम के प्रभाव से बिना परिश्रम के ही दुर्लभ से दुर्लभ अपने सर्वस्व को साधक सहज में ही प्राप्त कर लेता है और श्रीरामनाम के प्रभाव से श्रीजानकीनाथ के परात्पर अद्भुत स्वरूप का साक्षात्कार हो जाता है।

श्रीनारदीयपुराणे सूतवाक्यं शौनकं प्रति

श्रीनारदीयपुराण में सूतजी का वाक्य शौनक के प्रति

भयं भयानामपहारिणिस्थिते परात्परे नाम्नि प्रकाशसंप्रदे।

यस्मिन्स्मृते जन्मशतोद्भवान्यपि भयानि सर्वाण्यपयान्ति सर्वतः।।94।।

भयों के भय को भी दूर करने वाले, समस्त कल्याण प्रदान करने वाले परात्परस्वरूप श्रीरामनाम महाराज हैं जिनके स्मरण मात्र से सैंकड़ों जन्मों के सभी भय सब प्रकार से दूर हो जाते हैं अत: श्रीरामनाम के उपासक को चाहिए किसी से भी भय न करे और किसी से भी कुछ चाहे नहीं क्योंकि श्रीरामनाम सर्वत्र व्याप्त हैं नाम के बिना दूसरी आशा यम त्रास का कारण है।

आयासः स्मरणे कोऽस्ति स्मृतो यच्छति शोभनम्।

पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम्॥95।।

श्रीरामनाम के स्मरण करने में कुछ श्रम भी नहीं है और स्मरण करने पर अनन्त कल्याण को प्रदान करते हैं जो दिन रात श्रीरामनाम का स्मरण करता है। उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रातर्निशि तथा सन्ध्यामध्याह्नादिषु संस्मरन्।
श्रीमद्रामं समाप्नोति सद्यः पापक्षयो नरः।।96।।

प्रातःकाल, रात्रि में, सन्ध्या के समय एवं मध्याह्न काल में जो श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करता है तत्काल उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह श्रीरामजी को प्राप्त करता है।

रामसंस्मरणाच्छीघ्रं समस्तक्लेशसंक्षयः।
मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बाधते।।97।।

हे विप्रश्रेष्ठ! श्रीरामनाम के सम्यक् स्मरण करने से समस्त क्लेशों का सम्यक् नाश हो जाता है उसको मुक्ति की प्राप्ति होती है उसे किसी भी प्रकार के विघ्न, बाधा उपस्थित नहीं होते।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं व्यासं प्रति

श्रीनारदीयपुराण ही में नारदजी का वाक्य व्यासजी के प्रति

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभवं मया।
परन्तु नाममाहात्म्यकलां नार्हति षोडशीम्।।98।।

समस्त साधनों के ऐश्वर्य एवं महत्त्व को मैंने सम्यक् प्रकार से देख लिया है परन्तु वे सब श्रीरामनाम के माहात्म्य की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है श्रीरामनाम सर्वोपरि है श्रीरामनाम की अनन्त कलाएँ हैं उनमें एक कला के तुल्य समस्त साधन, व्रत, तीर्थ, नेम, तप, यज्ञ, ज्ञान, वैराग्य और योगादि का सामर्थ्य है।

राम रसायन पान करु परिहरु अपर भरोस।
युगलानन्य विकार बन बीच न करु परितोस।
भवताऽपि परिज्ञातं सर्ववेदार्थसंग्रहम्।
नाम्नः परं क्वचित्तत्वं दृष्टं सत्यं वदस्व वै।।99।।

आपने भी समस्त वेदार्थ संग्रहों का परिज्ञान प्राप्त किया है श्रीरामनाम

से श्रेष्ठ किसी भी तत्व को कहीं भी यदि आपने देखा है तो सत्य सत्य कहिए। तात्पर्य यह है कि कहीं भी श्रीरामनाम से श्रेष्ठ तत्व नहीं है।

बहुधाऽपि मया पूर्वं कृतं यत्नं महामुने।
नैव प्राप्तं परानन्दसागरं जन्मकोटिभिः ।।100।।

हे महामुने! मैंने भी पहले अनेक प्रकार से प्रयत्न किया परन्तु परमानन्द सागर श्रीरामनाम के बिना करोड़ों जन्मों में भी कहीं भी परमानन्द की प्राप्ति नहीं हुई।

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
नाभ्यस्तं हृदये ब्रह्मन् तावन्नानार्थनिश्चयम्।।101।।

हे ब्रह्मन्! जब तक श्रीरामनाम के परात्पर प्रभाव का अपने हृदय में अभ्यास नहीं किया तब तक अनेक साधनों के चक्र में पड़ा रहा।

श्रीमद्रामस्य सन्नाम्नि यस्य स्यान्निश्चला रतिः।
स्वप्नेऽपि न भवेदन्यसाधने रुचिर्निष्फला।।102।।

श्रीमान् श्रीरामजी के सन्नाम में जिस साधक की निश्चल रति हो जाती है उस साधक की अन्य साधनों में स्वप्न में भी निष्फल रूचि नहीं होती है तात्पर्य यह है। कि जिसका मन श्रीरामनाम में लग गया वह अन्य साधन में प्रवृत्त नहीं होता है।

शिवपुराणे श्रीशंकरवाक्यं नारदं प्रति

शिवपुराण में श्रीशंकरजी का वाक्य नारदजी के प्रति

सीतया सहितं रामनाम जाप्यं प्रयत्नतः।
युगल नाम इदमेव परं प्रेमकारणं संशयं विना ।।103।।

श्रीसीताजी के दिव्य नाम से संयुक्त श्रीरामनाम का जप प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए श्रीसीतारामनाम का जप ही बिना संशय के प्रेम का कारण है। जैसे राका बिना चन्द्रमा यथार्थ सुख शीतलता नहीं प्रदान करता है उसी प्रकार सीता नाम के बिना श्रीरामनाम वास्तव शान्ति नहीं प्रदान करता है अतः युगल नाम का ही जप करना चाहिए।

जनक लली के पदकमल जब लगि उर नहिं वास।
राम भ्रमर आवे नहीं तब लगि ताकेपास।।
सकृदुच्चारणादेव मुक्तिमायाति निश्चितम्।
न जानेऽहं शतादीनां फलं वेदैरगोचरम्।।104।।

यह निश्चित है कि एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण करने से ही मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है तब सैकड़ों बार श्रीरामनाम के जप का क्या फल है? यह मैं नहीं जानता, यह वेदों का भी अविषय है।

यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशित्त्वं परं मुने।
प्राप्तं नाम्नैव सत्यं च सुगोप्यं कथितं मया ।।105।।

हे मुने! जिस श्रीरामनाम का निरन्तर ध्यान करके उसी नाम महाराज की कृपा से मैंने अविनाशित्व को प्राप्त किया है यह कथन सर्वथा सत्य एवं सुगोप्य है मैंने आपको उत्तम अधिकारी जानकर श्रीरामनाम के प्रताप का रहस्य प्रकट किया है।

श्रीरामनाम सकलेश्वरमादिदेवं धन्या जना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परममुक्तिमयत्नतस्तथा श्रीरामभक्तिरचला विमला प्रसाददा ।।106।।

श्रीरामनाम सभी का, समस्त ईश्वरों का भी ईश्वर है आदिदेव है पृथिवी तल पर वे लोग धन्य हैं जो निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उन साधकों को बिना श्रम के ही मुक्ति हो जाती है और श्रीरामजी की अविचल विमल एवं परम प्रसन्नता प्रदान करने वाली भक्ति प्राप्त हो जाती है।

रामनाम सदा सेव्यं जपरूपेण नारद।
क्षणार्द्धं नामसंहीनं कालं कालातिदुःखदम्।।107।।

हे नारद जी! श्रीरामनाम की जपरूपीसेवा सदा करनी चाहिए। श्रीरामनाम से रहित जो समय व्यतीत होता है वह आधा क्षण भी महाकाल से भी अधिक दुःखदायी है तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम का विस्मरण ही

नामानुरागियों के लिए मौत तुल्य है।

श्रीमद्भागवते शुकदेववाक्यं परीक्षितम्प्रति

श्रीमद भागवत में शुकदेव जी का वाक्य परीक्षितजी के प्रति

आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन्।
ततः सद्यो विमुच्येत यद् बिभेति स्वयं भयम्।।108॥

महाभयानक संसार दुःख से युक्त होने पर जिस श्रीरामनाम का विवश होकर उच्चारण करने पर भी जीव तत्काल ही उस क्लेश से मुक्त हो जाता है क्योंकि श्रीरामनाम के भय से भय भी डरता है।

कलिं सभाजयन्त्यार्या गुणज्ञाः सारभागिनः।
यत्र संकीर्त्तनेनैव सर्वः स्वार्थोऽभिलभ्यते।।109।।

जो गुणी, सारग्राही एवं आर्यजन हैं वे लोग कलियुग की प्रशंसा करते हैं। क्योंकि कलियुग में श्रीरामनाम के संकीर्तन से ही सभी स्वार्थ की सिद्धि हो जाती है।

अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत्।
संकीर्त्तितमघं पुंसां दहत्येधो यथाऽनलः।।110।।

जानकर अथवा अनजान में चाहे जैसे भी उत्तम श्लोक भगवान् श्रीसीतारामजी के दिव्य नामों का संकीर्तन मनुष्यों के पाप को उसी प्रकार जला कर भस्म कर देता है जैसे अग्नि लकड़ी को जलाकर भस्म कर देती है।

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाघवान्।
श्वादः पुल्कसकोवाऽपि शुद्धेरन् यस्य कीर्त्तनात्।।111।।

ब्रह्मघाती, पितृघाती, गोहिंसक, मातृघाती, गुरुघाती, पापी, कुत्ते का मांस खाने वाला चण्डाल और पुल्कसादि भी जिस श्रीरामनाम के संकीर्तन से पवित्र हो जाते हैं उस रामनाम का जप करो अन्य साधनों को छोड़कर।

नातः परं कर्म निबन्धकृन्तनं मुमुक्षूणां तीर्थपदानुकीर्त्तनात्।
न यत्पुनः कर्मसु सज्जते मनो रजस्तमोभ्यां कलिलं यदन्यथा।।112।।

मोक्षाभिलाषी लोगों के कर्मों के बन्धन को काटने वाला तीर्थ पाद श्रीसीतारामजी के श्रीरामनाम के संकीर्तन के अतिरिक्त कोई साधन नहीं है। श्रीरामनाम के जप से जब मन निर्मल हो जाता है तो वह पुनः रजोगुण और तमोगुण से युक्त नहीं होता है और कर्म में आसक्त नहीं होता है। दूसरे साधनों से मन की निर्मलता स्थिर नहीं होती है कुछ समय तक शान्त रहेगा फिर रजोगुण और तमोगुण से युक्त हो जाता है।

एवं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्त उच्चैः।
हसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकबाह्यः।।113।।

इस प्रकार संकल्पपूर्वक प्राणप्रिय श्रीरामनाम का निरन्तर जप करने से प्रेमलक्षणा भक्ति प्रकट होती है तत्पश्चात् वह द्रवितचित्त साधक कभी–कभी जोर से हँसता है, कभी रोता है, कभी ऊँचे स्वर में गाता है, कभी उन्मादी की तरह नृत्य करता है उसकी सारी चेष्टाएँ लोक व्यवहार से बाहर हो जाती है।

यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया।
अजानतोऽप्यात्मगुणं कुर्य्यान्मन्त्रोऽप्युदाहृतः।।114।।

जैसे सुधा विषादि शक्तिमान् औषध दैववश बिन जाने भक्षण करने पर भी अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम बिना ज्ञान के भी जप करने पर संसार दुख मिटा देता है।

मार्कण्डेयपुराणे श्रीव्यासवाक्यं स्वशिष्यान्प्रति

मार्कण्डेयपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य अपने शिष्यों के प्रति

धर्मानशेषसंशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमाः।
तेभ्यो ऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम्।।115।।

जो श्रेष्ठ ब्राह्मण समस्त शुद्ध धर्मों के सेवन से जो फल प्राप्त करते हैं वे उनसे अनन्त गुना अधिक पुण्य श्रीरामनाम के संकीर्तन से प्राप्त कर सकते हैं अतः श्रीरामनाम संकीर्तन सर्वश्रेष्ठ है।

यस्यानुग्रहतो नित्यं परमानन्दसागरम्।

रूपं श्रीरामचन्द्रस्य सुलभं भवति ध्रुवम् ।।116।।

जिस श्रीरामनाम की कृपा से परमानन्द सागर श्रीसीतारामजी का स्वरूप साक्षात्कार निश्चित सुलभ हो जाता है और एक रस हृदय में बना रहता है।

वेदानां सारसिद्धान्तं सर्वसौख्यैककारणम्।

रामनाम परं ब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम्।।117।।

समस्त वेदों का सार सिद्धान्तः समस्त सुखों का एकमात्र कारण, परब्रह्म स्वरूप और सभी को प्रेम प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है।

तस्मात्सर्वात्मना रामनाम माङ्गल्यकारकम्।

भजध्वं सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहान्।।118।।

इसलिए हे शिष्यों! तुम लोग महामाङ्गल्य प्रदान करने वाले श्रीरामनाम को सभी दुराग्रहों को छोड़कर सावधान होकर सर्वात्मभाव से भजो इसी में भलाई है श्रीरामनाम सम्बन्ध बिना जीव किसी रीति से भी कृतार्थ नहीं हो सकता है।

नित्यं नैमित्तिकं सर्वं कृतं तेन महात्मना।

येन ध्यातं परं प्राप्यं नाम निर्वाणदायकम् ।।119।।

जिसने परम प्राप्य निर्वाणदायक श्रीरामनाम का चिन्तन कर लिया उस महात्मा ने नित्य, नैमित्तिक सभी प्रकार के कर्मों का अनुष्ठान कर लिया। उसके लिए कुछ भी करना शेष नहीं है।

जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः।

कृतकृत्यस्स एव स्यात् सर्वदोषैकदाहकः।।120।।

जिस साधक की श्रीरामनामामृत जप में रूचि हो जाती है उसकी जिह्वा अमृतमयी हो जाती है और वह साधक कृतकृत्य हो जाता है उसके समस्त दोष जलकर भस्म हो जाते हैं।

तत्रैव व्यासदेववाक्यं सूतं प्रति

उसी मार्कण्डेयपुराण में व्यासजी का वाक्य सूतजी के प्रति

रामनाम परं गुह्यं सर्ववेदान्तवन्दितम्।
ये रसज्ञा महात्मानस्ते जानन्ति परेश्वरम्।।121।।

श्रीरामनाम परम गुह्य है समस्त वेदान्तों से पूज्य है जो महात्मा श्रीरामनाम के रस को जानते हैं वे श्रीरामनाम के परेश्वर स्वरूप को जानते हैं।

नामस्मरणनिष्ठानां निर्विकल्पैकचेतसाम्।
किं दुर्लभं त्रिलोकेषु तेषां सत्यं वदाम्यहम्।।122।

जिनकी श्रीरामनाम के स्मरण में अपार निष्ठा है जो नाना प्रकार के संकल्प विकल्पों से रहित हैं जो एकाग्रचित हैं उन महात्माओं के लिए त्रिलोकी में कुछ भी दुर्लभ नहीं है यह सत्य सत्य मैं कहता हूँ।

अज्ञानप्रभवं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम्।
रामनामप्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।123।।

जड़चेतनात्मक जो कुछ है वह सब अज्ञान से उत्पन्न हुआ है। श्रीरामनाम का निरन्तर जप करने से अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है उस समय उस महात्मा को सर्वत्र परिपूर्ण परब्रह्म श्रीरामजी का दर्शन होने लगता है सृष्टिगत नानात्व नष्ट हो जाता है।

भजस्व सततं नाम जिह्वया श्रद्धया सह।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते ।।124।।

इसलिए श्रद्धापूर्वक अपनी जिह्वा से निरन्तर श्रीरामनाम का भजन करो इससे थोड़े समय में ही महामोद की प्राप्ति होगी।

धन्यं कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीरामतत्परः।
जायते सत्यसंकल्पः पुत्रः श्रीशेशवल्लभः ।। 125।।

जिस कुल में श्रीरामनाम जय परायण, सत्यसंकल्प और श्रीविष्णु भगवान आदि के स्वामी श्रीसीतारामजी का प्रिय पुत्र उत्पन्न होता है। वह कुल धन्य एवं श्रेष्ठ है।

गरुडपुराणे श्रीविष्णुवाक्यं वैनतेयं प्रति

गरुड़पुराण में श्रीविष्णुजी का वाक्य गरुड़जी के प्रति

श्रीरामराम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः।

पापकोटिसहस्रेभ्यस्तेषां संतरणं ध्रुवम्।।126।।

जो पापी भी श्रीराम, राम राम ऐसा उच्चारण करते हैं उन पापियों का भी करोड़ों पापों से उद्धार निश्चित है तात्पर्य है कि अनन्त जन्मों के अनन्त पापों से मनुष्य का उद्धार श्रीरामनाम महाराज की कृपा से हो सकता है लेकिन कुछ दिन तक निरन्तर सब आशा त्यागकर श्रीरामनाम का जप किया जाय तो।

कलौ संकीर्त्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति।

तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्त्तनं वरम्।।127।।

कलियुग में श्रीरामनाम के संकीर्तन से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं इसलिए श्रीरामनाम का संकीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ साधन है श्रीरामनाम का संकीर्तन ही करना चाहिए।

अग्निपुराणे श्रीमहादेववाक्यं दुर्वाससं प्रति

अग्निपुराण में श्रीमहादेवजी का वाक्य दुर्वासा के प्रति

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिकम्।

न भयं प्रेतराजस्य श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात्।।128।।

श्रीरामनाम के संकीर्तन से यमदूतों का, रौरवादि नरकों का और यमराज का भय नहीं रहता है।

यच्चापराह्णे पूर्वाह्णे मध्याह्णे च तथा निशि।

कायेन मनसा वाचाकृतं पापं दुरात्मना।।129।।

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत्।

रामनामजपाच्छीघ्रं विनष्टं भवति ध्रुवम्।।130।।

दुरात्मा पापी के द्वारा पूर्वाह्ण, मध्याह्ण और रात्रि में शरीर, मन और वाणी से जो पाप किया जाता है वह सम्पूर्ण पाप निश्चित ही परम ब्रह्म परम तेजोमय और परमपवित्र स्वरूप श्रीरामनाम के जप से विनष्ट हो जाता है।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः स्त्रीशूद्राश्च तथान्त्यजाः।
यत्र कुत्रानुकुर्वन्तु रामनामानुकीर्त्तनम्।।131।।

इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री शुद्र तथा अन्त्यजों को शुचि अथवा अशुचि किसी भी अवस्था में सर्वत्र श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए।

तत्रैव प्रह्लादवाक्यं बालकान् प्रति

उसी अग्निपुराण में प्रह्लादजी का वाक्य बालकों के प्रति

यत्प्रभावादहंसाक्षात्तीर्णो घोरभयार्णवम्।
अनायासेन बाल्येऽपि तस्माच्छ्रीनामकीर्त्तनम्।।132।।

हे दैत्य बालकों! जिस श्रीरामनाम के संकीर्तन के प्रभाव से बिना परिश्रम के ही बाल्यावस्था में ही मैंने अपने पिताजी के क्रोधरूपी अत्यन्त भयावह समुद्र को पार कर लिया है, अतः हम सभी को श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए।

कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहम्।
साधनान्यं विहायाशु बुद्ध्वा वैरस्यमात्मनि।।133।।

अतः समस्त दुराग्रह का त्याग करके एवं अन्य सभी साधनों को रस शून्य जानकर सावधान होकर श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए।

यद्भुञ्जन्यत्स्वपंस्तिष्ठन् गच्छन्वै जाग्रति स्थितौ।
कृतवान्पापमद्याहं कायेन मनसा गिरा।।134।।
यत्स्वल्पमपि यत्स्थूलं कुयोनिनरकावहम्।
तद्यातु प्रशमं सर्वं रामनामानुकीर्त्तनात्।।135।।

आज मैंने शरीर, मन और वाणी से भोजन करते समय, बैठते–उठते, चलते–जागते, सोते एवं सकल व्यवहार करते समय जो पाप किया है जो थोड़ा अथवा बहुत हो, एवं शूकरादि योनि एवं महाघोर नरक प्रदान करने वाले जो पाप हैं वे समस्त पाप श्रीरामनाम के संकीर्तन से नष्ट हो जावें।

क्रियाकलापहीनो वा संयुतो वा विशेषतः।
रामनामानिशं कुर्वन् कीर्त्तनं मुच्यते भयात्।।136।।

वेदोक्त समस्त क्रियाकलापों से जो शून्य हो अथवा युक्त हो वह निरन्तर श्रीरामनाम के संकीर्तन से जन्ममरण रूप भय से मुक्त हो जाता है।

यदिच्छेत्परमां प्रीतिं परमानन्ददायिनीं।
तदा श्रीरामभद्रस्य कार्यं नामानुकीर्तनम्।।137।।

यदि श्रीसीतारामजी की परमानन्ददायिनी परात्पर प्रीति को प्राप्त करना चाहते हो तो सभी आशाओं का त्याग करके श्रीरामनाम का संकीर्तन करो पराप्रीति का उदय हो जायेगा।

ब्रह्म वैवर्तपुराणे शिववाक्यं नारदं प्रति

ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य श्रीनारदजी के प्रति

हनन्ब्राह्मणमत्यन्तं कामतो वा सुरां पिबन्।
रामनामेत्यहोरात्रं संकीर्त्य शुचितामियात्।।138।।

जो अत्यन्त पापी हजारों ब्राह्मणों की हत्या करने वाला है अथवा स्वच्छन्द मदिरापान करने वाला है वह नीच भी एक दिन रात निरन्तर श्रीरामनाम के संकीर्तन से परम पवित्र हो जाता है।

अपि विश्वासघाती च तथा ब्राह्मण निन्दकः।
कीर्त्तयेद् रामनामानि न पापैः परिभूयते।।139।।

किसी की सहायता का वचन देकर सामर्थ्य होने पर भी न करना विश्वासघात है यह महापाप एवं ब्राह्मण की निन्दा करना भी महापाप है इत्यादि अनेक पापों को करने वाला भी यदि श्रीरामनाम का संकीर्तन करे तो शीघ्र ही समस्त पापों से रहित हो जाता है।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यमम्बरीषं प्रति

उसी ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्रीनारदजी का वाक्य अम्बरीष के प्रति

व्रजँस्तिष्ठन्स्वपन्नश्नन्स्वशन्वाक्यप्रपूर्णके।
रामनाम्नस्तु संकीर्त्य भक्तियुक्तः परंव्रजेत्।140॥

जो चलते, बैठते, बोलते, खाते, पीते, सोते सांस लेते एवं वाक्य के अन्त में स्नेहपूर्वक श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह श्रीसीतारामजी के परम धाम को प्राप्त करता है।

कदाचिन्नाम संकीर्त्य भक्त्या वा भक्तिवर्जितः।

दहते सर्व पापानि युगान्ताग्निरिवोत्थितः ।। 141 ।।

जो श्रीरामनाम का उच्चारण किसी भी समय भक्तिपूर्वक अथवा भक्ति से रहित ही करता है उसके जन्म जन्मान्तर के समस्त पाप उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे महाप्रलय की अग्नि से समस्त सृष्टि का संहार हो जाता है।

जन्मान्तर सहस्रैस्तु कोटि जन्मान्तरेषु यत्।
रामनाम प्रभावेण पापं निर्यांति तत्क्षणात् ।। 142 ।।

असंख्य जन्मों में असंख्य शरीरों के द्वारा किये जाने वाले जो असंख्य पाप हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के प्रभाव से क्षणभर में भस्म हो जाते हैं।

अभक्ष्यभक्षणात्पापमगम्यागमनाच्च यत्।
नश्यते नात्र संदेहो रामनाम जपान्नृप ।।143।।

हे राजन्! अभक्ष्य के भक्षण करने से एवं अगम्या स्त्री के साथ गमन करने का जो पाप लगता है वह पाप श्रीरामनाम के जप से नष्ट हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है।

अम्बरीष महाभाग श्रृणुमद्वचनं वरम्।
सर्वोपद्रवनाशाय कुरु श्रीरामकीर्त्तनम् ।।144 ।।

हे महाभाग अम्बरीष! मेरे श्रेष्ठ वचन को सुनो, सभी प्रकार के उपद्रवों के नाश के लिए श्रीरामनाम का संकीर्तन करो।

तावत्तिष्ठति देहेस्मिन्काल कल्मष संभवम्।
श्रीनामकीर्त्तनं यावत्कुरुते मानवो नहि ।। 145 ।।

मनुष्य के शरीर में काल जन्य कल्मष तभी तक निवास करते हैं जब तक वह श्रीरामनाम का संकीर्तन नहीं करता है श्रीरामनाम के संकीर्तन से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।146 ।।

जिनके स्मरण करने से और जिनके नाम का उच्चारण करने से तप,

यज्ञ, क्रियादि में होने वाली न्यूनता तत्काल सम्पूर्णता को प्राप्त हो जाती है उन अच्युत भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ।

आधयो व्याधयो यस्य स्मरणान्नामकीर्त्तनात्।
शीघ्रं वैनाशमायान्ति तं वन्दे पुरुषोत्तमम्।।147।।

जिनके स्मरण करने से और जिनके नाम का संकीर्तन करने से सभी प्रकार की मानसिक व्यथा एवं शारीरिक व्यथाएँ शीघ्र ही नष्ट हो जाती हैं उन पुरुषोत्तम भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ।

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण हेलया कुलवर्द्धन।
पापौघं विलयं याति दत्तमश्रोत्रिये यथा।।148।।

हे कुलवर्द्धन! अनादरपूर्वक श्रीरामनाम के संकीर्तन से भी पापों का समूह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार अश्रोत्रिय को दिया गया दान नष्ट हो जाता है।

गवामयुतकोटीनां कन्यानामयुतायुतैः।
तीर्थकोटि सहस्राणां फलं श्रीनामकीर्त्तनम्।।149।।

अनन्त कोटि गोदान, अनन्तकोटि कन्यादान और अनन्तकोटि तीर्थों में स्नान करने का जो पुण्य प्राप्त होता है वह एक बार श्रीरामनाम के संकीर्तन से सहज में प्राप्त हो जाता है।

रामनामेति सद्भक्त्या येन गीतं महात्मना।
तेनैव च कृतं सर्वं कृत्यं वै संशयं विना।।150।।

जिस महात्मा ने श्रद्धाभक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का गान कर लिया, उसने ही समस्त कर्त्तव्य कर्मों का अनुष्ठान कर लिया, इसमें संशय नहीं है।

वसन्ति यानि तीर्थानि पावनानि महीतले।
तानि सर्वाणि नाम्नस्तुकलां नार्हन्ति षोडशीम्।। 151।।

पृथ्वी पर पवित्र करने वाले जितने तीर्थ विद्यमान हैं वे सभी तीर्थ श्रीरामनाम की सोलहवीं कला के तुल्य भी नहीं है अतः श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ एवं पावनों को भी पावन बनाने वाला है।

रामनाम समं चान्यत्साधनं प्रवदन्ति ये।

ते चाण्डालसमास्सर्वे सदा रौरव वासिनः।।152।।

जो लोग दूसरे साधनों को श्रीरामनाम के समकक्ष कहते एवं समझते हैं वे लोग चाण्डाल के तुल्य हैं और सदा रौरव नरक में निवास करते हैं।

रामनामाशयं दिव्यं ये जानन्ति समादरात्।
ते कृतार्थाः कलौ राजन्सत्यंसत्यं वदाम्यहम्।।153।।

जो लोग श्रीरामनाम के दिव्य आशय को आदरपूर्वक जानते एवं स्वीकार करते हैं हे राजन्! कलियुग में वे ही लोग कृतार्थ हैं यह मैं सत्य–सत्य कहता हूँ।

दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञानचक्षुषा।
वाङ्मनोगोचरातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्।।154।।

मैंने विज्ञानरूपी नेत्र से देख लिया है कि समस्त विश्व श्रीरामनामात्मक है श्रीरामनाम वाणी, मन बुद्धि आदि इन्द्रियों से सर्वथा परे हैं सभी कल्पनाओं से परे हैं और महाप्रमोद को प्रदान करने वाला है।

ब्रह्मपुराणे श्रीब्रह्मवाक्यं नारदं प्रति

ब्रह्मपुराण में श्रीब्रह्माजी का वाक्य नारदजी के प्रति

इदमेव हि माङ्गल्यमिदमेव धनागमः।
जीवितस्य फलञ्चैव रामनामानुकीर्त्तनम्।।155।।

श्रीरामनाम का संकीर्तन ही परम मंगलस्वरूप है सर्वश्रेष्ठ धन का आगम है और मानव जीवन का परम फल है।

प्रमादादपि संस्पृष्टो यथाऽनलकणो दहेत्।
तथौष्ठपुट संस्पृष्टं रामनामदहेदघम्।।156।।

जैसे प्रमाद से भी स्पर्श करने पर अग्निकण स्पर्श करने वाले को जलाता है। वैसे ही श्रीरामनाम ओष्ठपुट और रसना से उच्चरित होने पर पाप को दग्ध कर देता है।

हत्याऽयुतं पानसहस्रमुग्रं गुर्वङ्गनाकोटि निषेवनञ्च।
स्तेनान्यसंख्यानि च पातकानि श्रीरामनाम्ना निहतानि सद्यः।।157।।

दस हजार हत्या, हजारों प्रकार से भयंकर मद्यपान, गुरुपत्नी के साथ करोड़ों बार गमन और असंख्य बार सुवर्णादि की चोरी करने से होने वाले जो पाप हैं वे सब श्रीरामनाम के संकीर्तन से तत्काल नष्ट हो जाते हैं।

निर्विकारं निरालम्बं निर्वैरञ्च निरञ्जनम्।
भज श्रीरामनामेदं सर्वेश्वर प्रकाशकम्।।158।।

हे नारद! श्रीरामनाम जन्मादि विकारों से रहित हैं, श्रीरामनाममहाराज जीव को कृतार्थ करने के लिए किसी अन्य साधन का अवलम्ब नहीं लेते हैं, श्रीरामनाम का किसी से वैर नहीं है, श्रीरामनाम मायादि अञ्जनों से रहित हैं, श्रीरामनाम सर्वेश्वर एवं श्रीसीतारामजी के परात्परेश्वरस्वरूप को साक्षात् नामानुरागी के भीतर बाहर प्रकाशित कर देते हैं अतः तुम इस श्रीरामनाम का भजन करो।

श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
सत्यं यो नाभिजानाति द्रष्टव्यं तन्मुखं नहि।।159।।

श्रीरामनाम के परात्पर प्रभाव को सुनकर भी जो उसे सत्य नहीं समझता है उसके मुख को नहीं देखना चाहिए।

विज्ञानं परमं गुह्यमिदमेव महामुने।
बाह्यं वाऽभ्यन्तरं नाम सततं चिन्तनं वरम्।।160।।

हे महामुने! नारदजी! सर्वोत्कृष्ट विज्ञान एवं परम गोपनीय यही है कि भीतर बाहर से निरन्तर श्रीरामनाम का जप करना यही श्रेष्ठ चिन्तन है।

कूर्म पुराणे श्रीशंकरवाक्यं शिवां प्रति

कूर्मपुराण में श्रीशंकरजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति

गोप्याद्गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम्।।161।।

हे कल्याणि! गोप्य से भी अत्यन्त गोपनीय मेरे जीवन सर्वस्व श्रीरामनाम हैं श्रीरामनाम सर्वेश्वर एवं आश्चर्यमय भोग एवं मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।

जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वर प्रियम्।

नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम् ।।162।।

हे प्रिये! तुम निरन्तर श्रीरामनाम का जप करो क्योंकि श्रीरामनाम सभी ईश्वरों को भी प्रिय हैं समस्त नियामकों का परम कारण एवं सर्वश्रेष्ठ प्रेरक है।

रामनामैव सद्विद्ये सत्यं वच्मि वरानने।
समाहितेन मनसा कीर्त्तनीयस्सदा बुधैः ।।163।।

हे सुमुखि! हे ब्रह्म विद्यास्वरूपिणि पार्वति ! मैं सत्य सत्य कहता हूँ कि विद्वानों को सदा सावधानचित्त होकर श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए।

रामनामात्मकं तत्त्वं सतां जीवनमुत्तमम्।
निन्दितस्सर्वलोकेषु रामनाम बहिर्मुखः।।164।।

श्रीरामनाम सभी सन्तों का जीवन है जो श्रीराम से बहिर्मुख है वह सभी लोकों में निन्दित है।

लौकिकी वैदिकी या या क्रिया सर्वार्थसाधिका।
ताभ्यः कोट्यर्बुदगुणं श्रेष्ठंश्रीनामकीर्त्तनम् ।।165।।

सभी अर्थों को सिद्ध करने वाली लौकिक या वैदिक जितनी क्रियाएँ हैं उन समस्त क्रियाओं से कई गुना श्रेष्ठ श्रीरामनाम संकीर्तन है।

धिक्कृतं तमहं मन्ये सततं प्राणवल्लभे।
यज्जिह्वाग्रे न श्रीरामनाम संराजते सदा ।।166।।

हे प्राण वल्लभे! मैं उसे सतत धिक्कार के योग्य मानता हूँ जिसकी जिह्वा पर सदा श्रीरामनाम विराजमान न हो अर्थात् जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन नहीं करता है उसे धिक्कार है।

वामनपुराणे श्रीवामन वाक्यं मुनीन्प्रति

वामनपुराण में श्रीवामनजी का वाक्य मुनियों के प्रति

अघौघा वज्रपाताद्या ह्यन्ये दुर्नीत संभवाः।
स्मरणाद्रामभद्रस्य सद्यो याति क्षयं क्षणात्।।167।।

पापों का समूह, वज्रपातादि दोष तथा दूसरे दुष्टनीतियों से समुत्पन्न दुर्भिक्षादि जितने दोष हैं वे सब श्रीरामनाम के स्मरण से तत्काल नष्ट हो जाते हैं।

शृण्वन्ति ये भक्तिपरा मनुष्याः संकीर्त्यमानं भगवन्तमुग्रम्।

ते मुक्तपापाः सुखिनो भवन्ति यथाऽमृतप्राशनतर्पितास्तु।।168।।

भक्तिपरायण जो मनुष्य भगवान् के श्रीरामनाम के संकीर्तन एवं भगवान् के गुण कीर्तन को सुनते है वे समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं और उसी प्रकार सुखी हो जाते हैं जिस प्रकार अमृतपान करने से प्राण तृप्त हो जाते हैं।

परदाररतो वाऽपि परापकृतकारकः।

स शुद्धो मुक्तिमायाति रामनामानुकीर्तनात्।।169।।

जो परस्त्री भोगरत है अथवा जो दूसरे का अपकार करता है वह पापी भी श्रीरामनाम के संकीर्तन के प्रभाव से शुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त करता है।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यस्स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।170।।

अपवित्र हो या पवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में हो जो राजीव लोचन श्रीराम के नाम का स्मरण करता है वह भीतर बाहर सभी प्रकार से पवित्र हो जाता है।

मत्स्य पुराणे

मत्स्यपुराण में

सर्वेषां राममन्त्राणां श्रेष्ठं श्रीतारकं परम्।

षडक्षरमनुंसाक्षात्तथा युग्माक्षरं वरम्।।171।।

समस्त श्रीराममन्त्रों में तारक मन्त्र (बीजयुक्त षडक्षरमन्त्र) श्रेष्ठ है एवं श्रीरामनाम श्रेष्ठ है दोनों में भेद नहीं है।

येन ध्यातं श्रुतं गीतं रामनामेष्टदं महत्।

कृतं तेनैव सत्कृत्यं वेदोदितमखण्डितम्।।172।।

समस्त अभिलषित वस्तुओं को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम का जिसने ध्यान श्रवण और गायन किया, उसने वेद में कहे गये सत्कृत्यों का अखण्ड अनुष्ठान कर लिया।

ध्येयं ज्ञेयं परं पेयं रामनामाक्षरं मुने।

सर्वसिद्धान्तसारेदं सौख्यं सौभाग्य कारणम्।।173।।

हे मुनिराज! सभी सिद्धान्तों का सार, सुख और सौभाग्य का परम कारण अविनाशी श्रीरामनाम ही चिन्तन के योग्य, जानने योग्य एवं अत्यन्त पेय हैं। अतः निरन्तर श्रीरामनाम का ही पान करना चाहिए।

नामैव परमं ज्ञानं ध्यानं योगं तथा रतिम्।

विज्ञानं परमं गुह्यं रामनामैव केवलम्।।174।।

श्रीरामनाम ही सर्वोत्कृष्ट ज्ञान, ध्यान, योग तथा प्रेम है केवल श्रीरामनाम ही विज्ञान एवं अत्यन्त गुह्य है।

नाम स्मरण निष्ठानां नामस्मृत्या महाघवान्।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाञ्छितार्थं च विन्दति।।175।।

श्रीरामनाम के स्मरण कीर्तन में जिनकी अपार निष्ठा है ऐसे नामनिष्ठ भक्तों के नाम का स्मरण करने से महापापी भी समस्त पापों से मुक्त होकर मनचाही वस्तु को प्राप्त कर लेता है।

वाराहपुराणे श्रीशिववाक्यं शिवाम्प्रति

वाराहपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति

दैवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छो जराजर्जरो-

हारामेण हतोऽस्मि भूमिपतितो जल्पंस्तनुं त्यक्तवान्।

तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावादहो-

किं चित्रं यदि रामनाम रसिकास्ते यान्ति रामास्पदम्।।176।।

दैवयोग से एक म्लेच्छ (यवन) जो कि बुढ़ापे से जर्जर था, उसे एक शूकर के बच्चे ने मारा, हाराम (हराम – शूकर) ने मुझे मारा एवं हा! राम ने मुझे मारा' ऐसा कहता हुआ वह भूमि पर गिर पड़ा और शरीर छोड़ दिया। वह गौ के खुर के समान भवसागर को तर गया। अहो ! श्रीरामनाम का प्रभाव आश्चर्यमय है। यदि श्रीरामनाम के प्रेमी श्रीरामजी के धाम को जाते हैं तो इसमें कौन आश्चर्य है।

ध्येयं नित्यमनन्य प्रेमरसिकैः पेयं तथा सादरं-

ज्ञेयं ज्ञानरतात्मभिश्च सुजनैः सम्यक् क्रियाशान्तये।

श्रीमद्रामपरेश नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदं-

सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकन्दं परम्।।177।।

अनन्यनामानुरागियों के द्वारा नित्य ध्यान के योग्य, तथा परम प्रेमी रसिकों के द्वारा सादर पान करने योग्य, क्रिया की सम्यक् शान्ति के लिए ज्ञान, सुजनों के द्वारा जानने योग्य श्रीरामनाम ही हैं। श्रीरामनाम सुन्दर सबके स्वामी, कल्याण प्रदान करने वाला, सभी के अकारण हितैषी, सुर और असुर सभी से संस्तुत एवं परम आनन्दकन्द हैं ऐसा विचार करके सदा सर्वदा श्रीरामनाम का ज़प करना चाहिए।

निरपेक्षं सदा स्वच्छं सर्वसम्पत्ति साधकम्।

भजध्वं रामनामेदं महामाङ्गलिकं परम्।।178।।

श्रीरामनाम महाराज पत्र, पुष्प, फल, शुद्धता आदि अपेक्षाओं से सर्वथा रहित अर्थात् निरपेक्ष हैं। सदा सर्वदा स्वच्छ निर्मल हैं, सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रदान करने वाले हैं और अतिशय महामंगलरूप हैं अतः आप सभी को इस श्रीरामनाम का भजन करना चाहिए।

करुणावारिधिं नाम ह्यपराधनिवारकम्।

तस्मिन्प्रीतिर्न येषां वै ते महापापिनो नराः।।179।।

श्रीरामनाम महाकरुणा के सागर एवं समस्त अपराधों को दूर करने वाले हैं ऐसे श्रीरामनाम में जिन लोगों की सच्ची प्रीति नहीं है। वे लोग निश्चय ही महापापी हैं।

---

1. आंधरो अधम जड जाजरो जरा जवन, सूकर के शावक ढका ढकेल्यो मग में।
गिरो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो, हाय हाय करत परीगो काल फँग में।।
तुलसी विसोक है तिलोकपति लोक गयो, नाम के प्रताप बात विदित है जग में।
सोई रामनाम को सनेह सो जपत जन, ताकी महिमा क्यों कही है जाति अंग में ।। (कवितावली उ.76)

लिङ्गपुराणे सूतवाक्यं शौनकं प्रति

लिङ्गपुराण में सूतजी का वाक्य शौनकजी के प्रति

रामनामानिशं भक्त्या प्रजप्तव्यं प्रयत्नतः।
नातः परतरोपायो दृश्यते श्रूयते मुने ।।180।।

हे मुनिराज! श्रीरामनाम का भक्तिपूर्वक एवं संयमपूर्वक दिनरात जप करना चाहिए। आत्मकल्याण के लिए श्रीरामनाम से बढ़कर कोई दूसरा उपाय न दिखायी देता है और न सुना जाता है।

तत्रैव श्रीमहादेव वाक्यं पार्वतीं प्रति

लिङ्गपुराण में ही श्रीशंकरजी का वाक्य श्रीपार्वतीजी के प्रति

वृथाऽऽलापंवदन्व्रीडा येषां नायाति सत्वरम्।
हित्वा श्रीरामनामेदं ते नराः पशवः स्मृताः।।181।।

श्रीरामनाम को छोड़कर व्यर्थ वार्तालाप करने में जिनको शीघ्र ही लज्जा नहीं आती है वे मनुष्य पशु कहे जाते हैं।

न जाने किं फलं ब्रह्मन् जायते नामकीर्त्तनात्।
जानाति तच्छिवः साक्षाद्रामानुग्रहतो मुने।।182।।

हे ब्रह्मन्! श्रीरामनाम के संकीर्तन से कौनसा फल प्राप्त होता है हे मुनि श्रेष्ठ ! उसको श्रीरामजी की कृपा से साक्षात् शिवजी ही जानते हैं।

अहो नामामृतालापी जनः सर्वार्थसाधकः।
धन्याद्धन्यतमोनित्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।183॥

आश्चर्य है श्रीरामनामरूपी अमृत का जप करने वाले (पान करने वाले) साधक सभी प्रकार के पुरुषार्थों को सिद्ध कर लेते हैं वे सभी धन्यों में नित्य अतिशय धन्य हैं यह बात मैं सत्य–सत्य कह रहा हूँ।

रामनाम्ना जगत्सर्वं भासितं सर्वदा द्विज।
प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मुने ।।184।।

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! यह सम्पूर्ण जगत् श्रीरामनाम से ही सदा सर्वदा प्रकाशित है। हे मुने! उस श्रीरामनाम का सर्वोत्कृष्ट प्रभाव वाणी से सर्वथा परे है।

अलं योगादिसंक्लेशैर्ज्ञानविज्ञानसाधनैः।
वर्त्तमाने दयासिन्धौ रामनामेश्वरे मुने।।185।।

मुने! दयासिन्धु सर्वेश्वर श्रीरामनाम के विद्यमान होने पर योगादि में क्लेश उठाने से क्या लाभ? एवं ज्ञानविज्ञान के साधक विभिन्न साधनों से क्या प्रयोजन? अर्थात् योगादि एवं ज्ञान विज्ञान के विभिन्न साधनों का त्याग करके एकमात्र परमदयालु श्रीरामनाम का आश्रय लो। उसी से सभी प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि हो जायेगी।

रामात्परतरं नास्ति सर्वेश्वरमनामयम्।

तस्मात्तन्नाम संलापे यत्नं कुरु मम प्रिये ।।186।।

हे मेरी प्राणवल्लभे पार्वति ! श्रीरामनाम से परे सर्वेश्वर, निरामय, अशोक कोई दूसरा तत्व नहीं है इसलिए श्रीरामनाम के संकीर्तन करने का प्रयास करो।

चाण्डालादिकजन्तूनामधिकारोऽस्ति वल्लभे।

श्रीरामनाम मन्त्रेऽस्मिन् सत्यं सत्यं सदा शिवे।।187।।

हे प्राणवल्लभे पार्वति! इस श्रीरामनाम महामन्त्र के जप में ब्रह्मा से लेकर चाण्डाल पर्यन्त सभी जीवों का अधिकार है यह बात मैं सदा सत्य—सत्य कहता हूँ।

यत्प्रभावलवकांशतः शिवे शिवपदं सुभगं यदवाप्तम्।

तद्रतिं विरहिता किल जीवा यान्ति कष्टमतुलं यम सादनम्।।188।।

हे पार्वति! मैंने जिस श्रीरामनाम के लवांश मात्र प्रभाव से सुन्दर अमर शिवपद प्राप्त किया है। ऐसे श्रीरामनाम में जिनकी प्रीति नहीं है वे लोग अतुलकष्टप्रद यमसदन नरकादि में अवश्य जायेंगे।

सकारादगुणाच्चापि रामनाम परं प्रिये।

गोप्याद्गोप्यतमं वस्तु कृपया संप्रकाशितम्।।189।।

हे प्रिये पार्वति! साकार निराकार सगुण निर्गुण दोनों से सर्वोत्कृष्ट वस्तु श्रीरामनाम है यह गोपनीय से भी अत्यन्त गोपनीय है यह मैंने कृपा करके तुम्हारे समक्ष प्रकाशित किया है।

स्मर्तव्यं तत्सदा रामनाम निर्वाणदायकम्।

क्षणार्द्धमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः।।190।।

इसलिए मोक्षप्रदायक श्रीरामनाम का सदा सर्वदा स्मरण करना चाहिए आधे क्षण के लिए भी श्रीरामनाम का विस्मरण करने वाला मनुष्य दुःख सागर में डूब जाता है अतः श्रीरामनाम का सतत स्मरण करना चाहिए।

विष्णुपुराणेव्यासवाक्यं

विष्णुपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य

विष्णोरेकैक नामापि सर्ववेदाधिकं मतम्।

तादृग्नाम सहस्रेण रामनाम सतां मतम्।।191।।

भगवान् विष्णु का प्रत्येक नाम समस्त वेदों से श्रेष्ठ है और भगवान् विष्णु के सहस्र नामों से भी अत्यधिक पुण्य एवं फलप्रद श्रीरामनाम है यह सन्तों को अभिमत है।

श्रीरामेति परंनाम रामस्यैव सनातनम्।

सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्य च।।192।।

भगवान् श्रीराम का सनातन एवं सर्वोत्कृष्ट नाम श्रीरामनाम है भगवान विष्णु और नारायण के सहस्र नामों के तुल्य श्रीरामनाम है।[1]

रामनाम्नः परं किञ्चित्तत्त्वं वेदे स्मृतिष्वपि।

संहितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विद्यते।।193।।

श्रीरामनाम से बढ़कर कोई तत्व वेदों में, स्मृतियों में, संहिताओं में, पुराणों में और तन्त्रों में नहीं है।

नाम्नो रामस्य ये तत्त्वं परं प्राहुः कुबुद्धयः।

राक्षसांस्तान्विजानीयाद्व्रजेयुर्नरकं ध्रुवम्।।194।।

जो लोग श्रीरामनाम से बढ़कर किसी दूसरे को तत्त्व कहते हैं वे लोग कुबुद्धि हैं उन लोगों को राक्षस समझना चाहिए वे लोग निश्चित ही नरक में जायेंगे।

सा जिह्वा रघुनाथस्य नामकीर्त्तनमादरात्।

करोति विपरीता या फणिनो रसना समा।।195।।

श्रीरामजी के श्रीरामनाम का जो आदरपूर्वक कीर्तन करती है वही जिह्वा है। इसके विपरीत जो श्रीरामनाम का कीर्तन न करके दुनियादारी के बातचीत में लगी रहती है वे सर्प की जिह्वा के समान हैं।

---

1. विशेष:— रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे की टिप्पणी को देखें।

रामेति नाम यच्छ्रोत्रे विश्रम्भाज्जपितो यदि।
करोति पापसंदाहं तूलवह्निकणो यथा ।।196।।

जिस किसी के भी कान में 'श्रीराम' इस नाम का विश्वासपूर्वक जप किया गया उसके समस्त पापों का उसी प्रकार दाह हो जाता है जिस प्रकार अग्नि के कण से रुई समूह का दाह हो जाता है।

तावद् गर्जन्ति पापानि ब्रह्महत्याशतानि च।
यावद्रामं रसनया न गृह्णातीति दुर्मतिः ।।197।।

तभी तक सभी पाप गरजते हैं और तभी तक सैकड़ों ब्रह्म हत्याएँ विद्यमान रहती हैं जब तक दुष्टबुद्धि मनुष्य अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का ग्रहण नहीं करता है।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीतेऽष्टादशपुराणप्रमाणनिरूपणनाम प्रथमः प्रमोदः ।।1।।



द्वितीयः प्रमोदः

उपपुराण वचनानि

वायुपुराणे श्रीशिववाक्यं नारदं प्रति

वायुपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य नारदजी के प्रति

महतस्तपसोमूलं प्रसवः पुण्य सन्ततेः।
जीवितस्य फलस्वादु सदा श्रीरामकीर्त्तनम्।।198।।

बड़ी से बड़ी तपस्या का मूल, समस्त पुण्यरूपी सन्तान का उत्पत्ति स्थान एवं मानव जीवनरूपी वृक्ष का सुस्वादु फल श्रीरामनाम का संकीर्तन है तात्पर्य है कि श्रीरामनामसंकीर्तन के बिना शेष साधन श्रममात्र है।

श्रीरामनाम सामर्थ्यं वैभवं शौर्यविक्रमम्।
न वक्तुं कोपि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद।।199।।

हे नारदजी! श्रीरामनाम के सामर्थ्य, वैभव, शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है यह सत्य है सत्य है।

सततं राम रामेति यस्तु कीर्त्तयते सदा।
गुरुतल्पशतेनापि सद्य एव प्रमुच्यते ।।200।।

जो निरन्तर राम राम ऐसा संकीर्तन करता रहता है वह मनुष्य सैंकड़ों बार गुरु पत्नी के साथ गमन जन्य पापों से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है।

यातना यमलोकेषु तावदेव भवेन्नृणाम्।
यावन्न भजतेप्रीत्या रामनामपरात्परम्।।201।।

मनुष्यों को तभी तक यमलोक में यातना सहन करनी पड़ती है। जब तक वह प्रीतिपूर्वक परात्पर श्रीरामनाम का जप नहीं करता है।

सर्वेषामवताराणां कारणं परमाद्भुतम्।
श्रीमद्रामेतिनामैव कथ्यते सद्भिरन्वहम्।।202।।

सभी अवतारों का परम अद्भुत कारण श्रीरामनाम ही है ऐसा सभी सन्त निरन्तर कहते हैं।

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा।
तत्सर्वं रामनाम्नैव सत्यं सत्यं वचो मम ।।203।।

जहाँ कहीं भी पापियों का उद्धार देखा या सुना जाता है वह सब श्रीरामनाम की कृपा से ही हुआ है यह मेरा वचन सत्य है सत्य है।

रामनामात्मिकावाणी श्रोतव्या सर्वदा बुधैः।
त्यक्त्वा नानार्थवच्छब्दान्वादविभ्रांन्तिमण्डितान्।।204।।

अनेक प्रकार के अर्थ वाले शब्दों, वादविवादों, भ्रमयुक्त वाक्यों को छोड़ कर विद्वानों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का श्रवण करना चाहिए।

नृसिंहपुराणे

'नरसिंहपुराण में'

रामरामेति रामेति सततं संस्मरन्ति ये।
त एव वल्लभास्माकमीश्वराणां च नारद।।205।।

हे नारद! राम, राम, राम इस प्रकार जो निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं। वे ही हमारे प्रिय हैं। और सभी ईश्वरों के भी प्रिय हैं।

सर्वासां चित्तवृत्तीनां निरोधो जायते ध्रुवम्।

रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानतः ।।206।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी चित्तवृत्तियों का निश्चित ही निरोध हो जाता है अत: सावधान होकर श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतोपमाः।

तेषामपि भवेन्मुक्ती रामनामानुकीर्त्तनात् ।।207।।

जो लोग नारकी हैं, नीच हैं और जीते हुए भी मृतक तुल्य हैं उन लोगों की भी श्रीरामनाम के संकीर्तन से मुक्ति हो जाती है।

तत्रैव श्रीप्रह्लादवाक्यं पितरं प्रति

वहीं श्रीप्रह्लादजी का वाक्य अपने पिताजी के प्रति

रामनामजपतां कुतो भयं सर्वतापशमनैकभेषजम्।

पश्यतात मम गात्र संगतः पावकोऽपिसलिलायतेऽधुना ।।208।।

हे तात! श्रीरामनाम के जप करने वालों को कहीं भी किसी से भय नहीं होता है समस्त तापों एवं रोगों के नाश करने के लिए एकमात्र औषधि श्रीरामनाम है। हे तात!! देखिए मेरे शरीर के सम्पर्क से इस समय अग्नि भी जल जैसे शीतल हो गया है।

रामनाम प्रभावेण मुच्यते सर्वबन्धनात्।

तस्मात्त्वमपि दैत्येश तस्यैव शरणं ब्रज ।।209।।

हे दैत्येश ! श्रीरामनाम के प्रभाव से जीव समस्त बन्धनों से सहज में मुक्त हो जाता है इसलिए हे राक्षसराज ! आप भी श्रीरामनाम की शरण में जाएँ।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं याज्ञवल्क्यं प्रति

वहीं श्रीनारदजी का वाक्य याज्ञवल्क्य के प्रति

श्रीरामेति जपन्जन्तुः प्रत्यहं नियतेन्द्रियः।

सर्वपाप विनिर्मुक्तः सुरवद्भासते नरः।।210।।

अपनी इन्द्रियों को वश में करके प्रतिदिन 'श्रीराम' इस प्रकार जप करने वाला साधक शीघ्र ही समस्त पापों से मुक्त होकर देवताओं की तरह प्रकाशित होने लगता है।

सौभाग्यं सर्वदा स्वच्छं सरसानन्दमद्भुतम्।
अवश्यं लभते भक्त्या रामनामानुकीर्तनात्।।211।।

भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम के संकीर्तन करने से सर्वदा स्वच्छ सौभाग्य एवं अद्भुत सरस आनन्द अवश्य प्राप्त होता है।

रामनामरता नारी सुतं सौभाग्यमीप्सितम्।
भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं कदाचन।।212।।

श्रीरामनाम के संकीर्तन में निरत रहने वाली स्त्री, पुत्र, अभीष्ट सौभाग्य और पति की प्रियता को प्राप्त करती है और कभी भी विधवा नहीं होती है।

पतिव्रतानां सर्वासां रामनामानुकीर्त्तनम्।
ऐहिकामुष्मिकं सौख्यदायकं सर्वशो मुने।। 213।।

हे मुनिराज! सभी पतिव्रताओं के लिए इस लोक से सम्बन्धित एवं परलोक से सम्बन्धित सभी प्रकार के सुखों का सम्पादक श्रीरामनाम संकीर्तन है।

सीतयासहितं रामनाम येषां परं प्रियम्।
त एवकृतकृत्याश्च पूज्या सर्वसुरेश्वरैः।।214।।

श्रीसीतानाम के साथ श्रीरामनाम अर्थात् 'श्रीसीताराम' यह दिव्यनाम जिन लोगों को परम प्रिय है वे लोग ही कृतकृत्य हैं और समस्त देवेश्वरों से पूज्य हैं।

रामनामार्थमध्ये तु साक्षात् सीतापदं प्रियम्।
विज्ञानागोचरं नित्यं मुने श्रीरामवैभवम्।। 215।।

हे मुने! श्रीरामनाम के अर्थ के मध्य में ही साक्षात् परमप्रिय सीतापद विराजमान है। और विशिष्ट ज्ञान के द्वारा जाना जाने वाला श्रीरामजी का प्रभाव भी श्रीरामनाम में ही संनिहित है।

आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्ददायकम्।
पश्चाच्छ्रीरामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते।।216।।

पुण्य एवं परमानन्द प्रदायक श्रीसीतापद का प्रथम उच्चारण होना चाहिए तत्पश्चात् श्रीरामनाम का उच्चारण सम्यक् प्रशस्त है अर्थात् श्रीसीताराम श्रीसीताराम संकीर्तन ही सर्वथा प्रशंसनीय है।

युग्मं वर्णं जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्त्तयेत्।
सावकाशे सदा भक्त्या मध्ये मध्ये समादरात्।।217।।

यदि श्रीरामनाम का राम राम जप करना हो तब भी पहले श्रीसीताराम सीताराम कह ले बाद में राम राम जप करे, समय मिलने पर भक्तिपूर्वक सदा सीताराम सीताराम जप करे। श्रीरामनाम के जप के समय बीच–बीच में आदरपूर्वक सीताराम सीताराम जप करें।

एवं रीत्या स्मरन्नाम रामभद्रस्य संततम्।
षण्मासात्सिद्धिमाप्नोति कलौ विश्वासपूर्वकम्।।218।।

इस रीति से जो साधक विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप निरन्तर करता है। उसको इस कलियुग में छः महीने में परम सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है।

सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्वान्तमाशु वै।
तथैव रामसंस्मरणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवाः।।219।।

सूर्यनारायण के उदित होने पर जैसे शीघ्र ही अन्धकार नष्ट हो जाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के स्मरण करने से सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

दुराचारो महादुष्टो महाघौघ निकेतनः।
रामनाम स्मरन् भक्त्या विशुद्धो भवति ध्रुवम्।।220।।

दुराचारी महादुष्ट एवं महापाप निवास स्वरूप मनुष्य भी भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का स्मरण करने से निश्चित ही शुद्ध हो जाता है।

रामनाम प्रभावेण यद्यच्चिन्तयते जनः।
तत्तदाप्नोति वै तूर्णमभीष्टमति दुर्लभम्।।

श्रीरामनाम का जापक साधक जो जो चिन्तन करता है अर्थात् जिस–जिस वस्तु को प्राप्त करना चाहता है उस उस वस्तु को निश्चित ही

प्राप्त कर लेता है एवं अति दुर्लभ अभीष्ट को भी शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है।

सर्वाभीष्टप्रदे नाम्नि प्रीतिर्नैवाभिजायते।
मुने तस्यापराधानां गणना नैव विद्यते।।222।।

हे मुने! सभी अभीष्ट वस्तुओं को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है उसके अपराधों की गिनती नहीं है।

रामनाम्नि रतिर्नास्ति कुरुते धर्मसंचयम्।
तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं पथि बीजाङ्कुरा इव।।223।।

जिसकी श्रीरामनाम में प्रीति नहीं है उसके द्वारा किया गया धर्म का संग्रह उसी प्रकार निष्फल है जिस प्रकार मार्ग में बोये गये बीजों के अंकुर।

बहुजन्मोग्रपुण्यानां फलं नामानुकीर्त्तनम्।
सर्वेषामृषिमुख्यानां संमतं संशयं विना।।224।।

सभी श्रेष्ठ ऋषि मुनियों का संशय रहित मत है कि अनेक जन्मों के श्रेष्ठ पुण्यों का फल ही श्रीरामनाम संकीर्तन है अर्थात् अनेक जन्मों के उत्कट पुण्यों के फलस्वरूप ही श्रीरामनाम संकीर्तन में रूचि होती है।

वृहद्विष्णु पुराणे श्रीपराशर वाक्यं शिष्यं प्रति

वृहद्विष्णुपुराण में श्रीपराशर जी का वाक्य मैत्रेय जी के प्रति

क्व नाकपृष्ठगमनं पुनरावृत्ति लक्षणम्।
क्व जपो रामनाम्नस्तु मुक्तेर्बीजमनुत्तमम्।।225।।

कहाँ स्वर्गादि लोकों का गमन?और कहाँ श्रीरामनाम का संकीर्तन ? स्वर्गादि लोकों में जाने के बाद पुनर्जन्म का भय बना रहता है 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके विशन्ति' पुण्यों के नाश हो जाने के पश्चात् पुनः मृत्युलोक में आना पड़ता है और श्रीरामनाम का संकीर्तन मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ बीज है अर्थात् श्रीरामनाम के संकीर्तन से मुक्ति की प्राप्ति होती है, जिसमें पुनरागमन का भय नहीं होता है।

सर्वरोगोपशमनं सर्वोपद्रवनाशनम्।
सर्वारिष्टहरं क्षिप्रं रामनामानुकीर्त्तनम्।।226।।

समस्त रोगों का नाश करने वाला, समस्त उपद्रवों का नाशक और शीघ्र ही सभी अरिष्टों का हरण करने वाला श्रीरामनाम संकीर्तन है अर्थात् श्रीरामनाम के संकीर्तन से शीघ्र ही सभी रोग, सभी उपद्रव एवं सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।

नास्ति श्रीरामनाम्नस्तु परत्वं दृश्यते क्वचित्।
सदृशं त्रिषु लोकेषु सर्वतन्त्रेषु कुत्रचित्।।227।।

श्रीरामनाम से श्रेष्ठ तत्त्व कहीं भी दिखायी नहीं देता है। सभी लोकों में एवं सभी तन्त्रों में कहीं भी श्रीराम नाम के सदृश कोई तत्व नहीं दिखायी देता है।

रामरामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।
स सर्व सिद्धिमाप्नोति रामनामानुभावतः।।228।।

जो साधक नित्य क्षण भर भी मधुर स्वर में राम राम ऐसा जप करता है वह श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

यदा श्री रामसन्नाम संस्मरेद् भावनायुतः।
परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते तदा।।229।।

जब कोई साधक सद्भावना से युक्त होकर श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण या संकीर्तन करता है उस समय वह परमानन्दरूपी अमृत सिन्धु में निमग्न हो जाता है।

प्रायो विवेकिनः सौम्य वेदान्तार्थैक नैष्ठिकाः।
श्रीमद् रामेशभद्रस्य नाम संराधने रताः।।230।।

हे सौम्य ! अधिकांश वेदान्तार्थ चिन्तन परायण विवेकीजन श्रीरामनाम की आराधना में ही लगे रहते हैं 'धर्ममार्ग चरित्रेण ज्ञानमार्ग च नामत:' सिद्धान्त के अनुसार समस्त वेदान्तार्थों का प्रकाश श्रीरामनाम के जप से ही होता है अत: विवेकी वेदान्ती लोग भी श्रीरामनाम के जप में लगे रहते हैं।

तावदेव मदस्तेषां महापातक दन्तिनाम्।
यावन्न श्रूयते रामनाम पञ्चाननध्वनिः।।231।।

तभी तक महापापरूपी हाथियों का मद दिखायी देता है जब तक

श्रीरामनाम संकीर्तन रूपी सिंह की ध्वनि सुनायी नहीं देती है अर्थात् श्रीरामनाम के संकीर्तन होते ही सभी महापाप दूर भाग जाते हैं।

अविकारी विकारी वा सर्वदोषैकभाजनः।
परमेशपदं याति सीतारामानुकीर्त्तनात्।।232।।

चाहे निर्विकार हो या सविकार हो चाहे समस्त दोषों का खजाना हो, चाहे कैसा भी हो, यदि वह सीताराम सीताराम संकीर्तन करता है तो वह कीर्तन के प्रभाव से भगवान के धाम को अवश्य जायेगा।

हे जिह्वे रससारज्ञे सततं मधुरप्रिये।
श्रीरामनामपीयूषं पिब प्रीत्या निरन्तरम्।।233।।

हे रसों के सार को जानने वाली निरन्तर मधुर प्रिये जिह्वे! तू निरन्तर प्रीतिपूर्वक श्रीरामनामरूपी अमृत का पान कर।

नातः परतरोपायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम्।।234।।

श्रीरामनाम से बढ़कर दूसरा कोई उपाय सन्तों की सम्मति में और वेदों में नहीं दिखायी देता है। सभी को मुक्ति प्रदान करने वाला एवं सारतत्वों का भी सार शुद्ध सर्वोत्कृष्ट श्रीरामनाम है।

स्वाभाविकी तथा ज्ञानक्रियाद्याः शक्तयः शुभाः।
रामनामांशतो ज्ञाता सर्वलोकेषु पूजिताः।।235।।

सभी लोकों में पूजित स्वाभाविकी, ज्ञान एवं क्रियादि जितनी शुभ शक्तियाँ हैं वे सब श्रीरामनाम के अंश से उत्पन्न हुई हैं।

लघु भागवते

लघु भागवत में

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नामसंकीर्त्य ह्याभिरामाख्यमद्भुतम्।।236।।

अद्भुत लोकाभिराम श्रीरामनाम का संकीर्तन करके साधक ज्ञान, वैराग्य एवं भगवान् में परम प्रीति प्राप्त कर सकता है।

बृहन्नारदीये

वृहन्नारदीयपुराण में

ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधि विवर्जिताः।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परंपदम्।।237।।

श्रीनारदजी कहते हैं कि जो श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे कृतार्थ हैं। सदा शुद्ध हैं समस्त उपाधियों से शून्य हैं वे लोग श्रीरामनाम के प्रभाव से परम पद को प्राप्त करेंगे

रामनाम परा ये च नामकीर्त्तनतत्पराः।
नाम्नः पूजापरा ये वै ते कृतार्थाः न संशयः।।238।।

जो लोग तन, मन, वचन, गति, मति एवं रति से श्रीरामनाम परायण हैं और श्रीरामनाम के संकीर्तन में लगे रहते हैं और जो लोग श्रीरामनाम की पूजा में लगे हुए हैं वे लोग निश्चित ही कृतार्थ हैं इसमें संशय नहीं है।

तस्मात्समस्तलोकानां हितमेव मयोच्यते।
रामनाम परान् मर्त्यान्न कलिर्बाधते क्वचित्॥239।।

इसलिए मैं सभी लोगों के हित की बात कहता हूँ कि श्रीरामनाम के जप, कीर्तन एवं पूजन परायण लोगों को कलियुग कहीं भी दुखी नहीं करता है।

श्रीमद्रामेशनाम्नस्तु सततं शरणं व्रजेत्।
अस्माकं सत्समाजेषूपायान्तरमनर्थकम्।।240।।

हम लोगों के सत्समाजों में श्रीरामनाम के अतिरिक्त दूसरे सभी उपाय अनर्थक माने गये हैं अतः साधक को सदा सर्वदा श्रीरामनाम की शरण में जाना चाहिए और श्रीरामनाम को ही अपना रक्षक समझना चाहिए।

सकृदुच्चारयेदेतद्रामनाम कलौयुगे।
ते कृतार्था महात्मानस्तेभ्यो नित्यं नमो नमः।।241।।

इस कलियुग में जो लोग एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे लोग महात्मा एवं कृतार्थ हैं उनको नित्य नमस्कार है नमस्कार है।

न्यूनातिरिक्ततासिद्धिः कलौ वेदोक्तकर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्ण फलदायकम्॥242।।

कलियुग में वैदिक कर्मों में न्यूनता एवं अतिरिक्तता की सिद्धि

श्रीरामनाम के संकीर्तन से होती है श्रीरामनाम संकीर्तन के प्रभाव से वह कर्म सम्पूर्ण फल प्रदान करता है।

सीतारामात्मकंनाम सुधाधाम निरन्तरम्।
ये जपन्ति सदा भक्त्या तेषां किंचिन्न दुर्लभम्।।243।।

साक्षात् अमृतस्वरूप श्रीसीतारामनाम को जो सदा भक्तिपूर्वक जप करते हैं। उनके लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है सब सुलभ है।

नमः श्रीरामचन्द्राय परमानन्दरूपिणे।
निवसतियस्य जिह्वायां तस्याघं नश्यति क्षणात्।।244।।

परमानन्दस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है, ऐसा वाक्य जिसकी जिह्वा पर निवास करता है उसके पाप क्षणभर में नष्ट हो जाते हैं।

स्वपन्भुंजन्ब्रजँस्तिष्ठन्नुत्तिष्ठंश्चवदंस्तथा।
येषां संकीर्त्तनंनाम तेभ्यो नित्यं नमोनमः।।245।।

जो सोते हुए, भोजन करते हुए, रास्ते में चलते हुए, ठहरते हुए, उठते हुए और परस्पर बातचीत करते हुए भगवान् के नाम का उच्चारण करते हैं। उन महात्माओं को नित्य नमस्कार है नमस्कार है।

नामसंकीर्त्तनं नित्यं क्षुत्तृट्स्खलनादिषु।
करोति प्रेम संहीनस्सोपि श्रीरामकिंकरः।।246।।

जो भूख एवं प्यास के कारण, गिरते समय या किसी भी परिस्थिति में बिना भाव के भी श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह भी श्रीरामजी का सेवक है।

अहोचित्रमहोचित्रमहोचित्रमिदंपरम्।
रामनाम्नि स्थिते लोके संसारं वर्त्तते पुनः।।247।।

आश्चर्य है महान् आश्चर्य यह है कि इस लोक में श्रीरामनाम के विद्यमान होने पर भी लोगों का पुनरागमन हो रहा है तात्पर्य यह है कि मुक्ति का सर्वसुलभ साधन श्रीरामनाम विद्यमान हैं फिर भी लोग मुक्त नहीं हो पा रहे हैं यही महान् आश्चर्य है।[1]

---

1. सुलभोभगवन्नाम जिह्वा च वशवर्तिनी। तथापि नरकं यान्ति किमाश्चर्यमतः परम।। भगवान का नाम सहज सरल एवं सर्वसुलभ है एवं जिह्वा अपने वश में है फिर भी लोग नाम न जपने के कारण नरक में जा रहे हैं इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या होगा।

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वासघातकः।
दुहितासंगमी दुष्टो भ्रातृपत्नीरतस्तथा।।248।।
विप्रदाररतो यस्तु विप्रवित्तापहारकः।
परापवादकारी च बालघाती च वृद्धहा।।249।।
स्त्रीजनानां संघाती हिंसकः सर्वदेहिनाम्।
मातृगामी गुरुद्रोही रामनाम्ना विशुद्ध्यति।।250।।

मित्रों से द्रोह करने वाला, किये गये उपकार को न मानने वाला, चोर, विश्वासघात करने वाला, पुत्री के साथ समागम करने वाला, दुष्ट, अपने भाई की पत्नी के साथ समागम करने वाला, विप्रपत्नियों के साथ समागम करने वाला, विप्रों के धन को चुराने वाला, दूसरे की निन्दा करने वाला, बाल हत्यारा, वृद्धों की हत्या करने वाला, स्त्रियों की हत्या करने वाला, सभी जीवों का हिंसक, माता के साथ समागम करने वाला और गुरुद्रोह करने वाला पापी भी श्रीरामनाम के जप से शुद्ध हो जाता है तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त पापों का प्रायश्चित्त यदि किया जाय तो कितने जन्म बीत जायेंगे परन्तु श्रीरामनाम के संकीर्तन मात्र से ये सारे पाप शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। अत: श्रीरामनाम का संकीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

महाचिन्ताऽऽतुरो यस्तु महाधिव्याधिव्याकुलः।
ज्वरापस्मारकुष्ठादिमहारोगैः प्रपीडितः।।251।।
महोत्पातमहारिष्टमहाक्रूरग्रहार्दितः।
महाशोकाग्निसंतप्तस्सर्वलोकैस्तिरस्कृतः।1252।।
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्यदुःखितः।
महादरिद्री संतापी सुखीस्याद्रामकीर्तनात्।।253।।

जो महाचिन्ता के कारण आतुर हैं, जो महान् मानसिक व्यथा एवं शारीरिक व्यथा से विशेष आकुल हैं, जो ज्वर, मिरगी और कुष्टादि महारोगों से विशेष पीडित है। जो महाउत्पात, महारोग और महान् क्रूर ग्रहों से पीडित हैं। जो महाशोकरूपी अग्नि में सन्तप्त हैं, सभी लोगों से जो तिरस्कृत हैं। जो अतिशय निन्दनीय हैं जिनका संसार में कोई अवलम्ब नहीं है। विशेष दुर्भाग्ययुक्त होने से जो अतिशय दु:खी है। जो महान् दरिद्र है एवं सभी प्रकार के क्लेशों से जो युक्त है वे भी श्रीरामनाम के संकीर्तन

करने से शीघ्र ही सभी कष्टों से मुक्त होकर सुखी हो जाते हैं।

कामक्रोधातुरः पापी लोभमोहमदोद्धतः।
रागद्वेषादिभिर्दग्धो महादुर्वासनाऽऽवृतः।।254।।
षड्भिरूर्मिभिराक्रान्तः षड्विकारैर्विखिद्यतः।
मनोराजकषायाद्यैर्व्याकुलः समुपद्रवैः।।255।।
अन्यैश्चविविधोत्पातैर्दारुणैरतिदुःखितः।
रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात्।।256।।

जो लोग क्रोध से व्याकुल हैं, पापी हैं, लोभ एवं मोहयुक्त हैं महा अहंकारी हैं रागद्वेषरूपी अग्नि से दग्ध हैं महान् दुर्वासना के कारण जिनका स्वरूप ढका हुआ है। क्षुधा, तृषा (प्यास), शोक, मोह, जरा एवं मरण रूप छ कर्मवासना से विशेष आक्रान्त हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सरादि छ विकारों के कारण जो विशेष दुःखी है। मानसिक हवाई कल्पनारूपी कषायों एवं अनेक उपद्रवों से जो व्याकुल हैं। एवं दूसरे अनेक दारुण उत्पातों के कारण जो अतिशय दुःखित हैं वे लोग भी यदि भाव सहित श्रीरामनाम का संकीर्तन करें तो श्रीरामनाम के प्रभाव से परम आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं।

किंतीर्थैः किंव्रतैर्होमैः किंतपोभिः किमध्वरैः।
दानैर्ध्यानैश्च किंज्ञानैर्विज्ञानैः किंसमाधिभिः।।257।।
किंयोगैः किंविरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः।
यन्त्रैर्मन्त्रैस्तथातन्त्रैः किमन्यैरुग्रकर्मभिः।।258।।
स्मरणात्कीर्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।259।।

जब श्रीरामनाम के स्मरण, कीर्तन, श्रवण, लेखन, दर्शन एवं धारण करने से ही सभी अभीष्टों की प्राप्ति हो सकती है तो फिर अनेक तीर्थों, व्रतों, हवनानुष्ठानों, तपस्याओं, यज्ञों, दानों, ध्यानों, ज्ञान विज्ञानों, समाधियों, योगों, विरागों, दूसरे जपों, पूजनों, यन्त्रों, मन्त्रों, तन्त्रों एवं दूसरे उग्र कर्मों के अनुष्ठान से क्या प्रयोजन? अर्थात् एक श्रीरामनाम के आश्रय

लेने से ही यदि सभी मनोरथ सिद्ध हो जायँ तो व्यर्थ दूसरे साधनों की क्या आवश्यकता है?

आदित्यपुराणे श्रीमहादेववाक्यं शिवां प्रति

आदित्यपुराण में श्रीमहादेवजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति

अहं जपामि देवेशि रामनामाक्षरद्वयम्।
श्रीसीतायाः स्वरूपस्य ध्यानं कृत्वा हृदिस्थले।।260।।

हे देवेश्वरि पार्वति! मैं भगवती श्रीसीताजी के स्वरूप का हृदय में ध्यान करके 'राम' इन दो अक्षरों का जप करता हूँ।

रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाममङ्गलम्।।261।।

हे देवि पार्वति! श्रीरामनाम में ही परिकरों के सहित श्रीरामजी के श्रीभरतादि भाई, सद्गुणों का समुदाय एवं नित्य मंगलस्वरूप श्रीअयोध्या धाम नित्य स्थित हैं श्रीरामनाम के संकीर्तन जप करने से सबका दर्शन सहज में प्राप्त हो जाता है।

तत्रैवादित्यवाक्यं ऋषीन् प्रति

आदित्यपुराण में ही श्रीसूर्यजी का वाक्य ऋषियों के प्रति

रामनामजपादेव भासकोऽहं विशेषतः।
तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिवानहम्।।262।।

हे ऋषियों! श्रीरामनाम के जप के प्रभाव से ही मैं सबको प्रकाशित करता हूँ उसी प्रकार श्रीरामनाम के जप के द्वारा प्राप्त शक्ति से युक्त होकर मैं समस्त लोकों की परिक्रमा करता हूँ।

नामविश्रब्धहीनानां साधनान्तरकल्पना।
कृता महर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः।।263।।

श्रीरामनाम संकीर्तनजन्य परमानन्द में निमग्न रहने वाले महात्माओं ने श्रीरामनाम में विश्वास न करने वाले लोगों के लिए ही दूसरे अनेक साधनों की कल्पनाएँ की हैं अर्थात् जिन लोगों का श्रीरामनाम में पूर्ण विश्वास है उनके लिए दूसरी किसी साधना की आवश्यकता नहीं है।

आङ्गिरसपुराणे

आङ्गिगरसपुराण में

नामसंकीर्त्तनात्सर्वं मङ्गलं शाश्वतं शुभम्।
सामीप्यं रामचन्द्रस्य तथा सर्वार्थसंचयः।।264।।

श्रीरामनाम के संकीर्तन से सभी प्रकार के कल्याण एक रस शुभ, सभी अर्थों का समूह एवं श्रीसीतारामजी का सामीप्य प्राप्त होता है।

श्रीरामेति मनुष्यो यः समुच्चरति सर्वदा।
जीवन्मुक्तो भवेत्सो हि साक्षाद्रामात्मकः सुधीः।।265।।

जो मनुष्य सदा सर्वदा 'श्रीराम' ऐसा उच्चारण करता रहता है वह जीते जी मुक्त है वह विद्वान् साक्षात् श्रीसीताराममय है।

सुरद्रुमचयं त्यक्त्वा ह्येरण्डं समुपासते।
यस्यान्यसाधने प्रीतिस्त्यक्त्वा श्रीनाममङ्गलम्।।266।।

सर्वथा मंगलकारी श्रीरामनाम को छोड़कर जो लोग दूसरे साधनों में प्रीति करते हैं वे लोग कल्पवृक्ष समूह का त्याग करके अपावन वृक्ष रेंड की उपासना करते हैं।

आभ्यन्तरं तथा बाह्यं यस्तु श्रीराममुच्चरेत्।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदिपंकजे।।267।।

जो लोग सर्वदा सावधान होकर प्रीतिपूर्वक भीतर तथा बाहर से निरन्तर श्रीरामनाम का उच्चारण करते रहते हैं थोड़े समय में ही उनके हृदय कमल में प्रकाश का दर्शन होने लगता है।

शुकपुराणे श्रीअगस्त्यवाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति

शुकपुराण में श्रीअगस्त्यजी का वाक्य सुतीक्ष्णजी के प्रति

श्रीमद्रामेतिनामैव जीवनानां च जीवनम्।
कीर्तनात्सर्वरोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।268।।

श्रीरामनाम ही समस्त जीवों का जीवन है। श्रीरामनाम के संकीर्तन से निश्चित ही समस्त रोगों से मुक्ति मिल जाती है इस कथन में संशय नहीं है।

ब्रह्माण्डशतदानस्य यत्फलं समुदाहृतम्।

तत्फलादधिकं विद्यात्सकृच्छ्रीरामकीर्तनात्।।269।।

सैकड़ों ब्रह्माण्ड दान का जो फल कहा गया है उससे भी अधिक फल एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण से होता है।

तत्रैव श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

शुकपुराण में ही श्रीशिवजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति

यथैव पावको देवि रजसाच्छन्नतां व्रजेत्।

तथा विश्वासहीनानां नास्तिनामार्थवैभवम्॥270॥

हे देवि! जिस प्रकार अग्नि धूल से ढके जाने पर अपने स्वभाव प्रभाव को प्रकट नहीं करता है उसी प्रकार विश्वासहीन मनुष्य श्रीरामनाम के महाऐश्वर्यादि को नहीं समझ पाता है। अर्थात् विश्वासहीनों के लिए श्रीरामनाम की महिमा कुछ नहीं है।

अहो भाग्यतराः सर्वे नामसंलग्नमानसाः।

पावयन्ति जगत्सर्वं रामनामार्थचिन्तनात्।।271।।

आश्चर्य है कि जिनका मन श्रीराम नाम में संलग्न है वे सभी अत्यन्त भाग्यशाली है क्योंकि वे लोग लोकोपकारी श्रीरामनाम के अर्थ के चिन्तन से सारे संसार को पवित्र करते हैं।

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षिसत्तमः।

जपत्वं तन्महामन्त्रं रामनामरसायनम्।।272।।

हे पार्वति ! जिस श्रीरामनाम के स्वभाव प्रभाव को समझकर जप करके श्रीशुकदेवजी ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ हो गये उस महामन्त्र रसायन श्रीरामनाम का जप करो।

पुराणसंग्रहे श्रीसूत वाक्यं शौनकं प्रति

पुराणसंग्रह में सूतजी का वाक्य शौनक के प्रति

इदानीं रामनाम्नस्तु रहस्यं प्रवदामि ते।

यच्छ्रुत्वा च पठित्वा च नरो याति परां गतिम्।।273।।

हे शौनक जी! इस समय मैं आपके लिए श्रीरामनाम के उस रहस्य को कहने जा रहा हूँ जिसको सुनकर और पढ़कर मनुष्य परमगति को प्राप्त करता है।

सर्वेषां मन्त्रवर्गाणां रामनाम परं स्मृतम्।

गोप्यं श्रीपार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम्।।274।।

सभी मन्त्रों में श्रीरामनाम महामन्त्र सर्वश्रेष्ठ हैं अत्यन्त गोपनीय है श्रीपार्वती पति भगवान् शंकर का जीवन सर्वस्व है और अन्तःकरण की शुद्धि करने वाला है।

सुलभं सर्वजीवानामनायासेन सिद्धिदम्।

सर्वोपायं विहायाशु जप्तव्यं प्रेमतत्परैः।।275।।

श्रीरामनाम सभी जीवों के लिए सुलभ है बिना परिश्रम के ही सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला है अतः सभी उपायों को छोड़कर प्रेम–तत्पर होकर शीघ्र ही श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

येन केन प्रकारेण जपन्मोक्षप्रदं नृणाम्।

एवंरीत्या जपेद्यस्तु रामनाममनुत्तमम्।।276।।

तस्य पाणितले सिद्धिरनायासेन सत्वरम्।

सत्यं वदामि सिद्धान्तं सर्व कलिमलापहम्।।277।।

जिस किसी भी प्रकार से श्रीरामनाम का जप करने वाले मनुष्यों को श्रीरामनाम मोक्ष प्रदान करता है ऐसा समझकर जो सर्वोत्तम श्रीरामनाम का जप करता है उसके करतल में बिना परिश्रम के शीघ्र ही सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, यह सत्य सिद्धान्त मैं कहता हूँ कि कलि के समस्त मलों को दूर करने वाला श्रीरामनाम है।

पृष्ट्वा रीतिर्यथातथ्यं गुरोः सान्निध्यतो मुने।।

तत्पश्चादभ्यसेन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितः।।278।।

स्वल्पाहारं तथानिद्रां स्वल्पवाक्यं निरन्तरम्।

मिथ्यासंभाषणं त्यक्त्वा तथा च गमनादिकम्।।279।।

इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम्।
तथा नानारहस्यानां ज्ञानं संजायते ध्रुवम्॥280॥

हे मुने! सबसे पहले श्रीगुरु महाराज से श्रीरामनाम का यथार्थ स्वरूप और जप की विधि रीति समझना चाहिए। तत्पश्चात् आलस्यरहित होकर सर्वेश्वर श्रीरामनाम का अभ्यास करना चाहिए। भोजन स्वल्प, निद्रा स्वल्प, मिथ्या भाषण का त्याग करके बहुत कम बोलना एवं यत्र तत्र आना जाना बन्द करके निरन्तर श्रीरामनाम का जप किया जाय तो यहीं सपरिकर श्रीसीतारामजी का दर्शन प्राप्त होता है और अनेक प्रकार के रहस्यों का ज्ञान भी निश्चित रूप से हो जाता है।

नाम्नः परात्परैश्वर्यं कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं रामरूपेण भास्वरम्॥281॥

हे मुने! श्रीरामनाम का परत्व, महत्व और ऐश्वर्य का मैं वाणी से क्या वर्णन करूँ? इतना सच है कि श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन करने से सम्पूर्ण विश्व श्रीसीतारामजी के रूप में भासित होने लगता है।

भारतविभागे

भारतविभाग में

सर्वलक्षणहीनोऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः।
सर्वं तरति तत्पापं भावयन्नाममङ्गलम्॥282॥

जो समस्त शुभ लक्षणों से हीन हैं अथवा समस्त पापों से युक्त हैं वे भी मङ्गलमय श्रीरामनाम की भावना करने से समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं अर्थात् निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन करने से शीघ्र ही उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्राणप्रयाणपाथेयं संसारव्याधिभेषजम्।
दुःखशोकपरित्राणं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्!॥283॥

प्राणों के महाप्रयाण के समय पाथेयस्वरूप, संसाररूपी महाव्याधि के नाश के लिए सर्वश्रेष्ठ औषधिस्वरूप और अनेक प्रकार के दुःख एवं शोक से बचाने वाले श्रीराम ये दो अक्षर हैं।

मातृहा पितृहा गोघ्नो ब्रह्महाऽऽचार्यहा मुने।

श्वादः पुल्कसको वाऽपि शुद्धेरन् रामनामतः ।।284।।

हे मुने! संसार में जो सर्वथा पूज्य हैं– माता, पिता, गौ, ब्राह्मण एवम् आचार्य ऐसे पूज्यों की हत्या करने वाले, कुत्ते का मांस खाने वाले चाण्डाल एवं नीच जाति के लोग भी श्रीरामनाम का जप करने से श्रीरामनाम के प्रभाव से परमपवित्र हो जाते हैं।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वसिद्धान्तपारगम्।
सर्वदेवाधिपं भद्रं सर्वसंपत्तिकारकम्।।285।।
महानादस्य जनकं महामोक्षस्यहेतुकम्।
महाप्रेमरसेशानं महामोदमयं परम्।।286।।
आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परं ब्रह्म परं धाम परं कारणकारणम्।।287।।

सम्पूर्ण मङ्गलों को भी माङ्गल्य प्रदान करने वाले, समस्त सिद्धान्तों का सार, सम्पूर्ण देवताओं का स्वामी, कल्याणदायक, सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रदान करने वाले, दस प्रकार के नादों से परे महानाद का जनक, महामोक्ष का परम कारण, महाप्रेम एवं महारस के स्वामी, परमानन्दस्वरूप, सर्वोत्कृष्ट, आह्लाद प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ, परब्रह्मस्वरूप, असाधारण तेजः स्वरूप, समस्त कारणों के भी परम कारण श्रीरामनाम महाराज हैं अतः अन्य साधनों का आश्रय छोड़कर श्रीरामनाम महाराज का आश्रय लेना चाहिए।

गणेशपुराणे श्रीगणेशवाक्यं ऋषीन् प्रति

श्रीगणेशपुराण में श्रीगणेशजी का वाक्य ऋषियों के प्रति

रामनाम परं ध्येयं ज्ञेयं पेयमहर्निशम्।
सर्वदा सद्भिरित्युक्तं पूर्वं मां जगदीश्वरैः।।288।

हे ऋषियों! सत्पुरुषों के द्वारा सर्वदा परम ध्यान के योग्य, जानने योग्य एवं दिन रात पान करने योग्य श्रीरामनाम ही है। यह बात मुझको पहले ही जगत् के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने बता दिया था।

अहं पूज्योऽभवं लोके श्रीमन्नामानुकीर्तनात्।
अतः श्रीरामनाम्नस्तु कीर्तनं सर्वदोचितम्।।289।।

इस लोक में श्रीरामनाम के प्रभाव से ही मैं प्रथम पूज्य हुआ हूँ अतः हम सभी के लिए सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन ही उचित होगा।

विघ्नानां संनिहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
सुधासारं सदा स्वच्छं निर्विकारं निराश्रयम्।।290।।

क्योंकि श्रीरामनाम का संकीर्तन समस्त विघ्नों का नाश करने वाला, सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्रदान करने वाला, अमृत की धाराप्रवाह वृष्टिस्वरूप, सुधासारसर्वस्वरूप सदासर्वदा निर्मल, विकार रहित एवं अन्य आश्रयों से रहित परम आश्रयस्वरूप है। अतः श्रीरामनाम का संकीर्तन सबको करना चाहिए।

नन्दीपुराणे नन्दीश्वरवाक्यं गणान् प्रति

नन्दीपुराण में श्रीनन्दीश्वर जी का वाक्य गणों के प्रति

सर्वदा सर्वकालेषु ये वै कुर्वन्ति पातकम्।
रामनामजपं कृत्वा यान्ति धाम सनातनम्।।291।।

जो लोग हर समय पाप करते रहते हैं वे लोग भी श्रीरामनाम का जप करके श्रीरामनाम के प्रभाव से सनातन धाम दिव्य नगरी अयोध्या को प्राप्त कर लेते हैं।

हरन् ब्राह्मणसर्वस्वं प्रपन्नघ्नं सुरां पिबन्।
अपि भ्रूणं हनन् पूतो जायते नामकीर्तनात्।।292।।

जो लोग ब्राह्मण के सर्वस्व का हरण करने वाले हैं, शरणागत की हत्या करने वाले हैं, मदिरापान करने वाले हैं, एवं गर्भपात कराने वाले हैं वे लोग भी श्रीरामनाम के संकीर्तन करने से शीघ्र ही पवित्र हो जाते हैं।

शृणुध्वं भोगणास्सर्वे रामनाम परं बलम्।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमपीपिबत्।।293।।

हे महादेवजी के गण! तुम सभी लोग श्रीरामनाम के उत्कृष्ट बल को श्रवण करो, जिस श्रीरामनाम की प्रसन्नता के फलस्वरूप भगवान् शंकर ने हलाहल विष का पान कर लिया। अर्थात् जिस श्रीरामनाम महाराज की कृपा से विष भी अमृत हो गया एवं शिवजी के गले का आभूषण हो गया।[1]

---

1. नाम प्रभाव जान शिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।

जानाति रामनाम्नस्तु परत्वं गिरिजापतिः।
ततोऽन्यो न विजानाति सत्यं सत्यं वचो मम।।294।।

श्रीरामनाम के परत्व और महत्व को यथार्थरूप से श्रीपार्वती पति भगवान् शंकर जी ही जानते हैं उनके अलावा दूसरा कोई भी यथार्थ रूप से नहीं जानता है मेरी यह वाणी सत्य है सत्य है।

इतिहासोत्तमे

इतिहासोत्तम में

श्रीरामकीर्तने नित्यं यस्य पुंसो न जायते।
सलोमपुलकं गात्रं स भवेत्कुलिशोपमः।।295।।

श्रीरामनाम के संकीर्तन एवं स्मरण के समय जिस पुरुष का शरीर रोमांचित नहीं होता है वह वज्र जैसा महा कठोर है ऐसे व्यक्ति को बारम्बार ग्लानि करनी चाहिए और श्रीरामनाम महाराज से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे हृदय में भी श्रीरामनाम के जप संकीर्तन में प्रेम प्रकट हो।

रामनामजपे येषामश्रुपातो भवेन्नहि।
त एव खरतुल्यास्तु ह्यपूताः पातकालयाः।।296।।

श्रीरामनाम के जप के समय जिन पुरुषों को अश्रुपात नहीं होते हैं वे लोग गदहे के समान हैं सदा अपवित्र एवं पाप निवास हैं।

श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु वैभवं पारमार्थिकम्।
श्रवते न जलं नेत्रात्तन्नेत्रे वै रजोक्षिपेत्।।297।।

श्रीरामनाम के यथार्थ परत्व एवं महत्व को सुनकर जिन नेत्रों से अश्रुपात नहीं होते उन आँखों में निश्चित ही धूल डाल देनी चाहिए।

तत्रैव नारकान् प्रति पुष्कलमुनिवाक्यम्

वहीं श्रीपुष्कल मुनि का वाक्य नरकवासियों के प्रति

अहमप्यत्र नामानि कीर्तयामि जगत्पतेः।
तानि वः श्रेयसे नित्यं भविष्यन्ति न संशयः।।298।।

हे नरकवासियों! मैं भी यहाँ जगत् पति भगवान् श्रीसीतारामजी के पवित्र नामों का संकीर्तन करता हूँ। भगवान् के वे पवित्र नाम निश्चित ही तुम लोगों के कल्याण के लिए समर्थ होंगे इसमें संशय नहीं है।

अहो सतां संगममद्भुतंफलं परं पवित्रं नरकादि नाशनम्।

कर्तव्यमेतद्धि सदैव सज्जनैः श्रीरामनाम्नि प्रभवेत्परारतिः।।299।।

आश्चर्य है कि सन्त महापुरुषों का संग अद्‌भुत फल प्रदान करने वाला, परम पवित्र और नरकादि जन्य पीड़ा को नष्ट करने वाला है। अत: सत्पुरुषों को सदा ही सन्त महापुरुषों का संग करना चाहिए क्योंकि सन्त महापुरुषों के सान्निध्य से ही श्रीरामनाम में परा प्रीति उत्पन्न होती है।

सकृत्संकीर्तितो देवः स्मृतो वा मुक्तिदो नृणाम्।

स्मरतामहर्निशं नाम न जाने किं फलं भवेत्।।300।।

श्रीरामनाम का एक बार संकीर्तन अथवा स्मरण करने पर भगवान् मनुष्यों को मुक्ति प्रदान करते हैं। जो लोग दिन रात श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उन लोगों को भगवान् क्या फल देते हैं? यह मैं नहीं जानता हूँ।

कृतज्ञानां शिरोरत्नं रामनामपरात्परम्।

कथं न द्रवते श्रुत्वा स्वनामाह्वानमुत्तमम्।।301।।

कृतज्ञों में शिरोमणि परात्परस्वरूप श्रीरामजी महाराज अपने उत्तम नाम का आह्वान सुनकर क्यों नहीं द्रवित होंगे?

किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुना ध्रुवम्।

स्मरध्वं रामनामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम्।।302।।

हे नरकवासियों! तुम लोग यहाँ व्यर्थ में इस प्रकार हाहाकार क्यों कर रहे हो? तुम लोग इस समय समस्त दुःखों को दूर करने वाले महामन्त्र श्रीरामनाम का स्मरण करो।

कालं करालमत्यन्तं दृष्ट्वा स्वप्नमिदं जगत्।

रामनामजपाच्छिप्रं जागृतिं याति निश्चितम्।।303।।

काल को अत्यन्त कराल एवं इस जगत् को स्वप्न तुल्य मानकर श्रीरामनाम का जप करने से शीघ्र ही निश्चित रूप से मोह निद्रा से जागरण होगा मोह निद्रा भंग होगी और जीव को स्वस्वरूप की प्राप्ति हो जायेगी।

रामनाम्निसुधाधाम्नि कुतर्कं निरयावहम्।

समाश्रयन्ति ये पापास्ते महाराक्षसाधमाः।।।304।।

अमृतस्वरूप श्रीरामनाम की महिमा के विषय में जो मलीनमति पापीजन नरकप्रद कुत्सित तर्कों का आश्रय लेते हैं वे अधम महाराक्षस हैं।

प्रभाकरस्य संकाशं सर्वलोकैकगोचरम्।

उलूका नेत्रहीनाश्च नैव पश्यन्ति दुर्भगाः।।305।।

श्रीरामनाम की महिमा सूर्य के समान सर्वत्र सभी लोकों के ज्ञान का विषय है। फिर भी उल्लू एवं नेत्रहीन मन्दमति दुर्भाग्यवश उसको नहीं देख पाते हैं। तात्पर्य यह है कि जैसे सूर्य का प्रकाश तो सर्वत्र फैल रहा है लेकिन उल्लू और नेत्रहीन लोगों को उसका दर्शन नहीं होता है वैसे ही श्रीरामनाम की महिमा सर्वत्र सभी लोगों के समक्ष प्रकट हो रही है परन्तु उल्लू एवं नेत्रहीन जैसे भाग्यहीन लोगों को नहीं दिखायी दे रही है।

तत्रैव श्रीभृगुवाक्यं

वहीं श्रीभृगुजी का वाक्य

श्रुत्वा नामानि तत्रस्थास्तेनोक्तानि तथा द्विज।

नारका नरकान्मुक्ताः सद्य एव महामुने।।306।।

हे महामुने! हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! उन श्री पुष्कल मुनि के द्वारा कहे गये भगवान् के नामों को सुनकर उस नरक में रहने वाले नारकी लोग नरक से तत्काल मुक्त हो गये।

श्वादोऽपि नहि शक्नोति कर्त्तुं पापानि यत्नतः।

तावन्ति यावती शक्ती रामनाम्नोऽशुभक्षये।।307।।

अशुभों के नाश करने के लिए श्रीरामनाम में जितनी शक्ति है उतने पाप प्रयास करके भी महानीच चाण्डाल भी नहीं कर सकते हैं।

स्वप्नेऽपि नामस्मृतिरादिपुंसः क्षयंकरोत्याहित पापराशिः।

प्रयत्नतः किं पुनरादिपुंसः संकीर्त्यते नाम रघूत्तमस्य।।308।।

जब आदि पुरुष भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का स्वप्न में भी नाम स्मरण करने पर अनेक जन्मों की संकलित पापराशि नष्ट हो जाती है तब जो लोग श्रद्धापूर्वक प्रयत्न करके श्रीरामनाम का संकीर्तन करते हैं उनके लिए

क्या कहना?

इदमेव परंभाग्यं प्रशस्यं सद्भिरुत्तमैः।
श्रीसीतारामनाम्नस्तु सततं कीर्तनं मुने।।309।।

हे मुने! उत्तम सत्पुरुषों ने इसी को सर्वश्रेष्ठ एवं प्रशस्त भाग्य कहा है कि– 'निरन्तर श्रीसीतारामनाम का संकीर्तन होता रहे।'

चातुर्यं सर्वथा विप्र इदमेव विनिश्चितम्।
नामव्याहरणं नित्यं त्यक्त्वा दुर्वासनादिकम्।।310।।

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! सभी महापुरुषों ने इसी को सभी प्रकार से परम चतुरता निश्चित किया है कि दुर्वासनाओं का त्याग करके नित्य श्रीसीताराम नाम का संकीर्तन किया जाय।

पुरा महर्षयः सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात्।
सिद्धा ब्रह्मसुखेमग्ना याताः श्रीरामसद्मनि।।311।।

श्रीसीताराम के संकीर्तन के प्रभाव से पहले सभी ऋषि महर्षि सिद्ध ब्रह्मसुख में मग्न हो गये थे और अन्त में श्रीसीतारामजी के दिव्य धाम में चले गये।

श्रुतं संकीर्त्तितं वाऽपि रामनामाखिलेष्टदम्।
दहत्येनांसिसर्वाणि प्रसंगात्किमु भक्तितः।।312।।

सम्पूर्ण अभीष्ट को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम का प्रसंगवश किया गया संकीर्तन अथवा श्रवण समस्त पापों को जला देता है तब जो लोग भक्तिपूर्वक संकीर्तन या श्रवण करते हैं उनके लिए क्या कहना?

तत्रैव स्थानान्तरे परमपुरुषवाक्यं वैष्णवान्प्रति

उसी ग्रन्थ में दूसरी जगह परमपुरुष का वाक्य वैष्णवों के प्रति

मद् भक्ताः सत्यमेतत्तु वाक्यं मे श्रृणुताधुना।
सकृदुच्चार्य्य मन्नाम मत्तुल्यो जायते नरः।।313।।

हे मेरे भक्तों! आप लोग इस समय मेरे इस वाक्य को सुनें कि मनुष्य एक बार मेरे मंगलमय नाम का उच्चारण करके मेरे समान पूज्य हो जाता है।

रामनाम समं नाम न भूतो न भविष्यति।
तस्मात्तदेव संकीर्त्त्य मुच्यतां कर्मबन्धनात्।।314।।

श्रीरामनाम के समान दूसरा नाम न है न पहले था और न आगे होने वाला है अत: श्रीरामनाम का संकीर्तन करके कर्मबन्धनों से मुक्त हो जाना चाहिए।

लघुभागवते श्रीव्यास वाक्यम्

लघु भागवत में श्रीव्यासजी का वाक्य

गोवधः स्त्रीवधः स्तेयं पापं ब्रह्मवधादिकम्।
श्रीरामकीर्त्तनादेव शतधा याति सत्वरम्।।315।।

गोहत्या, स्त्री हत्या, ब्राह्मण हत्यादि एवं चोरी आदि से जन्य जितने पाप हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के संकीर्तन करने से शीघ्र ही सैकड़ों खण्डों में विभक्त होकर नष्ट हो जाते हैं।

किं तात वेदागम शास्त्रविस्तरैस्तीर्थादिकैरन्यकृतैः प्रयोजनम्।
यद्यात्मनो वांछसि मुक्तिकारणं श्रीरामरामेति निरन्तरं रट।।316।।

हे तात! वेद एवं आगम ग्रन्थों के अध्ययन, दूसरों के द्वारा किये गये विभिन्न तीर्थों की यात्राओं से तुम्हें क्या प्रयोजन है? यदि तुम अपनी आत्मा की मुक्ति चाहते हो तो निरन्तर श्रीरामनाम का जप करो।

वर्तमानं च यत्पापं यद्भूतं यद्भविष्यति।
तत्सर्वं निर्दहत्याशु रामनामानुकीर्त्तनात्।।317।।

जितने पाप पूर्व में हो चुके हैं, वर्तमान में हैं और भविष्य में होने वाले हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के संकीर्तन से शीघ्र ही जल जाते हैं।

ते कृतार्थाः मनुष्येषु सुभाग्या नृप निश्चितम्।
रामनाम सदाभक्त्या स्मरन्ति स्मारयन्ति ये।।318।।

हे राजन्! मनुष्यों में वे सौभाग्यशाली मनुष्य निश्चित ही कृतार्थ हैं जो सदा सर्वदा भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं और दूसरों से स्मरण करवाते हैं।

अभक्ष्यभक्षणात्पापमगम्यागमनाच्च यत्।
तत्सर्वं विलयं याति सकृद्रामेतिकीर्त्तनात्।।319।।

अभक्ष्य पदार्थों के भक्षण करने से और अगम्या स्त्री के साथ गमन करने से जो पाप होता है वह सम्पूर्ण पाप एक बार श्रीरामनाम के संकीर्तन से नष्ट हो जाता है।

सदा द्रोहपरो यस्तु सज्जनानां महीतले।
जायते पावनो धन्यो रामनाम वदन् सदा।।320।।

पृथ्वीलोक में जो सदा सर्वदा सन्त महापुरुषों से द्रोह करता है, वह भी सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन करता हुआ परम पवित्र एवं धन्य हो जाता है।

श्रीरामेति मुदायुक्तः कीर्त्तयेद्यस्त्वनन्य धीः।
पावनेन च धन्येन तेनेयं पृथिवी धृता।।321।।

जो अनन्य बुद्धि से प्रसन्नतापूर्वक श्रीरामनाम का संकीर्तन करता है वह परमपवित्र एवं धन्य है वैसे पवित्रात्मा के द्वारा यह पृथिवी धारण की गयी है। अर्थात् ऐसे ही महापुरुषों से यह पृथिवी टिकी है।

प्रभासपुराणे

प्रभासपुराण में

मधुरालयमदो[1] मुख्यं नाम सर्वेश्वरेश्वरम्।
रसनायां स्फुरत्याशु महारासरसालयम्।।322।।

भगवान् का वह श्रीरामनाम महामधुरता का आलय है, समस्त भगवन्नामों में मुख्य है, सभी स्वामियों का परमेश्वर है और महारास रस का साक्षान्निवासभूत हैं तथा अपनी अकारण करुणा से साधक की जिह्वा पर स्फुरित होते हैं।

तत्रैव श्रीभगवद्वाक्यं नारदं प्रति

वहीं श्रीभगवान् का वाक्य श्रीनारदजी के प्रति

नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप।
प्रायश्चित्तमशेषाणां पापानां मोचकं परम्॥323।।

हे नित्य शत्रुओं को पीडित करने वाले नारद जी! भगवान् के समस्त नामों में श्रीरामनाम अत्यन्त मुख्य, सम्पूर्ण पापों का मोचक तथा परम प्रायश्चित स्वरूप है।

---

1. मधुरालयम् अदः इतिच्छेदात्

श्रीरामनाम परमं प्राणात्प्रियतरं मम।

न हि तस्मात् प्रियः कश्चित् सत्यं जानीहि नारद।।324।।

हे नारद जी! श्रीरामनाम मुझे प्राणों से भी अत्यन्त प्रिय है श्रीराम नाम से बढ़कर कोई भी मुझे प्रिय नहीं है यह सत्य जानो।

नराणां क्षीणपापानां सर्वेषां सुकृतात्मनाम्।

इदमेव परं ध्येयं नान्यत्स्वप्नेपि नारद।।325।।

हे नारद जी! जिनके पाप नष्ट हो गये हैं उनके लिए और सभी सुकृतियों के लिए यह श्रीरामनाम ही परम ध्यान करने योग्य है स्वप्न में भी दूसरा कुछ नहीं है।

कालिकापुराणे

कालिकापुराण में

रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये।

असंख्यमखतीर्थानां फलं तेषां भवेदध्रुवम्॥326।।

परम प्रकाश, निरामय एवं परात्मस्वरूप श्रीरामनाम का जो लोग उच्चारण करते हैं उन लोगों को असंख्य यज्ञ एवं तीर्थों का फल निश्चित ही प्राप्त होता है।

रामनाम प्रभा दिव्या सर्ववेदान्त पारगा।

वदन्ति नियतं राजन् ज्ञात्वा सर्वोत्तमोत्तमाः।।327।।

हे राजन्! सभी शरीरधारियों में सर्वश्रेष्ठ सन्त महापुरुष निश्चित रूप से यह जानकर कहते हैं कि श्रीरामनाम की प्रभा दिव्य एवं समस्त वेदान्तों से परे हैं।

सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमसः परम्।

श्रीरामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।328।।

सभी शक्तियों का मूल कारण, मोहान्धकार से सर्वथा परे, सबका स्वामी एवं शरणागत जीवों को सुखशान्ति प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है।

प्राणानां प्राणमित्याहुर्जीवानां जीवनं परम्।

मन्त्राणां परमं मन्त्रं रामनाम सदा प्रियम्॥1329।।

सन्त महात्मा कहते हैं कि समस्त प्राणियों का प्राण, समस्त जीवों का परम जीवन, सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्रराज एवं सदा सर्वदा प्रिय लगने योग्य एकमात्र श्रीरामनाम है।

देवीभागवते व्यासवाक्यं शुकं प्रति

देवी भागवत में व्यासजी का वाक्य शुकदेवजी के प्रति

जीवानां दुष्टभावानां कृतघ्नानां तथा शुक।
चरितं शृणु भो तात सदा पाप रतात्मनाम्।।330।।

हे तात शुक! तुम दुष्टभाव वाले, कृतघ्न और सदा सर्वदा पाप में रत रहने वाले जीवों के चरित्रों को सुनो।

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
ज्ञान वैराग्य हीनानां दृश्यं नैव कदाचन।।331।।

जो जीव सर्वथा ज्ञान वैराग्य से रहित है उन लोगों को कभी भी श्रीरामनाम का परात्पर प्रभाव नहीं दिख सकता। तात्पर्य यह है कि ज्ञान, वैराग्य एवं सत्संग के द्वारा ही श्रीरामनाम का परत्व एवं महत्व का दर्शन होता है इसके अभाव में नहीं हो सकता है।

गर्भमध्ये तु यत्प्रोक्तं करुणानिधिमग्रतः।
सततं कीर्त्तनं कुर्वे रामनाम्नः समादरात्।।332।।

गर्भ के मध्य में जीव ने करुणासागर भगवान् के समक्ष प्रतिज्ञा किया था कि मैं निरन्तर आदरपूर्वक श्रीरामनाम का संकीर्तन करूंगा।

त्यक्त्वा दुराग्रहं सर्वं कुटुम्बादिक संग्रहम्।
करिष्यामि सदा भक्त्या तव नामानुकीर्त्तनम्।।333।।

हे प्रभो! मैं सभी प्रकार के दुराग्रहों को छोड़कर एवं सुतदारा कुटुम्बादि संग्रहों को छोड़कर सदा सर्वदा भक्तिपूर्वक आपके नाम का कीर्तन करूंगा।

तत्सर्वं विस्मृतं ताताधमेनात्मापहारिणा।
तस्मात्कष्टतरं दुःखं स प्राप्नोति पुनः पुनः।।334।।

हे तात! आत्मापहारी अधम जीव ने अपने प्रतिज्ञादि कृत्यों को भूला दिया इसलिए बार–बार वह अत्यन्त कष्टप्रद दुःख प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि जीव यदि अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार भगवान् का भजन स्मरण करे तो सुखी जीवन जी सकता है लेकिन जीव दुर्भाग्यवश अपनी प्रतिज्ञा भूलकर संसार में फंस जाता है। इसीलिए बार–बार दुखी होता है जन्म लेता है मरता है संसृति चक्र में पड़ा है।

क्रियायोगसारे

क्रियायोगसार में

स्मरणे रामनाम्नस्तु न काल नियमः स्मृतः।

भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्व दुःख विनाशनः।।335।।

श्रीरामनाम[1] के स्मरण कीर्तनादि में कालादि का कोई प्रतिबन्ध नहीं है प्रत्येक अवस्था में हर समय श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन किया जा सकता है भ्रमवश या असावधानता से श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर भी समस्त दुःखों का नाश हो जाता है।

नाम प्रभावं ब्रह्मर्षे रामचन्द्रस्य शाश्वतम्।

ब्रवीम्यहं समासेन सेतिहासं निशामय।।336।।

हे ब्रह्मर्षे! मैं भगवान् श्रीसीतारामजी के नामों के शाश्वत प्रभाव का इतिहास के साथ संक्षेप में वर्णन करता हूँ– सुनो पहले किसी सतयुग में रघुनाम का एक वैश्य था उसकी पुत्री बड़ी सुन्दरी थी वह विवाह के पश्चात् विधवा हो गयी और कुछ दिन के बाद में व्यभिचार में निरत हो गयी। ससुराल से अपने पिता के घर आकर भी जब वह नीचाचरण में प्रवृत्त होने लगी तब उसके पिता ने उसके ऊपर क्रोध किया और समझाया तब वह अपने पिता के कोप के भय से वहाँ से भागकर किसी शहर में जाकर गणिका के रूप में निवास करने लगी। एक दिन किसी सन्त से पालित तोते को उसने बाजार में देखा तो उसे खरीद कर अपने घर ले आयी।

---

1. भाव कुभाव अनख आलस हूँ। नाम जपत मंगलदिशि दस हूँ ।।

रामेति सततं नाम पाठ्यते सुन्दराक्षरम्।

रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदाधिकं महत्।।337।।

समस्त पातकध्वंसि स शुकस्तत्तदाऽपठत्।

नामोच्चारणमात्रेण तयोश्च शुकवेश्ययोः।।338।।

विनष्टमभवत्पापं सर्वमेव सुदारुणम्।

रामनाम प्रभावेण तौ गतौ धाम्नि सत्वरम्।।339।।

और वह वेश्या तोते को निरन्तर सुन्दर अक्षरों से युक्त श्रीरामनाम को पढ़ाती रहती थी कि श्रीरामनाम परब्रह्मस्वरूप, समस्त वेदों से श्रेष्ठ, महान् एवं समस्त पापों का नाशक है। उसके बाद वह तोता श्रीरामनाम का पाठ करने लगा। श्रीरामनाम के उच्चारण मात्र से उन दोनों तोता और वेश्या के सभी दारुण पाप नष्ट हो गये। श्रीरामनाम के प्रभाव से वे दोनों शीघ्र ही भगवान् के दिव्य धाम को चले गये।

ईदृशं रामनामेदं जप त्वं द्विजसत्तम।

अनायासेन तेऽभीष्टं सर्वं सेत्स्यति नान्यतः।।340।।

हे द्विजश्रेष्ठ! ऐसे श्रीरामनाम का सादर जप करो, श्रीरामनाम के जप से बिना परिश्रम के ही तुम्हारे सारे अभीष्ट सिद्ध हो जायेंगे। दूसरे साधनों से नहीं।

विष्णोर्नामानि विप्रेन्द्र सर्ववेदाधिकानि वै।

तेषां मध्ये तु तत्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम्।।341।।

हे विप्रेन्द्र! भगवान् नारायण के सभी नाम वेदों से श्रेष्ठ हैं और हे तत्वज्ञ! भगवान् के उन सभी नामों में श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

रामेत्यक्षरयुग्मं हि सर्वमन्त्राधिकं द्विज।

यदुच्चारणमात्रेण पापी याति पराङ्गतिम्।।342।।

हे द्विजवर्य! राम ये दो अक्षर सभी मन्त्रों से श्रेष्ठ हैं जिसके उच्चारण मात्र से पापी भी श्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है।

रामनामप्रभावं हि सर्ववेदैः प्रपूजितम्।

महेश एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने।।343।।

सभी वेदों से पूजित श्रीराम के प्रभाव को भगवान् शंकर ही जानते हैं हे

मुने! दूसरा कोई नहीं जानता है।

विष्णोर्नामसहस्राणि पठनाद्यल्लभते फलम्।

तत्फलं लभते मर्त्यो रामनाम स्मरन् सकृत्।।344।।

भगवान विष्णु के हजार नामों के पाठ से जो फल प्राप्त होता है उस फलको मनुष्य एक बार श्रीराम के स्मरण से प्राप्त कर लेता है।

तत्रैव धर्मराजवाक्यं दूतान् प्रति

वहीं धर्मराजजी का वाक्य दूतों के प्रति

दूताः स्मरन्तौ तौ चापि रामनामाक्षरद्वयम्।

तदा न मे दण्डनीयौ तयोः सीतापतिः प्रभुः।।345।।

हे दूतों! यदि वे दोनों (तोता और वेश्या) 'रा' 'म' इन दो अक्षरों का स्मरण करते रहें हों तो वे दोनों मेरे द्वारा दण्डनीय नहीं है क्योंकि उन दोनों के स्वामी श्रीसीतारामजी हैं।

संसारे नास्ति तत्पापं यद्रामस्मरणैरपि।

न याति संक्षयं सद्यो दृढं शृणुत किङ्कराः।।346।।

हे सेवकों! तुम लोग निश्चित सुनो कि संसार में ऐसा कोई पाप नहीं है जो श्रीरामनाम के स्मरण से तत्काल नष्ट न हो जाय।

ये मानवाः प्रतिदिनं रघुनन्दनस्य नामानि-

घोरदुरितौघविनाशकानि।

भक्त्याऽर्चयन्ति विबुध प्रवरार्चितस्य-

ते पापिनोऽपि हि भटा मम नैव दण्ड्याः।।347।।

हे मेरे भटो! जो मनुष्य श्रेष्ठ विद्वानों से पूजित श्रीसीताराम जी के, भयंकरपापसमूहों के नाशक नामों का प्रतिदिन भक्तिपूर्वक अर्चन करते हैं अर्थात् श्रीसीताराम का जप करते हैं वे पापी भी मेरे द्वारा दण्ड के योग्य नहीं हैं।

तस्माद्धि सर्व पुण्याढ्यौ गणिका च शुको भटाः।

पूजनीयौ च तौ नित्यमस्माभिर्नात्र संशयः।।348

इसलिए हे भटो! वह गणिका और तोता ये दोनों पुण्यात्मा हैं और हम लोगों से नित्य पूज्य हैं इसमें संशय नहीं है।

तावत्तिष्ठन्ति पापानि देहेषु देहिनां वर।

रामरामेति यावद्वै न स्मरन्ति सुख प्रदम्।।349।।

हे देहधारियों में श्रेष्ठ मुनिवर! जीवों के शरीरों में तभी तक पाप निवास करते हैं जब तक वह सुख प्रदान करने वाले श्रीरामनाम का उच्चारण व स्मरण नहीं करता है।

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे।

यज्ञे दाने व्रते चैव देवताराधनेऽपि च।।350।।

अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विचक्षणैः।

तत् स्मरेद्यत्फलं प्रेप्सू रामनामेति भक्तितः।।351।।

श्राद्ध, तर्पण, बलिदान, उत्सव, यज्ञ, दान, व्रत, देवताराधन एवं विद्वानों के करने योग्य दूसरे सभी वैदिक कार्यों के अनुष्ठान के समय जिस फल की प्राप्ति की इच्छा हो उसके लिए भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का स्मरण करें।

मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ रामरामेति यस्स्मरेत्।

स पापात्माऽपि परमं मोक्षमाप्नोति मानवः।352।।

हे द्विजश्रेष्ठ![1]! मृत्यु के समय में जो राम राम ऐसा स्मरण करता है वह पापी मनुष्य भी परम मोक्ष को प्राप्त करता है।

रामेति नाम यात्रायां ये स्मरन्ति मनीषिणः।

सर्वसिद्धि र्भवेत्तेषां यात्रायां नात्र संशयः।353।।

जो मनीषी लोग यात्रा के समय राम नाम का स्मरण करते हैं यात्रा में उन लोगों को सभी सिद्धि प्राप्त हो जाती है अर्थात् उनकी यात्रा मंगलमय एवं सफल होती है इसमें कोई संशय नहीं है।

राजद्वारे तथा दुर्गे विदेशे दस्युसंगमे।

दुःस्वप्नदर्शने चैव ग्रहपीडासु वै मुने।।354।।

अरण्ये प्रान्ते वाऽपि श्मशाने च भयानके।

रामनाम स्मरेत्तस्य विद्यन्ते नापदो द्विज।।355।।

---

1. जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा।। (मानस ३.३१.६)

हे मुने! राजद्वार, किला, विदेश, लुटेरों के समक्ष, दुःस्वप्न के दिखने पर, किसी ग्रह से पीडित होने पर, जंगल, मैदान और भयानक श्मशानादि स्थानों में हे द्विजों! जो रामनाम का स्मरण करता है उसके समक्ष कोई आपत्ति नहीं आती है।

औत्पातिके महाघोरे राजरोगादिके भये।
रामनाम स्मरन् मर्त्यो लभते नाशुभं क्वचित्।।356।।

महा उत्पात के समय एवं महा भयंकर यक्ष्मादि राजरोग के भय के समय जो रामनाम का स्मरण करता है उसे कहीं भी अशुभ की प्राप्ति नहीं होती है।

रामनाम द्विजश्रेष्ठ सर्वाशुभ निवारणम्।
कामदं मोक्षदं चैव स्मर्तव्यं सततं बुधैः।।357।।

हे द्विजश्रेष्ठ ! श्रीरामनाम समस्त अशुभों का निवारक, कामनाओं को पूर्ण कर देने वाला और मोक्ष प्रदान करने वाला है अतः विद्वानों को निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए।

रामनामेति विप्रर्षे यस्मिन्न स्मर्यते क्षणे।
क्षणः स एव व्यर्थस्स्यात्सत्यमेव मयोच्यते।।358।।

हे ब्रह्मर्षे! मैं सत्य ही कहता हूँ कि जिस क्षण में श्रीरामनाम का स्मरण नहीं होता है वह क्षण व्यर्थ ही है।

स्मरन्ति रामनामानि नावसीदन्ति मानवाः।
सत्यं वदामि ते नित्यं महामङ्गल कारणम्।।359।।

हे महात्मन्! मैं आपसे कहता हूँ कि श्रीरामनाम नित्य महामंगलकारी है जो मनुष्य श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं वे दुखी नहीं होते हैं।

जन्मकोटि दुरित क्षयमिच्छुस्सम्पदं च लभते भुवि मर्त्यः।
रामनाम सततं यदि भक्त्या मोक्षदायि मधुरं स्मरतु स्म।।360।।

जो मनुष्य अपने करोड़ों जन्मों के पापों को नष्ट करना चाहता है और पृथिवी पर सम्पत्ति की प्राप्ति करना चाहता है उसे मोक्ष देने वाले मधुर श्रीरामनाम का निरन्तर भक्तिपूर्वक स्मरण करना चाहिए।

अहो चरित्रं जीवानां दुष्टानां पाप कर्मणाम्।
रामेति मुक्तिदं नाम न स्मरन्ति नराधमा।।361।।

दुष्ट पाप परायण जीवों का चरित्र आश्चर्यजनक है कि वे नराधम मुक्ति देने वाले श्रीरामनाम का स्मरण नहीं करते हैं।

अहर्निशं नाम परात्परेश्वरं जपन्ति ये ते सुखदा सदा शिवाः।

तेषां पदस्पर्शरजोभिषेकात् सदैव पूताः किल पापिनो द्विजाः।।362।।

हे ब्राह्मणों! जो लोग परात्परेश्वर श्रीरामनाम का दिन रात जप करते हैं वे लोग सबको सुख देने वाले एवं कल्याणस्वरूप होते हैं उनकी चरण धूलि से अभिषेक करने पर पापी भी निश्चित ही सदा सर्वदा के लिए पवित्र हो जाते हैं।

सहस्रास्येन शेषोऽपि रामनाम स्मरत्यलम्।

तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं धरति क्लेशं बिना द्विज।।363।।

हे द्विजश्रेष्ठ! भगवान् शेष भी अपने हजारों मुखों से अतिशय रूप से अपनी दो हजार रसनाओं से निरन्तर श्रीरामनाम का जप करते हैं और उसी के प्रभाव से बिना कष्ट के सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का भार धारण करते हैं।

वक्तुं श्रमो न चाल्पोऽपि श्रोतुमत्यन्त मोददम्।

तथापि रामनामेदं न स्मरन्ति दुराशयाः।।364।।

श्रीरामनाम को कहने में थोड़ा भी परिश्रम नहीं है और सुनने पर अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है फिर भी दुष्ट हृदय जीव इस श्रीरामनाम का स्मरण नहीं करता है।

अत्यन्त दुःखलभ्योपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।

लभ्यते रामनाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम्॥365।।

करोड़ों जन्मों में अत्यन्त दुःख से प्राप्त होने वाली मुक्ति श्रीरामनाम से सहज में ही सुलभ हो जाती है। फिर श्रीरामनाम के जप से बढ़कर दूसरा कौन श्रेष्ठकर्म होगा?अर्थात् कोई नहीं।

रामनामामृतं स्वादु कथं वाचा वदामि ते।

स्मरणादेव ज्ञातव्यं सर्वदा बुध सत्तमैः।।366।।

श्रीरामनामरूपी अमृत कितना सुस्वादु है इसको हम अपनी तुच्छ वाणी

से तुमसे क्या कहें? श्रेष्ठ विद्वानों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करके श्रीरामनाम की श्रेष्ठता व मधुरता को समझ लेना चाहिए। अर्थात् स्वाद वाणी का विषय नहीं अनुभव का विषय होता है और सबका अनुभव अपना–अपना होता है अतः श्रीरामनामरूपी अमृत का स्वाद स्वतः जप करके अनुभव कर लेना चाहिए।

सर्वंकृत्यं कृतं तेन येनोक्तं नाम मुक्तिदम्।
नातः परतरं वस्तु क्वचित् संदृश्यते द्विज।।367।।

हे द्विजवर! जिस व्यक्ति ने मुक्तिदाता श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसने समस्त कर्त्तव्य कर्मों का अनुष्ठान कर लिया क्योंकि श्रीरामनाम से बढ़कर कोई भी दूसरी वस्तु कहीं नहीं दिखायी देती है।

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु सुप्रतापं हृदिस्थले।
नायाति सम्भ्रमन्तीह विमुखाः सर्वयोनिषु।।368।।

जब तक श्रीरामनाम का सुन्दर प्रताप हृदय में व्यवस्थित नहीं होता है अर्थात् जब तक श्रीरामनाम के प्रति पूर्ण समर्पण नहीं हो जाता है तब तक मनुष्य भगवान् से विमुख होकर सभी योनियों में भटकते रहते हैं।

रामनाम जप तत्परो जनो यत्फलं लभते तन्निरूपणे।
याति नैव श्रमतोऽपि कदाचिच्छिव शिवा श्रुति शेष गणेशाः।।369।।

श्रीरामनाम का जो तत्परता से जप करता है उसे जो फल प्राप्त होता है उसके वर्णन करने में भगवान् शंकर, पार्वती, वेद, अनन्त एवं गणेशजी भी परिश्रम करने पर भी कहीं भी समर्थ नहीं है अर्थात् ये लोग भी उस फल का वर्णन नहीं कर सकते हैं।

मानुषं जन्म सम्प्राप्य यैर्नोक्तमक्षरद्वयम्।
ते पिशाचास्तु चाण्डालास्सर्व प्रेत प्रपूजिताः।।370।।

सुन्दर मानव शरीर को प्राप्त करके भी जिन लोगों ने श्रीरामनाम के दो अक्षर का उच्चारण नहीं किया वे सब लोग सभी प्रेतात्माओं से पूजित पिशाच एवं चाण्डाल है।

आदिपुराणे श्रीकृष्णवाक्यमर्जुनं प्रति

आदिपुराण में श्रीकृष्ण का वाक्य अर्जुन के प्रति

रामनाम सदा ग्राही रामनाम प्रियः सदा।

भक्तिंतस्मै प्रदास्यामि न च मुक्तिं कदाचन।।371।।

हे अर्जुन! जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं और जिन्हें श्रीरामनाम प्रिय है उन लोगों को मैं भक्ति प्रदान करता हूँ कभी भी मुक्ति नहीं देता हूँ।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे।

त्यक्त्वा च सर्वकर्माणि धर्माणि च कपिध्वज।।372।।

हे अर्जुन! प्रत्येक युग में वैष्णवजन सभी कर्मों और धर्मों को छोड़कर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं।

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम्।

गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम्।।373।।

उन वैष्णवों की निश्चित रूप से श्रीरामनाम ही परम गति है अर्थात् वैष्णवों का जीवन सर्वस्व श्रीरामनाम ही है।

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि।

तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनामप्रसादतः।।374।।

हे पृथा पुत्र अर्जुन! जो मनुष्य श्रद्धा से अथवा अनादर भाव से भी पृथिवी पर श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं श्रीरामनाम महाराज की कृपा से उन्हें कहीं भी किसी भी प्रकार का भय नहीं है।

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेम सम्प्लुताः।

भक्तांस्ताननुगच्छन्ति मुक्तयः स्तुतिभिस्सह।।375।।

भगवत्प्रेमरस में भीने हुए श्रीरामनामानुरागी भक्तजन जहाँ—जहाँ जाते हैं वहाँ—वहाँ पाँचों प्रकार की मुक्तियाँ विभिन्न प्रकार से स्तुति करती हुई उन भक्तों का अनुगमन करती है।

मानवा ये सुधासारं रामनाम जपन्ति हि।

ते धन्या मृत्यु संत्रासरहिता रामवल्लभा।।376।।

जो मानव अत्यन्त सुधासार स्वरूप श्रीरामनाम का धारा प्रवाह जप करते हैं। वे लोग धन्य, मृत्यु के भय से रहित एवं भगवान् श्रीराम के अत्यन्त प्रिय हैं।

नामैव परमा मुक्तिर्नामैव परमा गतिः।
नामैव परमा शान्तिर्नामैव परमा मतिः।।377।।
नामैव परमा भक्तिर्नामैव परमा धृतिः।
नामैव परमा प्रीतिर्नामैव परमा स्मृतिः।।378।।
नामैव परमं पुण्यं नामैव परमं तपः।
नामैव परमो धर्मो नामैव परमो गुरुः।।379।।
नामैव परमं ज्ञानं नामैव चाखिलं जगत्।
नामैव जीवनं जन्तोर्नामैव विपुलं धनम्।।138।।
नामैव जगतां सत्यं नामैव जगतां प्रियम्।
नामैव जगतां ध्यानं नामैव जगतां परम्।।138।।
नामैव शरणं जन्तोर्नामैव जगतां गुरुः।
नामैव जगतां बीजं नामैव पावनं परम्।।382।।

हे अर्जुन! श्रीरामनाम ही परम मुक्ति, परम गति, परम शान्ति परमबुद्धि, परम भक्ति, परम धैर्य, परम प्रेम, परम स्मृति, परमपुण्य, परम तप, परम धर्म, परम गुरु, परम ज्ञान, सम्पूर्ण जगत, जन्तुओं का जीवन, पर्याप्त धन, जगत् में सत्य पदार्थ, जगत् में एकमात्र प्रेमास्पद, जगत् में एक मात्र ध्यान का विषय, जगत् से सर्वदा परे, जीवमात्र का एकमात्र शरण, जगद्गुरु, जगत् का मूल कारण परम पवित्र है।

रामनाम रता ये च ते वै श्रीरामभावुकाः।
तेषां संदर्शनादेव भवेद्भक्ती रसात्मिका।।383।।

जो लोग निरन्तर श्रीरामनाम के जप में निरत है वे निश्चय ही श्रीरामजी के भावुक भक्त हैं उन भक्तों के दर्शन से ही रसात्मिका भक्ति प्रकट हो जाती है।

कामादि गुण संयुक्ता नाममात्रैक बान्धवाः।

प्रीतिं कुर्वन्ति ते पार्थ न तथा जित षड्गुणाः।।384।।

हे पार्थ! जो लोग कामक्रोधादि विकारों से युक्त होते हुए भी श्रीरामनाम को ही अपना सर्वस्व मानते हैं वे लोग जिस प्रकार मुझसे प्रेम करते हैं वैसा प्रेम कामक्रोधादि दोषों को जीतने वाले लोग नहीं कर पाते हैं।

तं देशं पतितं मन्ये यत्र नास्ति सु वैष्णवः।

रामनाम परो नित्यं परानन्द विवर्द्धनः।।385।।

हे पार्थ! मैं उस देश को पतित (महानिन्दनीय) मानता हूँ जहाँ नित्य परमानन्द को बढ़ाने वाले, श्रीरामनाम परायण सुन्दर वैष्णव नहीं रहते हैं।

रामनामरता जीवा न पतन्ति कदाचन।

इन्द्राद्यास्सम्पतन्त्यन्ते तथा चान्येऽधिकारिणः।।386।।

श्रीरामनाम के जप में निरत जीवों का कभी भी पतन नहीं होता है। श्रीरामनामानुरागियों के अतिरिक्त इन्द्रादि देवताओं तथा दूसरे अधिकारियों का अन्त में पतन निश्चित है।

राम स्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति ये नराः।

फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव।।387।।

हे राजन्! जो मनुष्य श्रीरामनाम का स्मरण मात्र करके अपने प्राणों को छोड़ता है उनके फल को मैं नहीं देखता हूँ और मैं उनका भजन करता हूँ।

नाम स्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम्।

ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन किं फलम्।।388।।

श्रीरामनाम के स्मरणमात्र से मनुष्य आपत्ति शून्य पद को प्राप्त करता है जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उनको ज्ञान से क्या प्रयोजन है?

नामैव जगतां बन्धुर्नामैव जगतां प्रभुः।

नामैव जगतां जन्म नामैव सचराचरम्।।389।।

श्रीरामनाम ही सम्पूर्ण जगत् का बन्धु है वही सबका स्वामी है वही सबका उत्पत्ति स्थान है चर अचर सम्पूर्णजगत् वही है।

नाम्नैव धार्यते विश्वं नाम्नैव पाल्यते जगत्।
नाम्नैव नीयते धाम नाम्नैव भुज्यते फलम्।।390।।

सम्पूर्ण विश्व श्रीरामनाम के द्वारा ही धारण किया जा रहा है। सम्पूर्ण जगत् नाम के द्वारा ही पालित है। नाम के द्वारा ही धाम ले जाया जाता है। नाम के द्वारा ही फल भोगा जाता है।

नाम्नैव गृह्यते नाम गोप्यं परतरात्परम्।
नाम्नैव कार्यते कर्म नाम्नैव नीयते फलम्।।391।।

अत्यन्त गोपनीय एवं परात्पर श्रीरामनाम के द्वारा ही नाम ग्रहण किया जाता है। नाम के द्वारा ही सारे कर्म कराये जाते हैं और नाम के द्वारा ही फल प्राप्त कराये जाते हैं।

नामैव चाङ्गशास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम्।
नामैव वेद सारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्।।392।।

समस्त वेदांग शास्त्रों का उत्तम तात्पर्यार्थ श्रीरामनाम ही है और समस्त वेदों का सारांश सिद्धान्त सर्वदा कल्याणस्वरूप श्रीरामनाम ही है।

नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला।
नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते।।393।।

श्रीरामनाम से ही निश्चला बुद्धि परब्रह्म में हो पाती है और श्रीरामनाम के जप से ही चञ्चल चित्त व मन परब्रह्म में विलीन होता है।

श्रीरामस्मरणेनैव नरो याति पराङ्गतिम्।
सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजं फलम्।।394।।

श्रीरामनाम के स्मरण से ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है यह बात सत्य एवं सदासत्य है कि श्रीरामनाम से होने वाले फल को मैं नहीं जानता हूँ।

रामनाम प्रभावोऽयं सर्वोत्तम उदाहृतः।
समासेन तथा पार्थ वक्ष्येऽहं तव हेतवे।।395।।

हे पार्थ! श्रीरामनाम का यह सर्वोत्तम प्रभाव कहा गया और तुम्हारे लिए संक्षेप से मैं पुनः कहूँगा।

न नाम सदृशं ध्यानं न नाम सदृशो जपः।

न नाम सदृशस्त्यागो न नाम सदृशी गतिः।।396।।

न नाम सदृशं तीर्थं न नाम सदृशं तपः।

न नाम सदृशं कर्म न नाम सदृशः शमः।।397।।

न नाम सदृशी मुक्तिर्न नाम सदृशः प्रभुः।

ये गृह्णन्ति सदा नाम त एव जित षड्गुणाः।।398।।

श्रीरामनाम के सदृश न कोई ध्यान है, न कोई जप है, न कोई त्याग है, न कोई गति है, न कोई तीर्थ है, न कोई शम (मनोनिग्रह) है, न कोई मुक्ति है, न कोई समर्थ है, जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं। वास्तव में वे लोग ही छः विकारों को जीतने वाले हैं।

कुर्वन् वा कारयन्वाऽपि रामनामजपस्तथा।

नीत्वा कुल सहस्राणि परंधामाधिगच्छति।।399।।

जो कोई श्रीरामनाम का जप करते हैं अथवा जप करवाते हैं वे हजारों कुल कुटुम्बियों के साथ भगवान् के परम धाम को जाते हैं।

नाम्नैव नीयते पुण्यं नाम्नैव नीयते तपः।

नाम्नैव नीयते धर्मो जगदेतच्चराचरम्।।400।।

श्रीरामनाम से ही पुण्य प्राप्त किया जाता है तपस्या प्राप्त होती है धर्म प्राप्त किया जाता है यह चराचर जगत् श्रीरामनाम से ही पालित एवं व्यवस्थित है।

रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धीश्वरो भवेत्।

विश्वासेनैव श्रीरामनाम जाप्यं सदा बुधैः।।401।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से साधक सभी सिद्धियों का स्वामी हो सकता है। अतः विद्वानों को सदा विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनाम परायणः।

असंख्य कुलजानां वै तारणे सर्वदा क्षमः।।402।।

जो शान्त है अर्थात् जिन्होंने अपने मन को वश में कर लिया है और दांत हैं अर्थात् जो इन्द्रियों को वश में कर लिया है, जो क्षमाशील हैं और जो रामनाम परायण है वे लोग निश्चय ही असंख्य कुल में उत्पन्न जीवों को भवसागर से तारने में सदा समर्थ होते हैं।

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ त्यक्त्वाऽर्थकामान्विषयांश्च भोगान्।
तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा सदैव शुद्धाशुभगा भवन्ति ।।403।।

जो लोग अर्थ, काम, विषयों और भोगों का त्याग करके श्रीरामनाम के जप स्मरण से युक्त होकर पृथिवी पर विचरण करते हैं उनकी भक्ति और परम निष्ठा सदैव शुद्ध और सुन्दर होती है।

स्मरन्यो रामनामानि त्यक्त्वा कर्मापि चाखिलम्।
स पूतः सर्वपापेभ्यः पद्मपत्रमिवाम्भसा ।।404।।

जो सम्पूर्ण कर्मों का त्याग करके श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह समस्त पापों से पवित्र हो जाता है जैसे कमल का पत्र जल में रहकर भी जल से अलग रहता है वैसे ही वह संसार में रहकर भी संसार से अलग रहता है।

त्यक्त्वा श्रीरामनामानि कर्म कुर्वन्ति येऽधमाः।
तेषां कर्माणि बन्धाय न सुखाय कदाचन ।।405।।

जो लोग श्रीरामनाम का त्याग करके दूसरे कर्मों का अनुष्ठान करते हैं वे सब अधम है उनके सारे कर्म बन्धन के हेतु हैं कभी भी सुख देने वाले नहीं है।

यस्य चेतसि श्रीराम नाम माङ्गलिकं परम्।
स जित्वा सकलाँल्लोकान् परंधाम परिव्रजेत् ।।406।।

जिसके चित्त में सदा सर्वदा परम मंगलमय श्रीरामनाम विराजमान हैं वह सभी लोकों को जीतकर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करता है।

नाम युक्ता जना पार्थ जात्यन्तर समन्विताः।
प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीरामं न तथा नष्ट षड्गुणाः ।।407।।

हे पार्थ! नीच जाति में उत्पन्न भक्त भी श्रीरामनाम से युक्त होकर भगवान् श्रीराम से जैसी प्रीति करते हैं वैसी प्रीति उत्तम कुल में जन्म लेने

वाले कामादि विकारों को जीतने वाले ब्राह्मणादि नहीं करते हैं श्रीरामनाम से रहित होने से।

गायन्ति रामनामानि सततं ये जना भुवि।

नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः।।408।।

जो लोग पृथिवी पर निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं उनको नमस्कार है, उनको नमस्कार है उनको बारम्बार नमस्कार है।

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम संप्लुताः।

ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।409।।

हे तात! जो भावुक भगवत्प्रेमरस में निमग्न होकर श्रीरामनाम का आश्रय लेते हैं वे लोग सदा सर्वदा के लिए कृतार्थ हैं मेरी वाणी अन्यथा नहीं है सत्य है सत्य है।

इति विज्ञापितं तात स्वया बुद्धया विधारय।

रामनाम प्रसादेन सर्वं सुखमवाप्स्यसि ।।410।।

हे तात अर्जुन! मेरे द्वारा विज्ञापित रहस्य को अपनी बुद्धि से विशेष रूप से निर्धारण करो इतना तो सच है कि श्रीरामनाम की कृपा से तुम सभी सुखों को प्राप्त करोगे।

तां नामगाथां विचरन्ति भूमौ गीत्वा सदा ते पुरुषाः सुधन्याः।

ये नामगाथा परतत्त्वनिष्ठास्ते धन्य धन्याः भुवि कृत्यपुण्याः।।411।।

जो लोग श्रीरामनाम की महिमा का गान करते हुए पृथिवी पर विचरण करते हैं वे लोग सदासर्वदा के लिए धन्य हैं और जो लोग श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व में निष्ठा रखने वाले हैं वे लोग पृथिवी में धन्यातिधन्य हैं सदा कृतार्थ रूप हैं।

रामनाम जनासक्तो रामनाम जनप्रियः।

स पूतो निर्विकल्पश्च सर्वपापबहिर्मुखः।।412।।

श्रीरामनामानुरागीजनों में जो आसक्त है और श्रीरामनामानुरागीजन जिसे प्रिय हैं वही परम पवित्र है सभी कल्पनाओं से रहित है, एवं समस्त पापों से मुक्त है।

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह चार्जुन।

तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौंघा यान्ति रामास्पदं परम्।।413।।

हे अर्जुन! इस संसार में जो लोग बिना श्रद्धा के प्रसंगवश श्रीरामनाम का जप किया करते हैं उनके भी सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वे भी भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं।

घोषयेन्नाम निर्वाण कारणं यस्त्वनन्य धीः ।
तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तुं कैः शक्यते भुवि ।।414।।

हे पार्थ! अनन्यबुद्धि जो भक्त मोक्षकारण श्रीरामनाम का उच्चारण करता है। उसके पुण्यफल का वर्णन पृथिवी पर कौन कर सकता है?

तस्मान्नामानि कौन्तेय भजस्व –दृढ चेतसा।
रामनाम समायुक्तास्ते मे प्रियतमास्सदा ।।415।।

हे कुन्ती पुत्र अर्जुन! तुम दृढचित्त होकर भगवान् के नामों का भजन करो। जो लोग श्रीरामनाम से युक्त हैं वे मुझे सदा सर्वदा अत्यन्त प्रिय हैं।

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः ।।416।।

जो लोग खेद रहित चित्त से निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते हैं उन लोगों के मध्य में सदासर्वदा विशेष रूप से श्रीरामजी निवास करते हैं।

श्रद्धया हेलया वाऽपि गायन्ति नाम मङ्गलम्।
तेषां मध्ये परं नाम वसेन्नित्यं न संशयः ।।1417।।

जो श्रद्धापूर्वक अथवा अनादरभाव से महामंगलस्वरूप श्रीरामनाम का गान करते हैं उनके मध्य में नित्य श्रीरामनाम महाराज निवास करते हैं इसमें संशय नहीं है।

न तत्र विस्मयः कार्यो भवता रामनाम्नि च।
सत्यं वदामि ते पार्थ प्रियाय मम चात्मने ।।418।।

हे अर्जुन! श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व के विषय में आश्चर्य मत करना। तुम मुझे प्रिय एवं मेरी आत्मा हो इसलिए तुमसे सत्य कहता हूँ।

यन्नाम स्मरतो नित्यं महाह्यज्ञान बन्धनम्।
छिद्यते चाश्रमेणैव तमहं राघवं भजे ।।419।।

जिस भगवान् श्रीराघवेन्द्र के नाम का नित्य स्मरण करने से बिना श्रम के ही महान् अज्ञान का बन्धन भी छिन्न भिन्न हो जाता है उन भगवान् श्रीराघवेन्द्र का मैं भजन करता हूँ।

श्रद्धया परया युक्तो रामनाम परायणः।
करोति जानकीजानिस्तस्य चिन्तां पुनः पुनः।।420।।

जो सर्वोत्कृष्ट श्रद्धा से युक्त होकर श्रीरामनाम के परायण हैं अर्थात् भजन में लगे रहते हैं उसकी बार–बार चिन्ता श्रीजानकीनाथ भगवान् करते हैं।

अशेष पातकैर्युक्तः सर्वदोष परिप्लुतः।
स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप।। 421।।

हे शत्रुओं को तपाने वाले अर्जुन! जो सम्पूर्ण पापों से युक्त हैं और जो सभी प्रकार के दोषों में निमग्न हैं वह भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाता है जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है अर्थात् जो श्रीरामनाम को अपना मानकर भजन करने लगता है।

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम्।
क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम।।422।।

मैं सदा सर्वदा प्रेम से जगद्गुरु श्रीरामनाम का स्मरण करता हूँ। क्षण भर भी नहीं भूलता हूँ यह मेरी वाणी सत्य है सत्य है।

पर निन्दा समायुक्तः परदार परायणः।
स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप।।423।।

हे परन्तप अर्जुन! जो दूसरों की निन्दा करने में लगे हुए हैं और जो परस्त्री गमन करने वाले हैं वे भी सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है।

पर हिंसा समायुक्तो लोभ मोह समाकुलः।
सः पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम्नि सदा रुचिः।।424।।

जो दूसरों की हिंसा करने में लगे हुए हैं और जो लोभ मोह से सम्यक् व्याकुल हैं वे भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाते हैं जिनकी श्रीरामनाम में सदा रूचि बनी रहती है।

अशेष पातकैर्व्याप्ताः स्वधर्म परिवर्जिताः ।
एते तरन्ति पापिष्ठा रामनाम प्रसादतः ।।425।।

जो सम्पूर्ण पापों से पूर्णतया व्याप्त हैं और जो अपने धर्म कर्म से शून्य है ऐसे पापिष्ठ भी श्रीरामनाम की कृपा से तर जाते हैं।

तिष्ठन्ति रामनामानि तिष्ठन्ति वदनानि च ।
तथापि नरकेमूढाः पतन्तीत्यद्भुतं महत् ।।426।।

भगवान् श्रीराम के सुन्दर–सुन्दर नाम विद्यमान हैं और सुन्दर मुख मण्डल भी विराजमान है फिर भी मूर्ख लोग नरक में गिर रहे हैं यह महान् आश्चर्य है।

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम् ।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते ।।427।।

जो सारे कर्मों को करते हैं और श्रीरामनाम का गान करते हैं वे लोग दिव्य धाम में जाते हैं और वहाँ श्रीरामजी के साथ आनन्द का अनुभव करते हैं।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम् ।
किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं धनञ्जय ।।428।।

हे अर्जुन[1]! भगवान् श्रीराम के मधुर नामों को छोड़कर अन्य सभी कर्मों को करते हैं इससे बढ़कर आश्चर्य क्या है? उनका सारा प्रयास व्यर्थ है।

शान्तोदान्तः क्षमाशीलो रामनामार्थ चिन्तकः ।
तस्य सद्गुण संख्यानं वक्तुंनैव क्षमोप्यहम् ।।429।।

जो मन एवं इन्द्रियों का निग्रह करते हुए श्रीरामनाम के अर्थों का चिन्तन करते हैं उनके सद्गुणों की संख्या का वर्णन मैं भी नहीं कर सकता।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति ये नराः ।
अप्राप्य सद्गतिं पार्थ भ्रमन्ति कर्म वर्त्मसु ।।430।।

---

1. राम नाम अवलम्बबिनु परमारथकी आस।
बरसत वारिद बूंद गहि चाहत चढ़न अकास।।
राम नाम को अंक है सब साधन है शून।
अंक गये कछु हाथ नहीं अंक रहे दस गून।।

जो लोग श्रीरामनाम को छोड़कर दूसरे सारे कर्म करते हैं वे लोग सद्गति न प्राप्त करके कर्म मार्ग में ही घूमते रहते हैं।

सर्वयोनिषु कौन्तेय भ्रमन्ति ते नराधमाः।
विसृज्य रामनामानि माया मोहित चेतसः।।431।।

जो श्रीरामनाम का त्याग करके माया से मोहित चित्त वाले हो गये हैं वे नराधम हैं हे अर्जुन! वे लोग सभी योनियों में घूमते रहते हैं।

यदृच्छयापि श्रीरामनाम गृह्णन्ति सादरम्।
स पूतः सर्वपापेभ्यो रामनाम प्रसादतः।।432।।

जो लोग दैववश बिना प्रेम के अथवा आदरपूर्वक श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे भी श्रीरामनाम की कृपा से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं।

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पकाः।
श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात्।।433।।

जो लोग जिस किसी प्रकार से केवल श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे लोग बिना परिश्रम के ही सादर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्येत् सादरं सखे।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।434।।

जो लोग श्रीरामनामानुरागी साधकों को देखकर उनका आदर करते हैं हे मित्र अर्जुन! वे भी भगवान् के दिव्य धाम साकेत में जाकर भगवान् श्रीरामजी के साथ आनन्दानुभव करते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा प्रणमन्ति च ये नराः।
ते पूतास्सर्वपापेभ्यः कर्मणा तेन हेतुना।।435।।

श्रीरामनामानुरागी भक्तों को देखकर जो उन्हें सादर प्रणाम करते हैं वे लोग उस कर्म के प्रभाव से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नरः।
स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम्।।436।।

श्रीरामनामानुरागी भक्तों का दर्शन करके जिनका चित्तभाव से द्रवित हो

जाता है वे लोग भी परमानन्द सागर दिव्य लोक में जाते हैं।

गीत्वा च रामनामानि विचरेद्राम सन्निधौ।
इदं ब्रवीमि ते सत्यं तस्य वश्यो जगत्पतिः।।437।।

जो लोग श्रीरामनाम का गान करते हुए श्रीरामजी के समीप विचरण करते रहते हैं अर्थात् जो भगवन्नाम संकीर्तन करते हुए भगवान् की परिक्रमा करते रहते हैं हे अर्जुन! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उस भक्त के अधीन भगवान् हो जाते हैं।

गीत्वा च रामनामानि ये रुदन्ति नरोत्तमाः।
तेषां हरिः परिक्रीतो परमेशेन संयुतः।। 438।।

जो श्रेष्ठपुरुष श्रीरामनाम का गान करते हुए रुदन करते रहते हैं उनके हाथों भगवान् श्रीराम के साथ मैं बिक जाता हूँ अर्थात् उनके वश में हो जाता हूँ।

गीत्वा च रामनामेति पतन्ति भुवि ये नराः।
ते वै धन्यातिधन्याश्च वैष्णवानां शिरोमणिः।।439।।

जो श्रीरामनाम का गान करते हुए पृथिवी पर गिर पड़ते हैं वे लोग धन्यातिधन्य एवं वैष्णवों में अग्रगण्य हैं।

यदृच्छया न गृह्णन्ति रामनामेति मङ्गलम्।
अदृश्यास्ते जनाः पार्थ दृष्टिमात्रेण वर्जिताः।।440।।

परममंगल श्रीरामनाम का उच्चारण जो दैववश भी नहीं करते हैं हे अर्जुन! ऐसे लोगों का दर्शन नहीं करना चाहिए यदि कदाचित् सामने आ जाये तो मुख फेर लेना चाहिए अथवा नेत्र बन्द कर लेना चाहिए तात्पर्य यह है कि विमुखों के मुख देखने से सम्भाषण से, एवं स्पर्श से पाप ताप प्राप्त होता है अत: सावधान रहना चाहिए।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु येषामुच्चारणं नहि।
भाग्यहीनास्तु ते नीचाः पापिनामग्रगामिनः।।441।।

स्वप्न में भी जिनके मुख से श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं हुआ, वे भाग्यहीन, नीच एवं पापियों में अग्रगण्य हैं।

भिक्षया ये न गृह्णन्ति रामनाम परमेश्वरम्।
लोकोपचारनिरतास्ते वै पाखण्डिनो ध्रुवम्।।442।।

जो लोग भिक्षा के कारण अर्थात् श्रीरामनाम कहेंगे तो भिक्षा नहीं मिलेगा इस भय से परमेश्वर श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करते हैं वे लोग लोकवासना में बंधे हुए हैं और निश्चित ही पाखण्डी हैं।

रामनाम जपाज्जीवा अनायासेन संसृतिम्।
तरन्त्येव तरन्त्येव तरन्त्येव सुनिश्चितम्।।443।।

श्रीरामनाम के जप से जीव बिना परिश्रम के ही निश्चित ही संसार चक्र को तर जाते हैं तर जाते हैं तर जाते हैं।

तत्रैवार्जुनवाक्यं श्रीकृष्णं प्रति

वहीं अर्जुनजी का वाक्य श्रीकृष्ण के प्रति

भवत्येव भवत्येव भवत्येव महामते।
सर्वपाप परिव्याप्तास्तरन्ति नामबान्धवाः।।444।।

हे महाबुद्धे! आपने जैसा कहा वैसा ही है वैसा ही है। जो सम्पूर्ण पाप से युक्त है वह यदि श्रीरामनाम को अपना बना ले तो निश्चित ही भवसागर से पार हो जायेगा।

नमोस्तु नामरूपाय नमोस्तु नामजल्पिने।
नमोस्तु नाम साध्याय वेदवेद्याय शाश्वते।।445।।

श्रीरामनाम के परात्पर स्वरूप को नमस्कार हो, श्रीरामनाम के जप करने वालों को नमस्कार हो, 'एवं श्रीरामनाम के' परम साध्य फलस्वरूप समस्त वेदों से प्रतिपाद्य तथा अविनाशी भगवान् श्रीराम को नमस्कार हो।

नमोस्तु नाम नित्याय नमो नामप्रभाविने।
नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय च।।446।।

नित्यस्वरूप, परम प्रभावी, परम विशुद्ध और समस्त नाममय श्रीरामनाम को नमस्कार हो।

श्रीरामनाम माहात्म्यं यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः।
स याति परमं स्थानं रामनाम प्रसादतः।।447।।

जो श्रद्धाभक्ति से युक्त होकर श्रीरामनाम के माहात्म्य को पढेगा वह

श्रीरामनाम की कृपा से सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करेगा।

रामनामार्थमुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम्।

ये ध्यायन्ति सदा स्नेहात्ते कृतार्थाः जगत्त्रये।।448।।

जो श्रीरामनाम के उत्कृष्ट पवित्र एवं परम पावन अर्थों का सदा सर्वदा स्नेहपूर्वक चिन्तन करते हैं वे लोग तीनों लोकों में कृतार्थ हैं।

सौर्य्य धर्मोत्तरे

सौर्य धर्मोत्तर में

श्रीमद्रामस्य नाम्नस्तु प्रभावं निर्मलं मुने।

जपावेशवशेनैव ज्ञायते सज्जनैः क्वचित्।।449।।

हे मुने! भगवान् श्रीराम के नाम के निर्मल प्रभाव को जपावेश के द्वारा ही कुछ सज्जन लोग कहीं समझ (जान) पाते हैं सब नहीं।

मनोरथप्रदातारं सज्जनानां परं प्रियम्।

लौकिकी दुर्भगा व्रीडा हन्तारं नाम सद्यशः।।450।।

श्रीरामनाम का पवित्र यश सत्पुरुषों के मनोरथ को पूर्ण करने वाला, सन्त महापुरुषों को परम प्रिय एवं दुर्भाग्यस्वरूप लोक लज्जा का नाश करने वाला है।

सकृदुच्चरितः शब्दो रामनाम्ना विभूषितः।

कुरुते नामवत्कार्यं सर्वं मोक्षावधिं नृणाम्।।451।।

यदि श्रीरामनाम से अलंकृत शब्दों का एक बार उच्चारण किया गया तो वह शब्द मनुष्यों के मोक्ष पर्यन्त श्रीरामनाम की तरह सभी कार्यों को करता है।

परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वतः श्रुतौ।

अबुधाः नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे।।452।।

श्रीरामनाम का परम परत्व सर्वत्र वेद में प्रसिद्ध है मूर्ख लोग उसे नहीं जानते हैं और बार–बार भवसागर में गिरते हैं।

सकर्मोपासना ज्ञानमनायासेन सिद्ध्यति।

रामनाम यदा जिह्वा संजपत्यखिलेश्वरम्।।453।।

जब जिह्वा सर्वेश्वरेश्वर श्रीरामनाम का सम्यक् जप करती है उस

समय सभी कर्म, उपासना एवं ज्ञान अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं।

काशीखण्डे श्रीशिववाक्यम्

काशीखण्ड में श्रीशिवजी का वाक्य

पेयंपेयंश्रवणपुटकेरामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम्।
जल्पन्जल्पन्प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यां
वीथ्यामटतिजटिलः कोऽपि काशी निवासी।454।।

काशी में नित्य निवास करने वाले जटाधारी दयासागर कोई (भगवान् शंकर) प्राणियों की विकृति (शरीर) के प्रकृति (पंचमहाभूतों) में विलीन होने पर अर्थात् प्राणियों के शरीर त्याग (मृत्यु) के समय काशी में 'हे काशी वासियों! अपने कानरूपी दोनों से श्रीरामनामरूपी अमृत का खूब पान करो और परब्रह्म स्वरूप तारक मन्त्र का मन से निरन्तर चिन्तन करो' ऐसा कहते—कहते काशी की गलियों में घूम रहा है।

यस्यामलं प्रिययशः सुयशोविधाता तार्क्ष्य ध्वजश्च
गिरिजे नितरां तथाहम्।
प्रेम्णा वदामि च श्रृणोमि सहैव ताभ्यां तद्रामनाम
सकलेश्वरमादिदेवम्।।55।।

हे पार्वति! जिस श्रीरामनाम के सुन्दर एवं प्रिय यश को मैं ब्रह्मा तथा भगवान् विष्णु प्रेम से कहते हैं और उन दोनों के साथ मैं प्रेम से सुनता हूँ वह श्रीरामनाम सबका स्वामी एवं आदिदेव हैं।

इदमेकं परं तत्वं निर्णीतं ब्रह्मवादिभिः।
नाम व्याहरणं शुद्धं सर्वकालेषु प्रेमतः।।456।।

ब्रह्मवादी मुनियों ने यही एक परमतत्व निर्धारित किया है कि सभी कालों में अर्थात् हर क्षण प्रेमपूर्वक शुद्ध भगवन्नाम का उच्चारण किया जाये।

केदारखण्डे श्रीशंकरवाक्यं पार्वतीं प्रति

केदारखण्ड में श्रीशंकरजी का वाक्य पार्वती के प्रति

रामनाम समं तत्वं नास्ति वेदान्त गोचरम्।
यत्प्रसादात्परांसिद्धिं सम्प्राप्ता मुनयोऽमलाः।।457।।

श्रीरामनाम से बढ़कर वेदान्त का विषय कोई दूसरा तत्व नहीं है जिस श्रीरामनाम की कृपा से निर्मल महात्माओं ने परासिद्धि को प्राप्त किया है।

अतस्सर्वात्मना रामनाम रूपं स्मर प्रिये।
अनायासेन भो देवि अमरी त्वं भविष्यसि।।458।।

हे प्रिये देवि पार्वति! इसलिए तुम श्रीरामनाम के स्वरूप का स्मरण करो जिसके प्रभाव से बिना परिश्रम के ही तुम भी अविनाशी हो जाओगी।

रामनाम प्रभावेण ह्यविनाशी पदं प्रिये।
प्राप्तं मया विशेषेण सर्वेषां दुर्लभं परम्।।459।।

हे प्रिये! जो पद सभी के लिए दुर्लभ है उस अविनाशी पद को मैंने श्रीरामनाम के प्रभाव से विशेष रूप से प्राप्त कर लिया है।

अन्यानि यानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति।
कार्यार्थे संभवानीह रामनामादितः प्रिये।।460।।

हे पार्वति! भगवान् के और दूसरे जितने नाम हैं वे सभी नाम अनादि रामनाम से भक्तों के कार्यसम्पादन के लिए प्रकट हुए हैं श्रीरामनाम तो सबका मूल एवं अनादि है।

मार्कण्डेयोऽपि श्रीरामनाम संस्मृत्य सादरम्।
मृत्युं तीर्णोऽविलम्बेन रामनाम परं बलम्।।461।।

श्रीमार्कण्डेय महर्षि भी सादर श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करके अविलम्ब ही मृत्यु को पार कर गये। अत: श्रीरामनाम का बल ही सर्वोत्कृष्ट बल हैं।

तथैव नारदो योगी भक्तभूपास्तथापरे।
मृत्योर्महार्णवं तीर्त्वा सन्निमग्नाः सुधाम्बुधौ।।462।।

उसी प्रकार योगिराज नारदजी एवं दूसरे श्रेष्ठ भक्तों ने भी श्रीरामनाम का जप करके मृत्युरूपी महासागर को पार करके भगवत्सान्निध्यरूपी सुधा सागर में सदा सर्वदा के लिए निमग्न हो गये।

लम्बोदरोऽपि श्रीरामनाममाहात्म्यमुज्वलम्।
श्रुत्वा च धारितं चित्ते ततः पूज्यः सुरासुरैः।।463।।

श्रीगणेशजी ने भी श्रीरामनाम की उज्ज्वल महिमा को सुनकर अपने चित्त में धारण किया तत्पश्चाद् देवताओं और असुरों से भी परम पूज्य हो गये।

एवं नाम प्रसादेन ऋषयो देवतास्तथा।
मनुष्याः किन्नरा नागा यक्षा विद्याधरास्तथा।।464।।
सर्वे कृतार्था अभवन् तस्मिन्तस्मिन्युगे युगे।
नातः परतरोपायो दृश्यते श्रूयतेऽपि वा।।465।।

इसी प्रकार श्रीरामनाम की कृपा से ऋषि, देवता, मनुष्य, किन्नर, नाग, यक्ष एवं विद्याधर आदि सभी लोग उस–उस युग में कृतार्थ हो गये। अत: श्रीरामनाम से बढ़कर दूसरा कोई उपाय न देखा जाता है और न सुना जाता है।

निर्वाणखण्डे श्रीशिववाक्यं श्रीरामं प्रति

निर्वाणखण्ड में श्रीशिवजी का वाक्य श्रीरामजी के प्रति

भवन्नामामृतं पीत्वा गीत्वा च भवतां यशः।
शिवोऽहं सर्वदेवैश्च पूजनीयो दयानिधे।।466।।

हे रामजी! हे दयानिधे! मैं आपके श्रीरामनामरूपी अमृत का पान करके एवं आपकी कथारूपी अमृत का गान करके सभी देवताओं से पूज्य हो गया हूँ।

निराकारं च साकारं सगुणं निर्गुणं विभो।
उभौ विहाय सर्वस्वं तव नाम स्मराम्यहम्।।467।।

हे विभो ! मैं निराकार, साकार, निर्गुण एवं सगुण दोनों को छोड़कर आपके श्रीरामनाम का स्मरण करता हूँ।

मन्दात्मानो न जानन्ति बहिरर्थ स्पृहायुताः।
रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदान्त सम्मतम्।।468।।

सभी वेदान्तों का अभिमत परब्रह्म श्रीरामनाम ही है इस रहस्य को बाह्य पदार्थों में आसक्ति रखने वाले मन्दमति लोग नहीं जानते हैं।

जगत्प्रभुं परानन्दं कारणं सदसत्परम्।
रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परेश्वरम्।।469।।

श्रीरामनाम ही जगत् में परम समर्थ, परमानन्द का परम हेतु, स्थूल सूक्ष्म से परे परम ईश्वर परात्परेश्वर एवं सभी से उपास्य है।

सर्वेषां मत साराणामिदमेकं महन्मतम्।

जानकी जीवनस्याथ नामसंकीर्तनं परम्।।470।।

सभी मतों का सार एवं श्रेष्ठमत एकमात्र यही है कि श्रीजानकी जीवन भगवान् श्रीरामजी के नाम का संकीर्तन ही सर्वोत्तम है।

कोशलखण्डे सूतवाक्यमृषीन् प्रति

कोशलखण्ड में सूतजी का वाक्य ऋषियों के प्रति

न तत्पुराणो नहि यत्र रामो यस्यां न रामो नहि संहिता सा।

स नेतिहासो नहि यत्र रामः काव्यं न तत्स्यान्न हि यत्र रामः।।471।।

वास्तव में वह पुराण पुराण नहीं है, वह संहिता संहिता नहीं है, वह इतिहास इतिहास नहीं है और वह काव्य काव्य नहीं है, जहाँ श्रीरामनाम नहीं है। तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम से रहित ग्रन्थ आदरणीय एवं कल्याणप्रद तो नहीं है अपितु ग्रन्थि प्रदान करने वाला एवं संशयजनक है।

शास्त्रं न तत्स्यान्नहि यत्र रामस्तीर्थं न तद्यत्र न रामचन्द्रः।

यागः स आगो नहि यत्र रामो योगस्स रोगो नहि यत्र रामः।।472।।

वास्तव में वह शास्त्र – शास्त्र नहीं है एवं वह तीर्थ तीर्थ नहीं है जहाँ श्रीरामनाम का परत्व, महत्व एवं पूजा नहीं है। वह यज्ञ यज्ञ नहीं है अपराध है एवं–वह योग योग नहीं है रोग है जहाँ श्रीरामनाम नहीं है।

न सा सभा यत्र न रामचन्द्रः कालोऽप्यकालः कलिरेव सोऽस्ति।

संकीर्त्यते यत्र न रामदेवो विद्याप्यविद्या रहिताह्यनेन।।473।।

वह सभा–सभा नहीं है जहाँ श्रीरामनाम की चर्चा नहीं है, वह समय–समय नहीं अकाल है कलियुगस्वरूप है जिसमें श्रीरामनाम का उच्चारण न हो एवं वह विद्या विद्या नहीं अविद्या है जो श्रीरामनाम से रहित है।

स्थानं भवस्थानमरामकीर्ति रामेतिनामामृत शून्यमास्यम्।

सर्पालयं प्रेतगृहं गृहं तद् यत्रार्च्यते नैव महेशपूज्यः।।474।।

वह स्थान महाभयप्रद हैं जहाँ श्रीरामजी का यशोगान न हो, वह मुख

मलीन एवं शून्य है जिसमें श्रीरामनामरूपी अमृत न हो, वह घर सर्पों एवं प्रेतों का घर है जहाँ भगवान् शंकर से पूज्य श्रीरामजी की पूजा न होती हो।

उक्तेन किं स्याद् बहुनात विश्वं सर्वं मृषास्याद्यदि रामशून्यम्।

एतच्च कृष्णः पुनराह गङ्गां स्पृष्ट्वोपवीतं जपमालिकां च ।।475।।

हे मुनियों! बहुत कहने से क्या लाभ? इतना सत्य समझो कि—श्रीरामनाम से शून्य सम्पूर्ण विश्व भी झूठा ही है इस बात को श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजी ने श्रीगंगाजी में खड़े होकर हाथ में यज्ञोपवीत और जप करने वाली माला को लेकर कहा था। तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम सत्य है और श्रीरामनाम के सम्बन्ध से ही दूसरी कोई वस्तु सत्य है अन्य नहीं।

रकारोध्वजवत्प्रोक्तो मकारश्छत्रवत्तथा।

सर्ववर्णशिरस्थो हि राम इत्युच्यते बुधैः।।476।।

विद्वानों[1] ने श्रीरामनाम के दोनों अक्षरों में रेफ (र) को ध्वजा की तरह एवं 'म' को छत्र की तरह सभी वर्णों के शिर के आभूषण के रूप में कहा है। तात्पर्य है कि 'र' और 'म' ये दोनों वर्ण सभी वर्णों के आभूषण हैं जिस शब्द में वाक्य में 'र' और 'म' नहीं है वह शब्द एवं वाक्य श्रीहीन एवं उपेक्षणीय हैं।

रकारार्थो भवेद्रामः परमानन्दविग्रहः।

मकारार्थो भवेत्सीता सच्चिदानन्दरूपिणी।।477।।

श्रीरामनाम में र का अर्थ परमानन्द विग्रह स्वरूप श्रीरामजी हैं और 'म' का अर्थ सच्चिदानन्द—स्वरूपिणी श्रीसीताजी है।

जैमिनि पुराणे

जैमिनि पुराण में

रामनाम परं स्वादु भेदज्ञा रसना च या।

तन्नाम रसनेत्याहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः।।478।।

श्रीरामनाम परम सुस्वादु है इस रहस्य को जो जानती है अर्थात् जो नित्य निरन्तर श्रीरामनाम के स्वाद का आस्वादन करती है उसे ही तत्वदर्शी मुनियों ने जिह्वा कहा है अन्य को मांस का टुकड़ा।

---

1. एक छत्र एक मुकुटमणि सब वरणनि पर जोऊ।
तुलसी रघुवर नामके चरण विराजत दोऊ ।।

कर्माधीनं जगत्सर्वं विष्णुना निर्मितं पुरा।
तत्कर्म केशवाधीनं रामनाम्ना विनश्यति।।479।।

प्राचीन समय में भगवान् नारायण ने सम्पूर्ण जगत् को जीवों के कर्मानुसार बनाया। अर्थात् जगत् कर्म के अधीन है एवं कर्म भगवान् के अधीन हैं और कर्म का नाश श्रीरामनाम के जप से होता है तात्पर्य यह है कि जब तक कर्म रहेंगे तब तक जगत् का सम्बन्ध बना रहेगा अत: कर्म का नाश आवश्यक है श्रीरामनाम के जप के बिना कर्म का नाश सम्भव नहीं है अत: श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे परात्परविलासनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते उपपुराणेतिहासादिनिरूपणनाम द्वितीय: प्रमोद:।।2।।



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलित:

तृतीय: प्रमोद:

संहितोक्त वचनानि

अगस्त्य संहितायां श्रीशंकरवाक्यं श्रीरामचन्द्रं प्रति

अगस्तसंहिता में श्रीशंकरजी का वाक्य श्रीरामचन्द्रजी के प्रति

अहं भवन्नामजपन्कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या।
मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽपि दिशामि मन्त्रं तव रामनाम।।480।।

हे श्रीरामजी! भवानी के साथ मैं आपके मंगलमय श्रीरामनाम का जप करते हुए कृतार्थ होकर काशी में रहता हूँ। मरणासन्न जीवों को उनके मोक्ष के लिए उनके दक्षिण कर्ण में आपके श्रीरामनाम का उपदेश करता हूँ[1]।

1. यह जनश्रुति है कि काशी में जब कोई जीव मरता है उसका दाहिना कान ऊपर होता है। काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ विशोकी ।।

रकारो रामचन्द्रस्स्यात्सच्चिदानन्दविग्रहः।

अकारो जानकीप्रोक्ता मकारो लक्ष्मणः स्वराट्।।481।।

श्रीरामनाम में 'र' का अर्थ सच्चिदानन्द विग्रह स्वरूप श्रीरामजी है 'अ' का अर्थ श्रीजानकीजी है और 'म' का अर्थ स्वयमेव प्रकाशमान श्रीलक्ष्मणजी हैं।

रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः।

रामरामेति सच्छब्दो जीवो जपति सर्वदा।।482।।

अजपाजप की उत्तम प्रक्रिया यह है कि श्वास के बाहर निकलते समय 'रा' का उच्चारण करें एवं श्वास के भीतर जाते समय 'म' का उच्चारण करें इस प्रकार राम राम इस पवित्र शब्द को जीव सदा सर्वदा जप करता है।

दैन्यं दिनं तु दुरितं पक्षमासर्त्तुवर्षजम्।

सर्वं दहति निःशेषं तूलाचलमिवानलः।।483।।

वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष एवं एक दिन में किये गये सारे पाप एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण करने से साकल्येन उसी प्रकार भस्म हो जाता है जैसे रूई का पर्वत अग्नि के स्पर्श होते ही भस्म हो जाता है।

नामसंकीर्तनञ्चैव गुणानामपि कीर्त्तनम्।

भक्त्या श्रीरामचन्द्रस्य वचसा शुद्धिरिष्यते।।484।।

अपनी वाणी से भगवान् श्रीसीताराम जी के नाम का भक्तिपूर्वक संकीर्तन एवं भगवान् के गुण का कीर्तन, गायन ही वाणी एवं जीवन की शुद्धि है तात्पर्य यह है कि हमारा जीवन एवं हमारी वाणी तभी शुद्ध होगी जब हम अपनी वाणी से भगवन्नाम संकीर्तन एवं भगवद्गुणानुवाद करें।

विश्वामित्र संहितायां विश्वामित्रवाक्यं वैश्यं प्रति

विश्वामित्र संहिता में विश्वामित्र जी का वाक्य वैश्य के प्रति

विश्रुतानि बहून्येव तीर्थानि विविधानि च।

कोट्यंशान्नापि तुल्यानि नाम संकीर्त्तनस्य वै।।485।।

वेदों एवं पुराणों में अनेक प्रकार से बहुत सारे तीर्थ प्रसिद्ध हैं परन्तु वे सारे तीर्थ निश्चित रूप से श्रीरामनाम संकीर्तन के करोड़ों अंश की बराबरी भी नहीं कर सकते हैं।

धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता कलौयुगे।

संविहायाथ योगादीन् रामनामैक नैष्ठिकाः।।486।।

वे लोग बड़े ही सौभाग्यशाली, धन्यातिधन्य, पुण्यात्मा एवं भगवत्प्रपन्न हैं। जो योगादि सारे साधनों को छोड़ करके श्रीरामनाम के जप में पूर्णनिष्ठा रखते हैं।

रकारो रामरूपस्तु मकारस्तस्य सेवकः।

आचार्यस्तु ह्याकारः स्यात्तयोः संयोजनाय च।।487।।

श्रीरामनाम में 'र' का अर्थ भगवान् राम है 'म' का अर्थ श्रीरामजी के सेवक 'जीव' मात्र है। 'आ' का अर्थ जीव को भगवान् से मिलाने वाला आचार्य है।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।

स सर्वसिद्धिमाप्नोति सत्यं नैवात्र संशयः।।488।।

जो क्षणभर भी मधुर स्वर में श्रीराम राम राम ऐसा नित्य जप करता है। उसे सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः।

शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भकारकः।।489।।

लब्धं परं पदं तेन जन्म कोटिभिरर्जितम्।

कीर्तितं येन महता श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।490।।

ब्राह्मण की हत्या करने वाला, शराबी, चोर, गुरुपत्नीगामी, शरणागत की हत्या करने वाला और मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला मनुष्य उस परमपद को सहज में प्राप्त कर लेता है जो करोड़ों जन्मों के अर्जित सुकृत से प्राप्त होने वाला है जिसने 'श्रीराम' इन दोनों अक्षरों का कीर्तन कर लिया।

ज्ञातमध्यात्मशास्त्रं च प्राप्तं तेनामृतं महत्।

कीर्तितं येन वचसा श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।491।।

जिसने रा म इन दो अक्षरों को अपनी वाणी से एक बार उच्चारण कर लिया उसने सम्पूर्ण अध्यात्मशास्त्र (वेदान्त) का अध्ययन कर लिया और परम मोक्ष स्वरूप महान् अमृत को प्राप्त कर लिया।

सर्वमन्त्रमयं नाम यन्त्रास्पदमनुत्तमम्।

स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत्।।492।।

श्रीरामनाम सर्वमन्त्रमय एवं सर्वोत्तम यन्त्र स्वरूप है जिसके जप करने से अति दुर्लभ परा सिद्धि स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाती है।

वृथा नाना प्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः।

यत्नं कुर्वन्त्यहो मूढास्त्यक्त्वा श्रीनाम सुन्दरम्।।493।।

बड़े आश्चर्य की बात है कि परमसुन्दर श्रीरामनाम को छोड़कर मूर्ख लोग अनेक प्रयोगों, मन्त्रों एवं तन्त्रों में व्यर्थ में परिश्रम करते हैं।

यस्य संस्मरणादेव सर्वार्थाश्चक्षुगोचराः।

भवन्त्येवानायासेन तच्छ्रीराममहं भजे।।494।।

जिनका सम्यक् स्मरण करने से सभी पदार्थों का अनायास ही प्रत्यक्ष दर्शन होने लगता है उन भगवान् श्रीरामजी का मैं भजन करता हूँ।

सौर संहितायाम्

सौर संहिता में

श्रीरामनाममनिशं परिकीर्त्तनीयं वर्तेत मोद सु निधानमशेष सारम्।

जन्मार्जितानि विविधान्यपहाय दुःखान्यत्यन्त धर्मनिचयं परधाममेति।।495।।

आनन्द के सार स्वरूप श्रीरामनाम का कीर्तन सतत करना चाहिये ऐसा करने से जीव अनेक जन्मों में किये गये, विविध पापों से उत्पन्न होने वाले दुःख से रहित होकर अत्यन्त पुण्य समूह को प्राप्त कर परम धाम को जाता है।

ससागरां महीं दत्त्वा शुद्धकाञ्चन पूर्णिताम्।

यत्फलं लभते लोके नामोच्चारात्ततोऽधिकम्।।496।।

समस्त समुद्रों के साथ शुद्ध सुवर्णयुक्त पृथिवी का किसी सुपात्र को दान करके जो फल प्राप्त होता है लोक में, उससे कई गुना अधिक फल श्रीरामनाम के उच्चारण से होता है।

वाच्यश्श्रीरामचन्द्रस्तु वाचको नाम संस्मृतम्।

वाच्यवाचक सम्बन्धो नित्यमेव न संशयः।।497।।

भगवान् श्रीराम वाच्य हैं और वाचक श्रीरामनाम है वाच्य और वाचक का सम्बन्ध नित्य होता है इसमें संशय नहीं है।

जाबालि संहितायाम्

जाबालिसंहिता में

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम्।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम्।।498।।

मुमुक्षुपुरुषों के लिए दिन रात निरन्तर परम जप, ज्ञान, ध्यान एवं अनेक प्रकार से कीर्तन के योग्य श्रीरामनाम ही है।

श्रीरामनाम सामर्थ्यादखिलेष्टं करे स्थितम्।
भवन्ति कृत पुण्यानां यथाकल्पतरोर्धनम्।।499।।

श्रीरामनाम के जप करने वालों के लिए अखिल अभीष्ट पदार्थ श्रीरामनाम के सामर्थ्य से उनके करतल में वैसे ही स्थित हो जाता है जैसे पुण्यात्मा पुरुषों के लिए कल्पवृक्ष से सम्पूर्ण धन उपस्थित हो जाता है।

नाम्नि यस्य रतिर्नास्ति स वै चाण्डालतोऽधिकः।
सम्भाषणं न कर्तव्यं तेनसह नामतत्परैः।।500।।

श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वह तो निश्चित ही चाण्डाल है श्रीरामनामानुरागी भक्तों को उनसे बातचीत नहीं करना चाहिए।

रामनाम प्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौख्यं सर्वेशजं परम्।।501।।

श्रीरामनाम की दिव्य प्रभा जिसके हृदय कमल में प्रकाशित होती है उस महात्मा के लिए सर्वेश्वर सम्बन्धी सभी उत्कृष्ट सुख सहज में सुलभ हो जाते हैं।

साधनेन बिना सिद्धिर्दृष्टं नाम्नैव संस्फुटम्।
अन्यत्र साधनैः दुखैः दुर्लभं तन्महत् सुखम्।502।।

बिना साधन श्रम के ही श्रीरामनाम से सभी सिद्धि सुख सुलभ हो जाती है। श्रीरामनाम के बिना दूसरे दुःखप्रद अनेक साधनों से वह महान् सुख नहीं प्राप्त हो सकता है।

सूतसंहितायाम्

सूतसंहिता में

यः श्रीरामपदं नरः प्रतिपदं संकीर्तयन्तत्क्षणान्मुक्तो-
दुष्कृतराशितो बुधजनैः पूज्यो विवस्वत्प्रभः।
त्यक्त्वा संसृति मृत्यु दुःख पटलं संशुद्धचित्तः पुमान्-
श्रीरामास्पदमुन्नतं पर पदं प्राप्नोत्यायासं विना।।503।।

जो मनुष्य पग–पग पर श्रीरामनाम का संकीर्तन करता है वह उसी क्षण से पापराशियों से मुक्त हो जाता है, सभी देवताओं का पूज्य हो जाता है, सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है। संसार चक्र, मृत्यु एवं दुःख समूह का त्याग करके परम विशुद्ध चित्त होकर बिना प्रयास के ही सबसे उन्नत परम पद श्रीरामधाम को प्राप्त करता है।

रिपवस्तस्य नश्यन्ति न बाधन्ते ग्रहाश्च तम्।
राक्षसाश्च न खादन्ति नरं रामेति वादिनम्।।504।।

जो[1] श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके सारे शत्रु नष्ट हो जाते हैं कोई भी ग्रह उसे पीडित नहीं करते हैं और राक्षस, भूत प्रेतादि उसका भक्षण नहीं कर सकते हैं।

अहो धैर्यमहोधैर्यमहोधैर्यमिदं नृणाम्।
रामनाम्नि स्थिते लोके न भजन्ति बहिर्मुखाः।।505।।

आश्चर्य की बात है कि मनुष्यों का यह कैसा अद्भुत धैर्य है कि इस लोक में श्रीरामनाम के विद्यमान होने पर भी बहिर्मुखी वृत्ति वाले लोग भजन नहीं कर रहे हैं।

रामनामामृतं पीत्वा भवेन्नित्यं निरामयम्।
सिद्धान्तं सारमित्येकं साधूनां भावितात्मनाम्।।506।।

शुद्ध अन्तःकरण वाले साधु सन्तों का सिद्धान्तसार एक यही है कि श्रीरामनाम रूपी अमृत का पान करके सदा सर्वदा के लिए समस्त रोगों से मुक्त हो जाओ।

---

1. जब जानकी नाथ सहाय करे तब कौन विगार करे नर तेरो।
सूरज मंगल सोम भृगुसुत बुध अरु गुरु वरदायक प्रेरो।
राहुकेतु की कौन गम्यता चन्द्र शनिश्चर होत हैं चेरो

श्रीरामं रामभद्रं च सीतारामं सुखाकरम्।

इतीरयन्ति ये नित्यं ते वै धन्यतमा नराः।।507।।

महासुखखानि श्रीराम, रामभद्र और सीताराम इस प्रकार जो भगवान् के नामों का नित्य उच्चारण करते हैं वे लोग निश्चित ही धन्य हैं।

ब्रह्म संहितायां श्रीशिववाक्यम्

ब्रह्मसंहिता में श्रीशिवजी का वाक्य

रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैति जन्तुः।

कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः।।508।।

'श्रीराम' इन दोनों अक्षरों को आदरपूर्वक सदा सर्वदा स्मरण करने वाला जीव मुक्ति को प्राप्त करता है। इस घोर कलियुग में कलुषित हृदय वाले जीवों का किसी दूसरे धर्म में निश्चय ही अधिकार नहीं है।

यन्नामकीर्त्तन फलं विविधं निशम्य न श्रद्दधाति मनुते यदुतार्थवादम्।

यो मानुषस्तमिह दुःखचये क्षिपामि संसार घोर विविधार्त्तिनिपीडिताङ्गम्।।

जो मनुष्य श्रीरामनाम के कीर्तन, स्मरण के विविध प्रकार के फलों को सुनकर श्रीरामनाम में श्रद्धा नहीं करता है बल्कि महिमा को अर्थवादमात्र मानता है। संसार के अनेक घोर दुःख से पीडित अंग वाले उस मनुष्य को मैं दुःख समुद्र में डाल देता हूँ। ।।509।।

कलिप्रभावतो नष्टाः सद्ग्रन्थानां कथाः शुभाः।

पाखण्डैर्निर्मितं नानामतं श्रीनाम वर्जितम्।।510।।

कलियुग के प्रभाव से सद्ग्रन्थों की शुभ कथाएँ नष्ट हो गयी हैं। पाखण्डियों ने श्रीरामनाम से रहित भ्रमावह अनेक मतों का निर्माण किया है।

अतस्सर्वं परित्यज्य नामसंस्मरणे रताः।

त एव कृतकृत्याश्च सर्व वेदार्थ कोविदाः।।511।।

इसीलिए अन्य सभी साधनों को छोड़कर जो श्रीरामनाम के स्मरण में लगे रहते हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ एवं समस्त वेदार्थ के पण्डित हैं।

श्रीरामेति वदन् जीवो याति ब्रह्म सनातनम्।
सर्वाचारविहीनोऽपि ताप क्लेशादि संयुतः।।512।।

जो सभी सदाचार से रहित हैं एवं सन्तापक्लेशादि से युक्त है वे भी जीब श्रीरामनाम का उच्चारण करके सनातन ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं।

बोधायन संहितायाम्

बोधायनसंहिता में

इष्टापूर्त्तानि कर्माणि सुबहूनि कृतान्यपि।
भव हेतूनि तान्येव रामनाम्ना सुमुक्तयः।।513।।

यज्ञादिक पुण्य कर्मों के सम्यक् अनुष्ठान होने पर भी जितने शुभ कर्म हैं वे सारे संसार के ही कारण हैं मुक्ति में नहीं। मुक्ति तो श्रीरामनाम से ही हो सकती है अन्य साधनों से नहीं।

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु सदा सर्वत्र कीर्त्तनम्।
नाशौचं कीर्त्तने तस्य स पवित्रकरो यतः।।514।।

श्रीरामनाम का सदा सर्वदा कीर्तन करना चाहिए श्रीरामनाम के संकीर्तन में शुचि अशुचि का विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रीरामनाम स्वतः पवित्र है और अपवित्र को भी पवित्र बनाने वाला है।

रामनामानि लोकेऽस्मिन् सर्वदा यस्तु कीर्त्तयेत्।
तस्यापराधकोटिस्तु क्षमाम्येव न संशयः।।515।।

श्रीरामजी कहते हैं कि इस लोक में जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके करोड़ों अपराधों को मैं क्षमा कर देता हूँ इसमें संशय नहीं है।

न तादृशं महाभाग पापं लोकेषु विश्रुतम्।
यादृशं विप्र शार्दूल रामनाम्ना दहेन्नहि।।516।।

हे महाभाग! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! मैं इस लोक में ऐसा कोई प्रबल एवं प्रसिद्ध पाप नहीं देखता हूँ जो श्रीरामनाम के उच्चारण से भस्म न हो जाये।

श्रीरामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज।
न हि पापात्मकस्तावत्पापं कर्त्तुं क्षमः क्षितौ ।।517।।

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! श्रीरामनाम का सामर्थ्य अतुल है श्रीरामनाम के स्मरण

से जितना पाप नष्ट हो सकता है पृथिवी पर उतना पाप कोई पापी नहीं कर सकता है।

तापनीय संहितायाम्

'तापनीयसंहिता'

सर्वेषामेव दोषाणां प्रायश्चित्तं परं स्मृतम्।

अपमृत्यु प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम्।।518।।

सभी दोषों का सबसे बड़ा प्रायश्चित्त श्रीरामनाम कहा गया है जो अपमृत्यु का शमन करने वाला है मूलाविद्या अनादि अविद्या का नाशक श्रीरामनाम है।

नाम संकीर्त्तनं विद्धि अतो नान्यद्वदाम्यहम्।

सर्वस्वं रामचन्द्रस्य तन्नामानन्त वैभवम्।।519।।

इसलिए मैं दूसरी बात नहीं करता हूँ इतना सच मानो कि श्रीरामनाम का संकीर्तन भगवान् श्रीराम का भी सर्वस्व है इसलिए श्रीरामनाम का वैभव अनन्त हैं।

स्वप्नेऽपि यो वदेन्नित्यं रामनाम परात्परम्।

सोऽपि पातकराशीनां दाहको भवति ध्रुवम्।।520।।

जो स्वप्न में भी परात्पर श्रीरामनाम का नित्य उच्चारण करते हैं उनके भी पापराशि को श्रीरामनाम महाराज निश्चित ही भस्म कर देते हैं।

पापद्रुमकुठारोऽयं पापेन्धनदावानलम्।

पापराशितमस्तोमं रविः साक्षात्प्रभानिधिः।।521।।

पापरूपी वृक्ष के लिए कुठार के समान, पापरूपी ईंधन को जलाने के लिए दावाग्नि के समान और पापसमूहरूपी अन्धकार का नाश करने के लिए प्रभा पुञ्ज सूर्यनारायण के समान श्रीरामनाम हैं।

रामनाम परंधाम पवित्रं पावनास्पदम्।

अतः परं न सन्मन्त्रस्तारकं विद्यते क्वचित्।।522।।

श्रीरामनाम दिव्य तेज:स्वरूप, पवित्र, पवित्र करने का एकमात्र परम

स्थान है इससे बढ़कर दूसरा कोई अच्छा तारक मन्त्र नहीं है।

हिरण्यगर्भ संहितायां श्रीअगस्त्यवाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति

हिरण्यगर्भसंहिता में श्रीअगस्त्यजी का वाक्य सुतीक्ष्ण जी के प्रति

अभिरामेति यन्नाम कीर्त्तितम् विवशाच्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्।।523।।

जिन लोगों ने श्रीराम न कहकर अभिराम शब्द कहा और जो लोग विवश (पराधीन) होकर श्रीरामनाम का उच्चारण किया है उनके भी सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वे भगवान् श्रीरामजी के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं।

श्रीरामेति वदन्ब्रह्मभावमाप्नोत्यसंशयम्।
तत्त्वविद्यार्थिनो नित्यं रमन्ते चित्सुखात्मनि।।524।।

श्रीरामनाम का उच्चारण करते ही जीव बिना संशय के ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाता है। तत्वविद्या की कामना करने वाले साधक सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीरामनाम में नित्य रमण करते हैं।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते।
सर्वसिद्धान्तमित्याहुः सर्वे वै ब्रह्मवादिनः।।525।।

श्रीरामनाम ही परब्रह्म है सभी ब्रह्मवादी इसी को सर्वसिद्धान्त कहते हैं।

श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम्।
तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्युभयापहम्।।526।।

श्रीरामनाम को ही परम मन्त्र, परमपद, तारकमन्त्र एवं जन्म मृत्युरूपी भय का नाशक जानो।

अल्पेन नाम्ना कथमस्य पापक्षयो भवेदत्र न शङ्कनीयम्।
तृणादि राशिं दहतेऽल्पवह्निस्तथा महामोहमदादि नाम।।527।।

थोड़े से रामनाम से इस पापी के महान् पापों का नाश कैसे होगा? यहाँ ऐसी शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि जैसे थोड़ी सी अग्नि तृण समूह का नाश कर देती है उसी प्रकार श्रीराममनाम के स्मरण से महा मोहमदमत्सरादि का नाश हो जाता है।

पुलह संहितायाम्

पुलह संहिता में

बीजे यथा स्थितो वृक्षः शाखा पल्लव संयुतः।
तथैव सर्ववेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः।।528।।

जिस[1] प्रकार बीज में शाखा पल्लव से युक्त वृक्ष विराजमान होता है उसी प्रकार सम्पूर्णविद 'र' में व्यवस्थित हैं तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के जप स्मरणादि करने से सम्पूर्णविद शास्त्रों के अर्थ हृदय में प्रकाशित होने लगते हैं।

यथा करण्डे रत्नानि गुप्तान्यज्ञैर्न श्यन्ते।
तथैव सर्व मन्त्राश्च रकारेषु व्यवस्थिताः।।529।।

जैसे डिब्बे के भीतर रखे गये रत्नों को अज्ञानी नहीं देख पाता है उसी प्रकार सभी मन्त्र तन्त्र 'र' में व्यवस्थित है।

रकारोच्चारणेनैव बहिर्निर्याति पातकम्।
पुनः प्रवेशकाले च मकारस्तु[2] कपाटवत्।।530।।

श्रीरामनाम के 'रकार' के उच्चारण करने से शरीर के सारे पाप बाहर चले आते हैं। पुनः प्रवेश न कर सकें इसके लिए 'म' कपाट की तरह मुख बन्द कर देता है।

सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेन च।
शम्भुना रामरामेति पार्वती जपति स्फुटम्।।531।।

ब्रह्माजी के साथ सावित्रीजी, लक्ष्मीजी के साथ नारायण भगवान् और शंकरजी के साथ पार्वतीजी स्पष्ट शब्दों में राम राम ऐसा जप करते हैं।

रामरामेति रामेति स्वपन् जाग्रंस्तथा निशि।
ये जपन्ति कलौ नित्यं ते वै श्रीरामरूपिणः।।532।।

जो लोग सोते, जागते तथा रात्रि में नित्य राम राम ऐसा जप करते हैं कलियुग में वे साक्षात् श्रीरामस्वरूप ही है।

---

1. ज्ञानमार्ग च नामत...........उपनिषद्
2. तुलसी रा के कहत ही निकसत पापपहार।
   पुनि भीतर आवत नहीं देत मकार किवार ।।

पराशर संहितायां व्यासवाक्यं साम्बं प्रति

पराशरसंहिता में व्यासजी का वाक्य साम्ब के प्रति

न साम्ब व्याधिजं दुःखं हेयं नानौषधैरपि।

रामनामौषधं पीत्वा व्याधेस्त्यागो न संशयः।।533।।

हे साम्ब! महाकुष्टरूप व्याधि जन्य दुख अनेक औषधियों से भी दूर नहीं होगा और श्रीरामनामरूपी महाऔषधि का पान करने से निश्चित ही व्याधि दूर हो जायेगी। अतः श्रीरामनामरूपी औषधि का पान करो।

कोटिजन्मार्जितं पापमौषधैः शान्तिमेति किम्।

कीर्त्तनीयं परं नाम भवव्याधेस्तदौषधम्।।534।।

करोड़ों जन्मों से उपार्जित पाप से समुत्पन्न व्याधि क्या औषधियों से शान्त होगी? नहीं, तस्मात् संसार रूपी महाव्याधि का नाशक श्रीरामनाम का संकीर्तन करो।

सर्व रोगोपशमनं सर्वाधीनां विनाशनम्।

स्मर त्वं रामरामेति महामोदैकमन्दिरम्।।535।।

समस्त रोगों को शान्त करने वाला, सभी आधियों (मानसिक पीड़ा) का नाश करने वाला एवं महाप्रमोद का निवास स्थान श्रीरामनाम का तुम स्मरण करो।

श्रीरामनामविमुखं जीवं शोधयितुं क्षमम्।

प्रायश्चित्तं न चैवास्ति किञ्चित् सत्यं वचो मम॥536।।

श्रीरामनाम से विमुख जीवों की शुद्धि के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है यह मेरी वाणी सत्य है।

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु रामनाम जपं परम्।

यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते।।537॥

सभी प्रायश्चित्तों में श्रीरामनाम का जप सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित्त है संन्यासियों एवं रामभक्तों के लिए तो विशेष रूप से श्रीरामनाम का जप परम प्रायश्चित्त है।

सनत्कुमार संहितायां श्रीव्यासवाक्यं युधिष्ठिरं प्रति

सनत्कुमारसंहिता में श्रीव्यासजी का वाक्य युधिष्ठिर के प्रति

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।

ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेदविदोविदुः।।538।।

हे राजन्! सर्वश्रेष्ठ जप करने योग्य मन्त्र, तारक ब्रह्म एवं ब्रह्महत्यादि पापों का नाश करने वाला श्रीरामनाम है ऐसा वेद को जानने वाले विद्वान् लोग जानते और कहते हैं।

श्रीरामरामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा।

तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः।।539।।

श्रीरामराम इस प्रकार जो लोग सदा सर्वदा जप करते हैं उन लोगों के लिए इस लोक में भुक्ति–भोगसाधन एवं परलोक में मुक्ति निश्चित ही प्राप्त होगी।

ब्रह्महत्यादि पापानि तत्समानि बहूनि च।

स्वर्णस्तेयसुरापानगुरुतल्पायुतानि च।।540।।

गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि च।

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः।।541।।

ब्रह्महत्यादि पाप, उसके समान और भी बहुत से पाप, सुवर्ण की चोरी, मदिरापान, गुरुपत्नी के साथ हजारों बार गमन, गोवध आदि उपपाप, मिथ्या सम्भाषण से उत्पन्न पाप एवं करोड़ों कल्पों में उत्पन्न पाप समूह इन समस्त पापों से वह मुक्त हो जाता है जो श्रीरामनाम का उच्चारण करता है।

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।

श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।।542।।

मन से, वाणी से, कर्म से जो पाप इकट्ठे हुए हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के स्मरण करने से उसी क्षण निश्चित ही नष्ट हो जाते हैं।

इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते।

रामः सत्यं परब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते।।543।।

मेरे द्वारा यह सत्य सत्य सत्य कहा जाता है कि भगवान् श्रीराम ही सत्य एवं परब्रह्म है श्रीरामजी से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

सुश्रुत संहितायाम्

सुश्रुतसंहिता में

दृष्टो येनैव श्रीरामस्तथा तन्नामकीर्त्तनम्।
कृतं सर्वं शुभं तेन जितं जन्म सुदुर्लभम्।।544।।

जिसने भगवान् श्रीराम का साक्षात्कार कर लिया जिसने श्रीरामनाम का संकीर्तन कर लिया उसने समस्त वैदिक कर्मों का अनुष्ठान कर लिया और अति दुर्लभ इस मानव शरीर पर विजय पा लिया।

कारणं प्रणवस्यापि रामनाम जगद्गुरुम्।
तस्माद्ध्येयं सदा चित्ते यतिभिः शुद्धचेतनैः।।545।।

वेदों के मूल प्रणव (ओम्) का भी परम कारण जगद्गुरु श्रीरामनाम है इसलिए शुद्धचित्त वाले संन्यासियों को सदासर्वदा अपने चित्त में श्रीरामनाम का ध्यान करना चाहिये।

प्रमादादपि श्रीरामनाम उच्चरितं जनैः।
भष्मी भवन्ति पापानि रोगानीव रसायनैः।।546।।

लोगों के द्वारा प्रमाद से भी श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर पाप उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं जैसे रसायनों के द्वारा रोग भस्म हो जाते हैं।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि।।547।।

जिस समय मैं श्रीसीताराम नाम का उच्चारण करता हूँ वहीं शुभ लगन, सुदिन, ताराबल, चन्द्रबल, विद्याबल और वही प्रारब्धादि सब उत्तम सगुन है।

सर्वाभिलाषं पूर्णार्थं जपेन्नामपरात्परम्।
सर्वं त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्ययम्।।548।।

अपने समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए अन्य साधनों को छोड़कर परात्परस्वरूप श्रीरामनाम का जप करना चाहिए इससे अवश्य ही अविनाशी परम पद प्राप्त होगा।

कात्यायन संहितायाम्

कात्यायनसंहिता में

नाम संकीर्त्तनाज्जातं पुण्यं नोपचयन्तिये।
नाना व्याधि समायुक्ताः शतजन्मसु ते नराः।।549।।

जो लोग श्रीरामनाम के संकीर्तन से उत्पन्न पुण्यों का संग्रह नहीं करते हैं वे लोगं हजारों जन्मों में अनेक रोगों से युक्त हो जाते हैं।

अर्थवादं परे नाम्नि भावयन्तीह यो नरः।
स पापिष्ठो मनुष्याणां निरये पतति स्फुटम्।।550।।

जो लोग श्रीरामनाम की महिमा सुनकर उसे अर्थवाद मात्र मानते हैं वे लोग मनुष्यों में अतिशयपापी हैं और अन्त में निश्चित ही घोर नरक में जाते हैं।

श्रीरामनाममाहात्म्यं याथार्थ्यं श्रुति संमतम्।
कुतर्क ये प्रकुर्वन्ति तेऽधमाः पापयोनयः।। 551।।

श्रीरामनाम का माहात्म्य यथार्थ एवं श्रुति सम्मत है उस विषय में जो कुतर्क करते हैं वे लोग अधम एवं पापयोनि हैं।

रामरामेति रामेति प्रत्यहं वक्ति यो नरः।
सम्यक् पूजायुतं पुण्यं तीर्थकोटि फलं लभेत्।।552।।

राम राम राम इस प्रकार जो प्रतिदिन जप करता है उसे सम्यक् प्रकार से देवताओं के हजारों बार पूजन का पुण्य एवं कोटि तीर्थयात्रा का पुण्य प्राप्त होता है।

यस्तु पुत्रः शुचिर्दक्षः पूर्वे वयसि धार्मिकः।
रामनाम परं नित्यं तत्पुत्रं कवयो विदुः।।553।।

जो पुत्र बाल्यावस्था में ही पवित्र, चतुर और श्रीरामनाम परायण धार्मिक है समझदारों ने उसी को वास्तव में पुत्र कहा है अन्य तो मलमूत्र के समान है।

वैश्वानर संहितायाम्

वैश्वानरसंहिता में

न देशकालनियमो न शौचाशौचनिर्णयः।
विद्यते कुत्रचिन्नैव रामनाम्नि परे शुचौ।।554।।

श्रीरामनाम के जप, स्मरण, कीर्तन करने के लिए पवित्र स्थान, पुण्य तिथि, शौच, अशौच आदि का नियम नहीं है इसमें किसी की अपेक्षा नहीं है क्योंकि श्रीरामनाम सबके परे हैं।

रामेति नित्यं यो भक्त्या ब्रूयाद्रात्रिदिवं नरः।
महापातककोटिभ्यो मुक्तः पूतो भवेत्तु सः।।555।।

जो मनुष्य रात दिन भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का नित्य उच्चारण करते हैं वे मनुष्य करोड़ों महापापों से निश्चित ही मुक्त हो जाते हैं। और परम पवित्र हो जाते हैं।

रामनामात्मकं मन्त्रं सततं कीर्त्तयन्ति ये।
सर्वरोगविनिर्मुक्तो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्।।556।।

जो लोग श्रीरामनामरूपी महामन्त्र का निरन्तर कीर्तन करते हैं वे लोग सभी रोगों से मुक्त होकर निश्चित ही दुर्लभ मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

म्लेच्छतुल्याः कुलीनास्ते ये न भक्ता रघूत्तमे।
संकीर्णयोनयः पूता नामगृह्णन्ति ये सदा।।557।।

उत्तम कुल में जन्म लेने के बाद भी जो लोग भगवान् श्रीराम की भक्ति नहीं करते हैं वे महाचाण्डाल म्लेच्छ से भी अधम हैं जो नीच योनि में जन्म लेकर सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन करते हैं वे परम पवित्र हैं।

नास्ति नास्ति महाभाग कलेर्युगसमं युगम्।
स्मरणात् कीर्त्तनाद्यत्र लभते परमं पदम्।।558।।

हे महाभाग! कलियुग के समान कोई युग नहीं है नहीं है जहाँ केवल श्रीरामनाम के स्मरण कीर्तन से परम पद की प्राप्ति होती है।

वात्स्यायन संहितायाम्

वात्स्यायनसंहिता में

तुला पुरुष दानानि दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
तस्मादसंख्यगुणितं रामनाम्नापि संलभेत्।।559।।

तुलादान सुवर्ण पुरुष आदि का दान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है उससे असंख्य गुना अधिक पुण्य एक बार श्रीरामनाम के संकीर्तन से होता है।

स्त्रीराजबालहा चैव यश्च विश्वासघातकः।

सर्वापहारी पापिष्ठो मार्गघ्नो ग्रामदाहकः।।560।।
मातृगामी सुरापश्च भूतध्रुक् सर्वनिन्दकः।
मातृहा पितृहा चैव भ्रूणहा गुरुतल्पगः।।561।।
ते चान्ये चैव पापिष्ठा महापापयुताश्च ये।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते रामनाम्नस्तु कीर्त्तनात्।।562।।

स्त्री, राजा और बालक की हत्या करने वाला, विश्वासघाती, सर्वस्व को लूटने वाला, महापापी, पथिकों को लूटने वाला, गाँव में अग्नि लगाने वाला, माता के साथ गमन करने वाला, शराबी, सर्वद्रोही, सबका निन्दक, माता, पिता एवं गर्भ की हत्या करने वाला, गुरुपत्नी के साथ गमन करने वाला और दूसरे भी जो अत्यन्त पापी एवं महापापी हैं वे सभी श्रीरामनाम के संकीर्तन से समस्त पापों में मुक्त हो जाते हैं।

हेमभारसहस्रैश्च कुरुक्षेत्रे रविग्रहे।
गजाश्वरथदानैश्च देवालय प्रतिष्ठया।।563।।
सेवनैः सर्वतीर्थानां तपोभिर्विविधैश्च किम्।
श्रीरामनाम्नि सततं नित्यं यस्यास्ति निश्चयम्।।564।।

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय हजारों मन सोना, हाथी, घोड़ा और रथ के दान से, देवालय बनवाकर उसमें देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा करने से, सभी तीर्थों के सेवन करने से और अनेक प्रकार के तप करने से क्या लाभ है? जिसका श्रीरामनाम में पूर्ण विश्वास हो गया है उसके लिए किसी अन्य कर्म के करने की आवश्यकता नहीं है।

घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वदोषैकभाजने।
रामनामरता जीवास्ते कृतार्थाः सुजीविनः।।565।।

समस्त दोषों का एकमात्र पात्र इस घोर कलियुग के आने पर जो लोग श्रीरामनाम के जप में लगे हुए हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ हैं उन्हीं का जीवन सफल हैं।

रामनामपरा ये च घोरे कलियुगे द्विजाः।
त एव कृतकृत्याश्च न कलिर्बाधते हि तान्।।566।।

हे ब्राह्मणों! इस घोर कलियुग में जो लोग श्रीरामनाम के जप स्मरण कीर्तन में लगे हैं वे ही कृतकृत्य हैं उनको कलियुग पीड़ा नहीं पहुँचाता है।

समस्तजगदाधारं सर्वेश्वरमखण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।567।।
ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित्।
सत्यं वदामि विप्रेन्द्र! नान्यथा वचनं मम।।568।।

सम्पूर्ण जगत् का आधार, सर्वेश्वर और अखण्ड श्रीरामनाम को जो इस कलियुग में नित्य आदरपूर्वक जपते हैं वे ही धन्य एवं पूजनीय हैं उनको कहीं भी किसी से भय नहीं है है ब्राह्मण श्रेष्ठ! मैं सत्य कहता हूँ मेरी वाणी अन्यथा नहीं है।

महाशम्भु संहितायां श्रीशिववाक्यम्

महाशम्भुसंहिता में शिवजी का वाक्य

यत्र कुत्राशुभे देशे भवेद्रामानुकीर्तनम्।
सर्व तीर्थादिकं विद्धि महाघौघं हरं हि तत्।।569।।

जिस किसी अपवित्र स्थान में श्रीरामनाम का संकीर्तन होता है उस स्थान को सभी तीर्थों से श्रेष्ठ समझो वह स्थान महापापपुञ्ज का भी नाशक है।

श्रीरामनामाखिलमन्त्रबीजं सञ्जीवनं चेत् हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतो भीः ॥570।।

श्रीरामनाम सम्पूर्ण मन्त्रों का बीज है और संजीवन भूरि है यह रामनाम एक बार किसी तरह सन्त सद्गुरुकृपा से हृदय में प्रविष्ट हो जाय तो उस साधक के लिए हालाहल विष, प्रलयाग्नि अथवा मृत्यु के मुख में प्रवेश करने में भी कोई भय नहीं है।

तत्रैव श्रीजानकीवचनं श्रीरामं प्रति

वहीं श्रीजानकीजी का वाक्य श्रीरामजी के प्रति

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजं श्रेष्ठं तथा परे।
तत्तु ते नाम वर्णाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम्।।571।।

कुछ लोग ॐ को तथा कुछ लोग एकाक्षर बीज गं, हं आदि को श्रेष्ठ

कहते हैं परन्तु वे दोनों (ॐ, गं, हं आदि) 'र' और 'म' इन दोनों वर्णों से ही सिद्ध होते हैं ऐसा मेरा मत है।

रामेति नाममात्रस्य प्रभावमतिदुर्गमम्।
मृगयन्ति तु तद्वेदाः कुतोऽन्यस्य हे प्रभो ।।572।।

हे स्वामिन्! श्रीरामनाम का प्रभाव अति दुष्प्राप्य है सभी वेद उसका अन्वेषण करते हैं परन्तु पार नहीं पाते हैं फिर किसी दूसरे में इतनी शक्ति कहाँ ? जो उसका पार पा सके।

रामनाम प्रभावेण स्वयंभूः सृजते जगत्।
विभर्ति सकलं विष्णुः शिवः संहरते पुनः ।।573।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से स्वयंभू ब्रह्माजी जगत् की सृष्टि करते हैं भगवान् विष्णु पालन करते हैं और शंकरजी संहार करते हैं।

पतञ्जलि संहितायाम्

पतञ्जलिसंहिता में

पृथ्वीं शस्यसम्पूर्णां दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
रामनाम सकृज्जप्त्वा ततोऽनन्तगुणं फलम् ।।574।।

हरे भरे धान्य से सम्पन्न सम्पूर्ण पृथिवी का दान करके जो फल प्राप्त किया जाता है उससे अनन्त गुना फल एक बार श्रीरामनाम के जप करने से प्राप्त होता है।

रामेति नाम परमं मन्त्राणां बीजमव्ययम्।
ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम् ।।575।।

सभी मन्त्रों का अविनाशी बीज श्रीरामनाम का जो निरन्तर कीर्तन करते हैं उनके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

रामनाम परब्रह्म त्यक्त्वा वात्सल्यसागरम्।
अन्यथा शरणं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।576।।

वात्सल्य सागर परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम को छोड़कर दूसरा कोई रक्षक नहीं है यह बात मैं सत्य–सत्य कहता हूँ।

नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्णफलदायकम्।

अन्यत् फल्गु फलं सर्वं मोक्षावधिमसंशयम् ॥577॥

श्रीरामनाम के संकीर्तन से ही सम्पूर्ण फल की प्राप्ति सम्भव है अन्य साधनों से नहीं। क्योंकि अन्य सारे साधन तुच्छ फल देने वाले हैं अधिक से अधिक मोक्ष तक देने वाले हैं वह भी परमानन्द रस की अपेक्षा निश्चित ही तुच्छ है।

कलौ युगे राघवनामतस्सदा परं पदं यात्यनायासतो ध्रुवम्।
सर्वैर्युगैः पूजितमुन्नतं युगं समस्तकल्याणनिकेतनं वरम्॥578॥

दूसरे सभी युगों से पूजित, उन्नत, समस्त कल्याण का निधान एवं श्रेष्ठ युग कलियुग है क्योंकि इस कलियुग में सदा सर्वदा श्रीरामनाम के जप स्मरण एवं कीर्तन से बिना श्रम के ही निश्चित ही परमपद की प्राप्ति होती है।

माङ्गल्यं सर्वपापघ्नमायुष्यमखिलेष्टदम्।
भुक्ति मुक्तिप्रदं पुण्यं रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम्॥579॥

श्रीरामनाम का संकीर्तन महामंगलमय, सभी पापों का नाश करने वाला, आयुष्य एवं सम्पूर्ण अभीष्टों को प्रदान करने वाला, भुक्ति और मुक्ति को प्रदान करने वाला एवं पुण्यप्रद है।

येऽहर्निशं जगद्धातू रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम्।
कुर्वन्ति तान् नरव्याघ्र न कलिर्बाधते क्वचित्॥580॥

हे नरश्रेष्ठ! जो लोग दिन रात जगत् पिता भगवान् श्रीरामजी के नाम का संकीर्तन करते हैं उनको कहीं भी कलि पीडा नहीं पहुँचाता है।

शमनाय जलं वह्नेस्तमसो भास्करोदये।
शान्तिः कलेरघौघस्य नामसंकीर्त्तनं वरम्॥581॥

जिस प्रकार वह्नि की शान्ति के लिए जल समर्थ होता है और अन्धकार समूह की शान्ति के लिए सूर्य समर्थ होता है उसी प्रकार कलि के पाप समूह की शान्ति के लिए श्रीरामनाम का संकीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ है।

नामसंकीर्त्तनं तस्य क्षुत्तृट् संस्खलनादिषु।
यः करोति महाभाग तस्य तुष्यति राघवः॥582॥

भूख प्यास के दुख से एवं गिरते पड़ते छींकते जैसे कैसे भी जो बड़भागी श्रीरामनाम का संकीर्तन करता है उस पर भगवान् श्रीराम प्रसन्न होते हैं।

वैशम्पायन संहितायाम्

वैशम्पायनसहिता में

सर्वधर्मबहिर्भूतः सर्वपापयुतस्तथा।
मुच्यते नात्र संदेहो रामनामानुकीर्त्तनात्।।583।।

जो सभी धर्म एवं कर्म से बहिर्भूत है एवं समस्त पापों से युक्त है वह भी श्रीरामनाम के संकीर्तन से मुक्त हो जाता है इसमें संशय नहीं है।

ब्रवीमि वाक्यं श्रुतिशास्त्रसारं श्रृण्वन्तु तत्सर्वजनाः पवित्रम्।
रामेति वर्णद्वयमादरेण जपन्तु सर्वैर्मुनिभिः प्रदिष्टम्।।584।।

मैं समस्त वेदों एवं शास्त्रों के सार एवं पवित्र वचन कहता हूँ आप सभी लोग उसको सुनें सभी मुनियों का यही प्रकृष्ट आदेश है कि राम इन दो अक्षरों को आदरपूर्वक जप करें।

रामनाम जपादेव महापातक कोटयः।
विनश्यन्ति महाभाग अनायासेन तत्क्षणात्।।585।।

हे महाभाग ! श्रीरामनाम के जप से ही बिना श्रम के उसी क्षण करोड़ों पाप भस्म हो जाते हैं।

जीवनं रामभक्तस्य वरं पञ्चदिनानि च।
न तु नामविहीनस्य कल्पकोटिशतानि च।।586।।

श्रीरामभक्ति से युक्त भक्तों का जीवन यदि केवल पाँच दिन के लिए है तो भी वह अतिश्रेष्ठ एवं धन्य है श्रीरामनाम से रहित करोड़ों वर्षों का जीना भी बेकार एवं हेय है।

वारांनिधौ पततु गच्छतु वा हुताशं बन्ध्याऽथवा भवतु तज्जननी खरारेः।
भक्तिर्न यस्य विमलेश्वरनाम्नि शुद्धे जीवच्छवो जगति गर्हित कर्मकर्ता।।

खरारे भगवान् श्रीरामजी के पवित्र एवं शुद्ध श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वह जगत् में जीते जी मुर्दा है निन्दनीय कर्म करने वाला है, वह चाहे समुद्र में गिर पड़े अथवा अग्नि में प्रवेश कर जाये अथवा उसकी माँ बन्ध्या हो जाये।।587।।

गार्गीयसंहितायां धर्मराजवाक्यं दूतान् प्रति

गार्गीयसंहिता में धर्मराजजी का वाक्य दूतों के प्रति

दूताः श्रृणुध्वं मम शासनं ध्रुवं सदैव माङ्गल्यकरं सुखावहम्।
स्मरन्ति ये राघवनाम निर्मलं न तत्र यात्रा भवती शुभावहा।।588।।

हे दूतों! तुम लोग मेरे सदा सर्वदा मंगल करने वाले और सुखद निश्चित आदेश को सुनो— जो लोग नित्य निरन्तर भगवान् श्रीराघवेन्द्र के निर्मल नाम का उच्चारण करते हैं स्मरण करते हैं वहाँ तुम्हारी यात्रा मंगलकारी नहीं है। इसलिए तुम लोग वहाँ भूलकर भी मत जाना।।

साङ्केतरीत्याथ भयेन क्लेशादन्तेऽपि श्रीराममुदाहरन्ति।

ते पुण्यभाजो मनुजा महात्मका न तत्र यात्रा भवती शुभावहा।।589।।

जो लोग संकेत में, भय से अथवा किसी क्लेश के कारण अन्त में भी श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे लोग अवश्य ही पुण्यात्मा और महान् आत्मा है वहाँ तुम्हारी यात्रा शुभ नहीं होगी।

वयं सदा नाम सुहृद्गुणे रतास्तथैव तज्जापकपादसेवकाः।

प्रभावतो यस्य हरीश ब्रह्मा विभर्ति विश्वं सलयं ससम्भवम्।।590।।

हम लोग भी सदा सर्वदा श्रीरामनामानुरागियों के गुणगान में लगे रहते हैं और श्रीरामनाम के जापकों की चरण सेवा करते हैं। जिस श्रीरामनाम के प्रभाव से भगवान् विष्णु विश्व की रक्षा, भगवान् शंकर संहार एवं ब्रह्माजी विश्व की रचना करते हैं।

तस्मात् प्रमादमुत्सृज्य दूरतः किङ्करास्सदा।

श्रीरामनामसम्पन्ने गृहे गच्छतु नैवहि।।591।।

हे सेवकों! इसीलिए प्रमाद को दूर छोड़कर श्रीरामनाम से सम्पन्न घर भूलकर भी न जाना।

कर्तव्यं वाक्यमाकर्ण्य स्वामिनो मम साम्प्रतम्।

धार्यं ध्रुवं प्रयत्नेन महामोहैकनाशनम्।।592।।

हे सेवकों! इस समय मुझ स्वामी के महामोहनाशक कर्त्तव्य वाक्य को सुनकर निश्चित ही प्रयत्नपूर्वक धारण करो।

वृहद् वशिष्ठसंहितायां श्रीवशिष्ठवाक्यं राजकुमारं प्रति

बृहद वशिष्ठसंहिता में श्रीवशिष्ठजी का वाक्य राजकुमारो के प्रति

हित्वा सकलपापानि लब्ध्वा सुकृतसञ्चयम्।

स पूतो जायते धीमान् रामनामानुकीर्त्तनात्।।593।।

वह श्रीरामनाम के संकीर्तन के प्रभाव से समस्त पापों का त्यागकर सुकृत पुञ्ज को प्राप्त कर बुद्धिमान् पवित्र हो गया।

राम रामेति रामेति कीर्त्तयच्छुद्धचेतसा।

राजसूयसहस्राणांफलं प्राप्नोति मानवः।।594।।

जो मनुष्य शुद्धचित्त से राम राम राम कीर्तन करता है वह हजारों राजसूय का फल प्राप्त करता है।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं मुनीन् प्रति

वहीं श्रीनारदजी का वाक्य मुनियों के प्रति

एकतः सर्वतीर्थानि जलं चैव प्रयागजम्।

श्रीरामनाम माहात्म्यं कलां नार्हति षोडशीम्।।595।।

तराजू के एक पलड़े पर सभी तीर्थों एवं तीर्थराज प्रयाग के संगम के जल को रखें और दूसरी ओर किञ्चिद् रामनाम माहात्म्य को रखें तो सभी तीर्थ एवं संगम का जल उसकी सोलहवीं काल के समान भी नहीं हो सकते।

अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वच्छं श्रीनाम मङ्गलम्।

बधिराणां तथा कर्ण पशूनां हस्तपादकम्।।596।।

भीतर बाहर दोनों तरफ से जो अन्धे हैं उनके लिए श्रीरामनाम परम मंगल मय एवं उत्कृष्ट नेत्र हैं बधिरों के लिए कान एवं लूले लंगड़ों के लिए हाथ पांव श्रीरामनाम है अर्थात् असहाय लोगों के लिए परम सहायक श्रीरामनाम है।

गालवीय संहितायाम्

गालवीयसंहिता में

आश्रयःसर्वजन्तूनामाधाररहितात्मनाम्।

जननी तातवन्नित्यं पोषकं सर्वदेहिनाम्।।597।।

जो लोग निराधार हैं उन सभी निराधार जन्तुओं का परम आधार

श्रीरामनाम है एवं सभी देहधारियों का माता—पिता की तरह नित्य भरण पोषण करने वाला श्रीरामनाम है।

सुदर्शन संहितायाम्

सुदर्शन संहिता में

चातकानां चकोराणां मयूराणां तथा शुभम्।
लक्षणं दोषनिर्मुक्तं धार्यं श्रीनाम तत्परैः।।598।।

श्रीरामनामजापकों को चातकों, चकोरों एवं मयूरों के दोषरहित लक्षण टेक, ध्यान एवं मधुर शब्द को धारण करना चाहिए।

दुःखादिकं समं कृत्वा द्वन्दधर्मं विहाय च।
भजेन्निरामयं नाम चित्तमाकृष्य सर्वतः।।599।।

सुख दुखादि को सम मानकर और मान—अपमानादि द्वन्द्वों को छोड़कर अपने चित्त को सभी तरफ से खींचकर निरामय श्रीरामनाम का भजन करना चाहिए।

श्रीरामनाममात्राग्रामादौ चित्तस्य धारणा।
कृत्वा पश्चात्सुधीर्ध्यानं रेफस्यैव विवेकतः।।600।।

बुद्धिमानों को पहले श्रीरामनाम के अवयव मात्रा 'आ' के मनन अर्थानुसन्धान में मन को लगाना चाहिए तत्पश्चात् विवेकपूर्वक 'र' का अर्थानुसन्धान मनन करना चाहिए।

प्रणवादीनि मन्त्राणि रामनाम्नि समभ्यसेत्।
यथा गुरूपदेशेन नित्यमेकाग्रमानसैः।।601।।

अपने गुरु महाराज ने जिस प्रकार उपदेश दिया है उसी के अनुसार स्थिर आसन पर बैठकर एकाग्रचित होकर नित्य प्रणवादि सभी मन्त्रों का श्रीरामनाम में ही अभ्यास करें।

एवं रीत्या जपेन्नाम तदा स्वल्पमुपागतः।
जायते परमा सिद्धिर्विरक्तिर्भक्तिरुज्वला।।602।।

इसी रीति से यदि श्रीरामनाम का जप किया जाय तो थोड़े समय में ही परम सिद्धि, वैराग्य एवं उज्ज्वल भक्ति की प्राप्ति हो जाती है।

शिव संहितायाम्

शिवसंहिता में

नारायणादि नामानि कीर्त्तितानि बहून्यपि।
सम्यग् भगवतस्तेषु रामनाम प्रकाशकम्।।603।।

भगवान् के नारायणादि अनन्त नामों के कीर्तन करने पर भी यह ध्यान रखना चाहिए कि उन सभी नामों का सम्यक् प्रकाशक नाम तो श्रीरामनाम ही है।

नारायणादि नामानि साकारैश्वर्यमुत्तमम्।
नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्यं वै विभाति च ।।604।।

नारायणादि जितने भगवान् के नाम है वे सब साकार एवं उत्तम ऐश्वर्यमय हैं किन्तु नित्य निराकार ऐश्वर्यमय ब्रह्म के प्रकाशक हैं।

उभयैश्वर्यमान्नित्यो रामो दशरथात्मजः।
साकेते नित्यमाधुर्ये धाम्नि संराजते सदा।।605।।

श्रीदशरथनन्दन भगवान् श्रीराम दोनों प्रकार के ऐश्वर्य से नित्य सम्पन्न हैं। और नित्य माधुर्यमय साकेत धाम में सदा सर्वदा विराजते हैं।

रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं व्रजेत्।।606।।

साकार निराकार का परम कारण उज्ज्वल परात्पर तत्व श्रीरामनाम है उसके स्मरण मात्र से मनुष्य साक्षात् श्रीरामधाम साकेत जाता है।

नाम स्मरणमात्रेण नामी सन्मुखतां लभेत्।
तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचितम्।।607।।

श्रीरामनाम के स्मरण मात्र से भगवान् श्रीराम प्रत्यक्ष प्रकट हो जाते हैं। इसलिए सदा सर्वदा श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए यही उचित है।

रा शब्दस्तु परं ब्रह्म वाचकत्वेन बोधितः।
मकारस्तु परा शक्तिस्सर्वशक्त्यभिवन्दिता।।608।।

श्रीरामनाम में 'र' परब्रह्म का वाचक कहा गया है। एवं 'म' सभी शक्तियों से पूज्या पराशक्ति श्रीसीताजी का वाचक है।

लोमश संहितायाम्

लोमशसंहिता में

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यश्च श्रीराम नामतः।
भिन्नं प्रतीयते विप्र! सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।609।।

हे विप्र ! ऐसा कोई शब्द अर्थ नहीं है ज्ञान नहीं है जो श्रीरामनाम से

भिन्न प्रतीत हो यह मैं सत्य–सत्य कहता हूँ। तात्पर्य यह है कि– सभी शब्दार्थ ज्ञान श्रीरामनाम के अंश से प्रकट होते हैं।

लौकिकाः वैदिकाः सर्वे शब्दाः श्रीरामनामतः।
समुद्भवन्ति लीयन्ते काले काले न संशयः।।610।।

वैदिक एवं लौकिक सभी शब्द समय–समय पर श्रीरामनाम से ही प्रकट होते हैं और विलीन भी होते हैं मैं सत्य–सत्य कहता हूँ।

यथा भुशुण्डिशब्देन पलायन्ते खगा मुने।
तरुं विहाय वै तद्वद्राम नाम्ना दुराशयाः।।611।।

हेमुने! जैसे बन्दूक की आवाज सुनकर वृक्ष छोड़कर पक्षी भाग जाते हैं उसी प्रकार श्रीरामनाम की ध्वनि सुनकर शरीर के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

यथा चिन्तामणेस्स्पर्शाद्दारिद्र्यं याति संक्षयम्।
तथा श्रीराम नाम्ना वै मोहजालमसंशयम्।।612।।

जैसे चिन्तामणि के स्पर्श से दरिद्रता का नाश हो जाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम से निश्चित ही मोहजाल नष्ट हो जाते हैं।

रामेति द्व्यक्षरं नाम मानंभङ्ग पिनाकिनः।
अभेदो बोध्यते तेन सततं नामनामिनोः।।613।।

श्रीरामनाम के दोनों अक्षरों ने (राम) शंकरजी के मान का भंजन किया है। इससे प्रतीत होता है कि नाम और नामी में अभेद है। तात्पर्य यह है कि धनुष तोड़ा रामजी ने और कहा गया कि दो अक्षरों ने शिवजी का मान भंग किया अतः रामजी और रामनाम दोनों एक ही है।

तत्रैव लोमशवाक्यम्

वहीं लोमशवाक्य

एकदा मुनयः सर्वे शौनकाद्या बहुश्रुताः।
नैमिषे सूतमासीनं पप्रच्छुरिदमादरात्।।614।।

एक बार नैमिषारण्य में बहुश्रुत शौनकादि ऋषियों ने सुखपूर्वक बैठे हुए श्रीसूतजी से आदरपूर्वक यह पूछा–

अज्ञानध्वान्तविध्वंसोऽनन्त कोटि समप्रभः।
कथितो भवता पूर्वं तद्वदस्व महामते।।615।।

हे महामते! आपने पहले कहा था कि अज्ञानरूपी अन्धकार को नाश करने के लिए अनन्त सूर्य के समान प्रभा श्रीरामनाम में है अब उसे विस्तार से कहिए।

श्रीसूत उवाच

सूतजी ने कहा

शृणुध्वं मुनयः सर्वे रहस्यं परमाद्भुतम्।
पार्वती शिव संवादं चतुर्वर्गप्रदायकम्।।616।।

हे मुनियों! आप सब परम अद्भुत रहस्यात्मक चार पदार्थों को प्रदान करने वाला भगवान् शिव और पार्वतीजी का सुन्दर संवाद सुनिए।

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
लोकानां च हितार्थाय पप्रच्छ नगकन्यका।।617।।

कैलास के शिखर पर सुखपूर्वक बैठे हुए जगद्गुरु देवाधिदेव भगवान् शिवजी से श्रीपार्वतीजी जगत् के कल्याण की कामना से पूछा—

पार्वत्युवाच

पार्वतीजी बोली

देव देव महादेव सर्वज्ञ परमेश्वर।
त्वत्तः श्रुतं मया पूर्वं मन्त्रतन्त्राद्यनेकधा।।618।।

हे सर्वज्ञ! हे परमेश्वर! हे देवाधिदेव महादेव! मैंने पहले आपके मुख से अनेक प्रकार के मन्त्रों एवं तन्त्रों को सुना है।

सर्वधर्माणि जीवानां व्यवहाराणि यानि च।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि किं तत्त्वं कृतनिश्चितम्।।619।।

और जीवों के सभी धर्मों और सभी व्यवहारों को सुना। इस समय मैं यह सुनना चाहती हूँ कि अब तक आपने कौनसा तत्व निश्चित किया?

गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं पवित्रं परमं च यत्।
सुलभं सुगमोपायं विनायासेन सिद्धिदम् ।।620।।

जो गुह्य से भी गुह्य और परम पवित्र हो, जो सुलभ एवं सुगम उपाय वाला हो, और बिना श्रम के ही सिद्धि प्रदान करने वाला हो ऐसे तत्व को बताइए।

शिव उवाच

शिवजी ने कहा

धन्यासि कृतपुण्यासि यस्यास्ते मतिरीदृशी।
पृष्टं लोकोपकाराय तस्मात्त्वां प्रवदाम्यहम्।।621।।

हे पार्वती! तुम धन्य हो, तुमने पुण्य का कार्य किया है क्योंकि तुम्हारी ऐसी मति है तुमने लोक कल्याण की कामना से पूछा है अत: मैं तुमसे कहूँगा।

रहस्यं परमं प्रेष्ठं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
रामनामपरं तत्त्वं सर्वशास्त्रेषु प्रस्फुटम्।।622।।

सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला, अत्यन्त प्रिय तत्व श्रीरामनाम है जो सभी शास्त्रों में प्रकृष्टता से स्फुटित हुआ है।

यस्य नाम्न:प्रभावेण सर्वज्ञोऽहं वरानने।
रामनाम्नः परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्रये।623।।

हे सुमुखि! जिस श्रीरामनाम के जप के प्रभाव से मैं सर्वज्ञ हो गया हूँ श्रीरामनाम से बढ़कर तीनों लोकों में कोई दूसरा तत्व नहीं है।

रामभद्रं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते।
कुम्भीपाके महाघोरे पच्यते नात्र संशयः।।624।।

भगवान् श्रीरामचन्द्र को छोड़कर जो किसी दूसरे देवी देवता की उपासना करते हैं वे लोग निश्चित ही महाघोर कुम्भीपाक नरक में पकाये जाते हैं।

अज्ञानादथवा ज्ञानाद्रामेति द्वयक्षरं वदेत्।
जन्मकोटि कृतं पापं नाशमायाति तत्क्षणात्।।625।।

जानबूझकर अथवा अनजान में जो 'राम' इन दो अक्षरों का उच्चारण करते हैं उनके कई जन्मों के पापों का नाश तत्क्षण हो जाता है।

यज्ञदानतपस्तीर्थस्वाध्यायाध्यात्मबोधतः।
कोटिसंख्यं रामनाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये।।626।।

हे प्रिये! यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, स्वाध्याय एवं वेदान्त बोध की अपेक्षा

करोड़ों गुना अधिक पवित्रता श्रीरामनाम में है।

ततः कोटिगुणं पुण्यं सीतानाम्ना सहप्रिये।
इति मत्वा भजन्त्येतान् मुनयो नारदादयः।।627।।

और यज्ञदानादि से कोटि गुना अधिक पुण्य श्रीसीता नाम के साथ राम नाम के जप में है ऐसा मान करके ही नारदादि ऋषि मुनि श्रीसीताराम नाम का जप करते हैं।

यावन्न कीर्तयेदस्या नाम कल्मषनाशनम्।
अनन्तकोटिं जपतोऽपि न रामः फलसाधकः।।628।।

जब तक समस्त पापों का नाशक श्रीसीताजी के नाम का कीर्तन जप नहीं करेंगे तब तक केवल श्रीरामनाम के अनन्त कोटि जप करने से भी कोई फल नहीं मिलेगा अतः सदा सर्वदा युगल नाम का जप करना चाहिए।

सीतया सहितं यत्र रामनाम प्रकीर्त्यते।
न तत्र नामदोषाणां प्रवृत्तिस्स्यात्कथंचन।।629।।

जहाँ[1] सीतानाम के साथ श्रीरामनाम का संकीर्तन होता है अर्थात् सीताराम सीताराम संकीर्तन होता है वहाँ नामापराध जन्य दोष नहीं लगते हैं अर्थात नामापराध होने पर भी श्रीसीताराम जप नाम करने से उसका पाप नष्ट हो जाता है। उसका फल नहीं भोगना पड़ता है।

साङ्गाः सह रहस्याश्च पठिता वेदराशयः।
कृताश्च सकलाः यज्ञा येन रामेति कीर्त्तितम्।।630।।

जिसने श्रीरामनाम का संकीर्तन कर लिया उसने समस्त अंगों एवं रहस्यों के साथ सम्पूर्ण वेद राशि को पढ़ लिया और समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया।

रामेति द्वयक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः।
तत्राविर्भूय भगवान् सर्वदुःखं विनाशयेत्।।631।।

जहाँ पर विद्वानों के द्वारा 'राम' इन दो अक्षरों का संकीर्तन किया जाता है। वहाँ भगवान् प्रकट होकर सभी दुःखों का नाश कर देते हैं।

---

1. दश अपराध न कबहूँ लागे। युगलनाम सुमिरत अनुरागे।। (जानकी चालीसा)

अज्ञानतिमिरोद्भेदं कोटिसूर्येन्दुभास्वरम्।

ज्ञानामृतपयोवाहं रामनाम सदा जपेत्।।632।।

अज्ञानरूपी अन्धकार के नाश करने के लिए करोड़ों सूर्य एवं चन्द्र सम तेजस्वी, ज्ञानामृत की वृष्टि करने वाले मेघ के समान श्रीरामनाम का सदा सर्वदा जप करना चाहिए।

किं कार्यं वैदिकैः शब्दैः किंवा मन्त्रैश्च तान्त्रिकैः।

किं कर्मणा च ज्ञानेन किमन्यैस्तपसा श्रमैः।।633।।

दूसरे वैदिक शब्दों से अथवा तन्त्र मन्त्रों से, कर्म, ज्ञान एवं दूसरे तपस्याओं एवं आश्रम धर्म के पालन से क्या प्रयोजन? तात्पर्य यह है कि जब श्रीरामनाम के जप से सहज में ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है तब अन्य साधनों की क्या आवश्यकता है?

स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।

पठितव्यं कीर्त्तितव्यं च श्रद्धायुक्तैर्दिवानिशम्।।634।।

अतः रात दिन सदा सर्वदा श्रद्धापूर्वक एकमात्र श्रीरामनाम का स्मरण, पठन और कीर्तन करना चाहिए।

विधिरुक्तं सदैवास्य न निषेधः क्वचिद्भवेत्।

सर्वदेशे सर्वकाले सर्वैश्च नरजातिभिः।।635।।

श्रीरामनाम के जप का विधान सदासर्वदा है निषेध कहीं नहीं है हर जाति का स्त्री या पुरुष हर जगह और हर समय श्रीरामनाम का जप कीर्तन कर सकते हैं।

इदमेकं सदा कार्यं यदीच्छेच्छुभमात्मनः।

चतुर्वर्गप्रदानेऽपि समर्थो रघुपुङ्गवः।।636।।

यदि कोई अपना कल्याण चाहता है तो उसे एकमात्र श्रीरामनाम का सदासर्वदा कीर्तन करना चाहिए सभी मनोरथों को पूर्ण करने में भगवान् श्रीराम समर्थ हैं।

ध्यानाज्ज्ञानाच्च सततं नाममात्रस्य कीर्तनात्।

इत्युक्तं वः प्रियं सर्वं मया देवर्षिपुंगवाः।।637।।

ध्यान एवं ज्ञान की अपेक्षा निरन्तर श्रीरामनाम का संकीर्तन श्रेष्ठ है हे

मुनिश्रेष्ठों! मैं आप लोगों को प्रिय लगने वाली बात यह कह दिया।

नातोऽपि वेदितव्यं स्यादभवतां तत्त्वमीयुषाम्।
सिद्धान्तः सर्वशास्त्राणां भवतां समुदाहृतम्॥638॥

आप तत्व जिज्ञासुओं को इसके अतिरिक्त कुछ भी जानना बाकी नहीं है मैंने आप लोगों के लिए सभी शास्त्रों का सार सिद्धान्त कहा है।

इति ते कथितं देवि रहस्यं परमाद्‌भुतम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥639॥

हे देवि! मैंने परम अद्‌भुत रहस्य तुमसे कहा है इसको प्रयत्नपूर्वक छिपाना चाहिए सबसे नहीं कहना चाहिए तभी इससे कल्याण प्राप्त करोगी।

पुलस्त्यसंहितायाम्

पुलस्त्यसंहिता में

कृष्णेति वासुदेवेति सन्ति नामान्यनेकशः।
तेभ्यो रामेति यन्नाम प्राहुर्वेदाः परं मुने॥640॥

हे मुने! वेदों ने भगवान् के कृष्ण, वासुदेव आदि अनेक नाम कहे हैं उनसे बढ़कर श्रीरामनाम हैं अर्थात् सभी नामों से श्रेष्ठ श्रीरामनाम है।

सर्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्वलोकस्य कारणात्।
ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखण्डब्रह्मवाचकः॥641॥

समस्त वेदों का परम आश्रय, समस्त लोकों का परम कारण एवं ईश्वर शिवजी से भी प्रतिपाद्य होने से श्रीरामनाम परब्रह्म वाचक है।

शुकसंहितायाम्

श्रीशुकसंहिता

आकृष्टिः कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा।
माचाण्डालममूकलोकसुलभो वश्यश्च मुक्ति स्त्रियः।
नो दीक्षां न च दक्षिणां न च पुरश्चर्यामनागीक्षते
मन्त्रोऽयंरसनास्पृगेव फलति श्रीरामनामात्मकः॥642॥

जिन्होंने अपने मन को वशकर लिया है ऐसे महात्माओं के भी चित्त को आकृष्ट करने वाला, पापों का उच्चाटन करने वाला, गूंगों को छोड़कर